Bible. Hindi. O.T. [n.d.]

The Book of Genesis
in the Hindi Language

First instalment issued from the press in Allahabad, of the New Translation of the Old Testament, done for the North India Auxiliary of the British and Foreign Bible Soc.

Trans. by Rev. S. H. Kellogg, D.D., with Committee

Presented by Rev. T. S. Wynkoop
Secretary N. I. Bible Society
Princeton, Feb. 19, 1900

P.
B.4.30
O.T.
[n.d.]

Bible. Hindi. O.T.

SCQ
#21666

धर्म्मशास्त्र के

पुरानी बाचा नाम पूर्व्व भाग में से

उत्पत्ति नाम पुस्तक।

इलाहाबाद नार्थ इण्डिया बैबल सोसइटी की ओर
से प्रचलित किई गई ।

इलाहाबाद मिशन प्रेस में छापी गई सन् १८९९ ।

उत्पत्ति नाम पुस्तक।

(सृष्टि का वर्णन.)

१ आदि में परमेश्वर ने आकाश[1] २ और पृथिवी को सिरजा। और पृथिवी यों ही सुनसान पड़ी थी और गहिरे जल के ऊपर अन्धियारा था और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर ३ ऊपर मण्डलाता था। तब परमेश्वर ने कहा उजियाला होवे सो उजियाला ४ हो गया। और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है और परमेश्वर ने उजियाले और अन्धियारे को अलग ५ अलग किया। और परमेश्वर ने उजियाले को दिन कहा और अन्धियारे को उस ने रात कहा और सांझ हुई और भोर हुआ सो एक दिन भया।

६ फिर परमेश्वर ने कहा जल के बीच एक अन्तर होवे ऐसा कि जल दो ७ भाग हो जावे। सो परमेश्वर ने एक अन्तर करके उस के नीचे के जल और उस के ऊपर के जल को अलग अलग किया और वैसा ही हो गया। ८ और परमेश्वर ने उस अन्तर को आकाश कहा और सांझ हुई और भोर हुआ सो दूसरा दिन भया।

९ फिर परमेश्वर ने कहा स्वर्ग के नीचे का जल एक स्थान में एकट्ठा होवे और सूखी भूमि दिखाई देवे और वैसा ही हो गया। १० और परमेश्वर ने सूखी भूमि को पृथिवी कहा और एकट्ठे हुए जल को उस ने समुद्र कहा और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। ११ फिर परमेश्वर ने कहा पृथिवी से हरी घास और बीजवाले छोटे छोटे पेड़ उगने लगें और फलदाई वृक्ष भी जो अपनी अपनी जाति के अनुसार फलें और जिन के बीज पृथिवी पर उन्हीं में होवें सो भी उगने लगें और वैसा ही हो गया। १२ सो पृथिवी से हरी घास और छोटे छोटे पेड़ उगने लगे जिन में अपनी अपनी जाति के अनुसार बीज होता है और फलदाई वृक्ष भी जिन के बीज एक एक की जाति के अनुसार उन्हीं में होते हैं सो भी उगने लगे और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है। १३ और सांझ हुई और भोर हुआ सो तीसरा दिन भया।

१४ फिर परमेश्वर ने कहा दिन और रात में भेद करने के लिये आकाश के अन्तर में ज्योतियां होवें और वे चिन्हों

(१) अथवा. स्वर्ग.

और नियत समयों और दिनों और
१५ बरसों के लिये होवें। और वे ज्योतियां
आकाश के अन्तर में पृथिवी पर प्रकाश
देनेहारी भी ठहरें और वैसा ही हो
१६ गया। सो परमेश्वर ने दो बड़ी ज्यो-
तियां बनाईं उन में से बड़ी ज्योति तो
दिन पर प्रभुता करने के लिये और
छोटी ज्योति रात्रि पर प्रभुता करने
के लिये बनाई और तारागण को भी
१७ बनाया। और परमेश्वर ने उन को
आकाश के अन्तर में इस लिये रक्खा
१८ कि वे पृथिवी पर प्रकाश देवें और
दिन और रात पर प्रभुता करें और
उजियाले और अन्धियारे को अलग
अलग करें और परमेश्वर ने देखा कि
१९ अच्छा है। और सांझ हुई और भोर
हुआ सो चौथा दिन भया।

२० फिर परमेश्वर ने कहा जल जीते
प्राणियों से बहुत ही भर जावे और
पक्षी पृथिवी के ऊपर आकाश के
२१ अन्तर में उड़ें। सो परमेश्वर ने बड़े
बड़े जलजन्तु सिरजे और उन सब
जीते प्राणियों को भी सिरजा जो रेंगते
हैं जिन की एक एक जाति से जल
बहुत ही भर गया और एक एक जाति
के उड़नेहारे पक्षियों को भी सिरजा
और परमेश्वर ने देखा कि अच्छा है।
२२ और परमेश्वर ने यह कहके उन को
आशीष दिई कि फूलो फलो और
समुद्रों के जल में भर जाओ और
२३ पक्षी भी पृथिवी पर बढ़ें। और सांझ
हुई और भोर हुआ सो पांचवां दिन
भया।

फिर परमेश्वर ने कहा पृथिवी से २४
एक एक जाति के जीते प्राणी उत्पन्न होवें
अर्थात् ग्रामपशु और रेंगनेहारे जन्तु
और पृथिवी के बनपशु जाति जाति के
अनुसार उपजें और वैसा ही हो गया।
सो परमेश्वर ने पृथिवी के जाति जाति २५
के बनपशुओं को और जाति जाति के
ग्रामपशुओं को और जाति जाति के
भूमि पर सब रेंगनेहारे जन्तुओं को
बनाया और परमेश्वर ने देखा कि
अच्छा है। फिर परमेश्वर ने कहा २६
हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनु-
सार अपनी समानता में बनावें और वे
समुद्र की मछलियों और आकाशचारी
पक्षियों और ग्रामपशुओं और सारी
पृथिवी पर और सब रेंगनेहारे जन्तुओं
पर जो पृथिवी पर रेंगते हैं अधिकार
रक्खें। सो परमेश्वर ने मनुष्य को २७
अपने स्वरूप के अनुसार सिरजा अपने
ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने
उस को सिरजा नर और नारी करके
उस ने उन्हें सिरजा। और परमेश्वर २८
ने उन को आशीष दिई और उन से
कहा फूलो फलो और पृथिवी में
भर जाओ और उस को अपने बश
में कर लेओ और समुद्र की मछलियों
और आकाशचारी पक्षियों और पृथिवी
पर रेंगनेहारे सब जन्तुओं पर अधि-
कार रक्खो। फिर परमेश्वर ने कहा २९

देखो जितने बीजवाले छोटे छोटे पेड़ सारी पृथिवी के ऊपर हैं और जितने वृक्षों में बीजवाले फल होते हैं सो सब मैं ने तुम को दिये हैं वे तुम्हारे भोजन ३० के लिये होवें। और जितने पृथिवी के पशु और आकाशचारी पक्षी और पृथिवी पर रेंगनेहारे जन्तु हैं जिन में जीवनयुक्त प्राण है उन सब के खाने के लिये भी मैं ने सब हरे हरे छोटे पेड़ दिये हैं और वैसा ही हो गया। ३१ और परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था सब को देखा तो क्या देखा कि वह बहुत ही अच्छा है और सांझ हुई और भोर हुआ सो छठवां दिन भया।

२ यों आकाश[1] और पृथिवी और उन में का सारा सामान बनकर २ समाप्त हुआ। और परमेश्वर ने सातवें दिन अपना कार्य्य जो वह करता था समाप्त किया और सातवें दिन उस ने अपने किये हुए सारे ३ कार्य्य से बिश्राम किया। और परमेश्वर ने सातवें दिन को आशीष दिई और उस को पवित्र ठहराया क्योंकि उस में उस ने सृष्टि के अपने सारे कार्य्य से बिश्राम किया।

(मनुष्य की उत्पत्ति.)

४ आकाश[1] और पृथिवी की उत्पत्ति का वृत्तान्त यह है कि जब वे सिरजे गये अर्थात् जिस दिन यहोवा परमेश्वर ने पृथिवी और आकाश को ५ बनाया तब चौगान की कोई झाड़ी भूमि में न हुई थी और न चौगान का कोई छोटा पेड़ उगा था क्योंकि यहोवा परमेश्वर ने पृथिवी पर जल न बरसाया था और भूमि पर खेती करने के लिये मनुष्य न था। ६ पर कुहरा पृथिवी में से उठता था जिस से सारी भूमि सिंच जाती थी। ७ फिर यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उस के नथनों में जीवनयुक्त श्वास फूंक दिया सो आदम जीता प्राणी हुआ। ८ और यहोवा परमेश्वर ने पूरब ओर एदेन् देश में एक बारी लगाई और वहां आदम को जिसे उस ने रचा था रख दिया। ९ और यहोवा परमेश्वर ने भूमि में से सब भांति के वृक्ष जो देखने में मनोहर और जिन के फल खाने में अच्छे थे उगाये और जीवन के वृक्ष को बारी के बीच में लगाया और भले बुरे के ज्ञान के वृक्ष को भी लगाया। १० और उस बारी के सींचने के लिये एक महानद एदेन् से निकलता था और वहां से वह आगे बहके चार धार हो गया। ११ पहिली धारा का नाम पीशोन् है यह वही नदी है जो हवीला के सारे देश को जहां सोना मिलता है घेरती है। १२ उस देश का सोना चोखा होता है और वहां मोती और सुलैमानी पत्थर भी मिलते हैं। १३ और दूसरे महानद का नाम गीहोन्

(१) अथवा. स्वर्ग.

है यह वही है जो कूश् के सारे देश १४ को घेरता है । और तीसरे महानद का नाम हिद्देकेल् है यह वही है जो अश्शूर् की पूरब ओर बहता है और चौथे महानद का नाम परात् १५ है । फिर यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेके एदेन् की बारी में रख दिया जिस्तें वह उस में काम करे और उस १६ की रक्षा करे । और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दिई कि बारी के सब वृक्षों का तो फल तू बिना १७ खटके खा सकता है । पर भले बुरे के ज्ञान का वृक्ष जो है उस का फल तू न खाना क्योंकि जिस दिन तू उस का फल खावे उसी दिन अवश्य ही मर जावेगा ।

१८ फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं मैं उस के लिये ऐसा एक सहायक १९ बनाऊंगा जो उस से मेल खावे । सो यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनपशुओं और आकाशचारी सब भांति के पक्षियों को बनाके आदम के पास ले आया जिस्तें देखे कि वह उन का क्या क्या नाम रक्खेगा और जिस जिस जीते प्राणी का जो जो नाम आदम ने रक्खा सोई उस का २० नाम पड़ा । सो आदम ने सब जाति के ग्रामपशुओं और आकाशचारी पक्षियों और सब जाति के बनपशुओं के नाम रक्खे पर आदम के लिये ऐसा कोई सहायक न मिला जो उस से मेल खावे । तब यहोवा परमेश्वर ने आदम २१ को घोर निद्रा में डाल दिया और जब वह सो गया तब उस ने उस की पसुलियों में से एक को निकालके उस की सन्ती मांस भर दिया । और २२ यहोवा परमेश्वर ने उस पसुली को जो उस ने आदम में से निकाली थी स्त्री बना दिया और उस को आदम के पास ले आया । और आदम ने २३ कहा अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है सो इस का नाम नारी होगा क्योंकि यह नर में से निकाली गई । इस २४ कारण पुरुष अपने माता पिता को छोड़के अपनी स्त्री के बन्धन से बन्ध जावेगा सो वे एक ही तन होके रहेंगे । और आदम और उस की स्त्री दोनों २५ नंगे थे पर लज्जित न थे ।

(मनुष्य के पापी हो जाने का बर्णन.)

३ यहोवा परमेश्वर ने जितने १ बनपशु बनाये थे सब में से सर्प धूर्त्त था सो वह स्त्री से कहने लगा क्या सच है कि परमेश्वर ने कहा कि तुम इस बारी के किसी वृक्ष का फल न खाना । स्त्री ने सर्प से २ कहा सो नहीं इस बारी के फल तो हम खा सकते हैं । हां जो वृक्ष ३ बारी के बीच में है उस के फल के बिषय तो परमेश्वर ने कहा है कि तुम उस को न खाना न उस को छूना

४ नहीं तो मर जाओगे। यह सुनके सर्प ने स्त्री से कहा तुम निश्चय न ५ मरोगे। बल्कि परमेश्वर आप जानता है कि जिस दिन तुम उस का फल खाओ उसी दिन तुम्हारे नेत्र खुल जावेंगे और तुम भले बुरे का ज्ञान पाके परमेश्वर ६ के तुल्य हो जाओगे। सो जब स्त्री को जान पड़ा कि उस वृक्ष का फल खाने में अच्छा और देखने में मनभाऊ और बुद्धि देने से चाहने योग्य है तब उस ने उस में से तोड़के खाया और अपने पति को दिया और उस ने भी ७ खाया। तब उन दोनों के नेत्र खुल गये और उन को ज्ञान हुआ कि हम नंगे हैं सो उन्हों ने अंजीर के पत्ते ८ जोड़ जोड़के लंगोट बना लिये। फिर यहोवा परमेश्वर जो सांझ के समय बारी में फिरता था उस का शब्द उन को सुन पड़ा और आदम और उस की स्त्री बारी के वृक्षों के बीच यहोवा ९ परमेश्वर से छिप गये। तब यहोवा परमेश्वर ने पुकारके आदम से कहा १० तू कहां है। उस ने कहा मैं तेरा शब्द बारी में सुनके डर गया क्योंकि ११ मैं नंगा था सो मैं छिप गया। उस ने कहा किस ने तुझे चिताया कि तू नंगा है जिस वृक्ष का फल खाने से मैं ने तुझे बर्जा था क्या तू ने उस का १२ फल खाया है। आदम ने कहा जिस स्त्री को तू ने मेरे संग रहने को दिया उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया

सो मैं ने खाया। फिर यहोवा परमे- १३ श्वर ने स्त्री से कहा तू ने यह क्या किया है स्त्री ने कहा सर्प ने मुझे बहका दिया तब मैं ने खाया। तब यहोवा १४ परमेश्वर ने सर्प से कहा तू ने जो यह किया है इस लिये तू सब ग्राम-पशुओं और सब बनपशुओं से अधिक स्रापित है तू पेट के बल चला करेगा और जीवन भर मिट्टी चाटता रहेगा। और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में १५ और तेरे बंश और इस के बंश के बीच में बैर उपजाऊंगा वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उस की एड़ी को कुचल डालेगा। स्त्री से उस ने कहा मैं तेरी १६ पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाऊंगा तू पीर ही से बालक जनेगी और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी और वह तुझ पर प्रभुता करेगा। और आदम से १७ उस ने कहा तू ने जो अपनी स्त्री की सुनी और जिस वृक्ष के फल के बिषय मैं ने तुझे आज्ञा दिई थी कि तू उसे न खाना उस को तू ने खाया है इस लिये भूमि तेरे कारण स्रापित है तू उस की उपज जीवन भर पीड़ा ही से खाया करेगा। और वह तेरे लिये १८ कांटे और ऊंटकटारे उगावेगी सो चौगान के छोटे छोटे पेड़ों से तेरा भोजन इस रीति चलेगा कि अपने सिर के १९ पसीने की रोटी तू खाया करेगा और अन्त में मिट्टी में मिल जावेगा क्योंकि

तू उसी में से निकाला गया अर्थात् तू मिट्टी है और मिट्टी ही में फिर मिल २० जावेगा। और आदम ने अपनी स्त्री का नाम हव्वा[1] रक्खा क्योंकि जितने मनुष्य जीते हैं उन सब की आदि माता २१ वही हुई। और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उस की स्त्री के लिये चमड़े के अंगरखे बनाके उन को पहिना दिये।

२२ फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा देखो मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाके हम में से एक के समान हो गया है सो अब ऐसा न होवे कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल भी तोड़के खावे और सदा जीता रहे। २३ इस लिये यहोवा परमेश्वर ने उस को एदेन् की बारी में से निकाल दिया जिस्तें वह उस भूमि पर खेती करे २४ जिस में से वह बनाया गया था। सो उस ने आदम को दुर्दुराके निकाल दिया और जीवन के वृक्ष के मार्ग का पहरा देने के लिये उस ने एदेन् की बारी की पूरब ओर करूबों को और चारों ओर घूमती हुई ज्वाला-मय तलवार को स्थापित किया।

(आदम के पुत्रों का बर्णन.)

४ फिर आदम ने अपनी स्त्री हव्वा से प्रसंग किया तब वह गर्भवती होके कैन् को जनी और कहा मैं ने यहोवा की सहायता से एक पुरुष पाया है। फिर वह उस के भाई २ हाबिल को भी जनी और हाबिल तो भेड़ बकरियों का चरवाहा हुआ पर कैन् भूमि की खेती करनेहारा हुआ। कुछ दिन बीते पर कैन् यहोवा ३ के पास भूमि की उपज में से कुछ भेंट ले आया। और हाबिल भी अपनी भेड़ ४ बकरियों के कई एक पहिलौठे बच्चे भेंट करके ले आया और उन की चर्बी चढ़ाई तब यहोवा ने हाबिल और उस की भेंट का मान किया। पर कैन् ५ और उस की भेंट का उस ने मान न किया सो कैन् अति क्रोधित हुआ और उस के मुंह पर उदासी छा गई। तब यहोवा ने कैन् से कहा तू क्यों ६ क्रोधित हुआ और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है। यदि तू भला करे ७ तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न किई जावेगी और यदि तू भला न करे तो पाप मानो द्वार पर दबका रहता है और उस की लालसा तेरी ओर होगी और तू उस पर प्रभुता करेगा। और ८ कैन् ने अपने भाई हाबिल से कुछ कहा और जब वे चौगान में थे तब कैन् ने अपने भाई हाबिल पर चढ़के उसे घात किया। तब यहोवा ९ ने कैन् से पूछा तेरा भाई हाबिल कहां है उस ने कहा मैं नहीं जानता क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं। उस ने कहा तू ने क्या किया है तेरे १० भाई का लोहू भूमि में से मेरी ओर

(१) अर्थात्. जीवन.

चिल्ला चिल्लाके मेरी दोहाई दे रहा
११ है। और अब भूमि जिस ने माना तेरे भाई का लोहू तेरे हाथ से पीने के लिये अपना मुंह पसारा है उस
१२ की ओर से तू स्रापित है। चाहे तू भूमि पर खेती करे तौभी उस की पूरी उपज फिर तुझे न मिलेगी तू पृथिवी
१३ पर बहेतू और भगोड़ा होवेगा। इतना सुनके कैन् ने यहोवा से कहा मेरा अधर्म्म
१४ क्षमा होने[1] से बाहर है। देख तू ने आज के दिन मुझे भूमि पर से दुर्दुराके निकाला है और मैं तेरी दृष्टि से छिपा रहूंगा और पृथिवी पर बहेतू और भगोड़ा रहूंगा और जो कोई मुझे
१५ पावेगा सो मुझे घात करेगा। यहोवा ने उस से कहा इस कारण जो कोई तुझ को घात करे उस से सातगुणा पलटा लिया जावेगा सो यहोवा ने कैन् के लिये एक चिन्ह ठहराया न होवे कि कोई उसे पाके मारे।

१६ इतने पर कैन् यहोवा के सन्मुख से निकल गया और नोद् नाम देश में जो एदेन् की पूरब ओर है रहने
१७ लगा। और कैन् ने अपनी स्त्री से प्रसंग किया सो वह गर्भवती होके हनोक् को जनी फिर कैन् एक नगर बनाने लगा और उस नगर का नाम अपने पुत्र के नाम पर हनोक् रक्खा।
१८ और हनोक् से ईराद् जन्मा और ईराद् ने महूयाएल् को जन्माया और

(१) अथवा. मेरा दण्ड सहने.

महूयाएल् ने मतूशाएल् को और मतूशाएल् ने लेमेक् को जन्माया। और १९ लेमेक् ने दो स्त्रियां ब्याह लिईं जिन में से एक का नाम आदा और दूसरी का सिल्ला था। और आदा याबाल् २० को जनी सो तम्बूओं में रहने की रीति और ढोर के पालने की रीति का चलानेहारा हुआ। और उस के भाई २१ का नाम यूबाल् है सो बीणा और बांसुरी आदि बाजों के बजाने की सारी रीति का चलानेहारा हुआ। और २२ सिल्ला भी तूबल्कैन् नाम एक पुत्र जनी सो पीतल और लोहे के सब धारवाले हथियारों का गढ़नेहारा हुआ और तूबल्कैन् की बहिन नामा थी। और २३ लेमेक् ने अपनी स्त्रियों से कहा

हे आदा और हे सिल्ला मेरी सुनो
हे लेमेक् की स्त्रियो मेरी बात पर
　कान लगाओ
कि मैं ने एक पुरुष को जो मेरे
　चोट लगाता था
अर्थात् एक जवान को जो मुझे
　घायल करता था घात किया है।
जब कि कैन् का पलटा सातगुणा २४
　लिया जावेगा
तो लेमेक् का सतहत्तरगुणा लिया
　जावेगा।

और आदम ने अपनी स्त्री से फिर २५ प्रसंग किया और वह पुत्र जनी और उस का नाम यह कहके शेत् रक्खा कि परमेश्वर ने मेरे लिये हाबिल की

सन्ती जिस को कैन् ने घात किया एक २६ और बंश ठहरा दिया है। और शेत् के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ और उस ने उस का नाम एनोश् रक्खा उसी समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे।

(आदम की बंशावली.)

५ आदम की बंशावली यह है। जब परमेश्वर ने मनुष्य को सिरजा तब अपनी समानता ही में २ उस ने उस को बनाया। नर और नारी करके उस ने उन्हें सिरजा और उन्हें आशीष दिई और उन की सृष्टि के दिन उन का नाम मनुष्य[1] रक्खा। ३ जब आदम एक सौ तीस बरस का हुआ तब उस ने अपनी समानता में अपने स्वरूप के अनुसार एक पुत्र जन्माके उस का नाम शेत् रक्खा। ४ और शेत् के जन्म के पीछे आदम आठ सौ बरस जीता रहा और उस के ५ और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। सो आदम की सारी अवस्था नौ सौ तीस बरस की हुई तब वह मर गया।

६ जब शेत् एक सौ पांच बरस का हुआ तब उस ने एनोश् को जन्माया। ७ और एनोश् के जन्म के पीछे शेत् आठ सौ सात बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ८ सो शेत् की सारी अवस्था नौ सौ बारह बरस की हुई तब वह मर गया।

(१) अथवा, आदम.

जब एनोश् नब्बे बरस का हुआ ९ तब उस ने केनान् को जन्माया। और १० केनान् के जन्म के पीछे एनोश् आठ सौ पन्द्रह बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। सो ११ एनोश् की सारी अवस्था नौ सौ पांच बरस की हुई तब वह मर गया।

जब केनान् सत्तर बरस का हुआ १२ तब उस ने महललेल् को जन्माया। और महललेल् के जन्म के पीछे केनान् १३ आठ सौ चालीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। सो केनान् की सारी १४ अवस्था नौ सौ दस बरस की हुई तब वह मर गया।

जब महललेल् पैंसठ बरस का हुआ १५ तब उस ने येरेद् को जन्माया। और १६ येरेद् के जन्म के पीछे महललेल् आठ सौ तीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। सो महललेल् की सारी अवस्था आठ १७ सौ पंचानवे बरस की हुई तब वह मर गया।

जब येरेद् एक सौ बासठ बरस का १८ हुआ तब उस ने हनोक् को जन्माया। और हनोक् के जन्म के पीछे येरेद् १९ आठ सौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। सो येरेद् की सारी अवस्था नौ सौ २० बासठ बरस की हुई तब वह मर गया।

२१ जब हनोक् पैंसठ बरस का हुआ तब उस ने मतूशेलह् को जन्माया। २२ और मतूशेलह् के जन्म के पीछे हनोक् तीन सौ बरस लों परमेश्वर के साथ साथ चलता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। २३ सो हनोक् की सारी अवस्था तीन सौ पैंसठ बरस की हुई। २४ और हनोक् परमेश्वर के साथ साथ चलता था फिर वह न रहा क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया था।

२५ जब मतूशेलह् एक सौ सत्तासी बरस का हुआ तब उस ने लेमेक् को जन्माया। २६ और लेमेक् के जन्म के पीछे मतूशेलह् सात सौ बयासी बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। २७ सो मतूशेलह् की सारी अवस्था नौ सौ उनहत्तर बरस की हुई तब वह मर गया।

२८ जब लेमेक् एक सौ बयासी बरस का हुआ तब उस ने एक पुत्र जन्माया २९ और यह कहके उस का नाम नूह रक्खा कि यहोवा ने जो पृथिवी को स्राप दिया है इस के बिषय यह लड़का हमारे काम में और हमारे हाथों के कठिन परिश्रम में हम को शांति देवेगा। ३० और नूह के जन्म के पीछे लेमेक् पांच सौ पंचानबे बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। ३१ सो लेमेक् की सारी अवस्था सात सौ सतहत्तर बरस की हुई तब वह मर गया।

३२ जब नूह पांच सौ बरस का हुआ तब उस ने शेम् और हाम् और येपेत् को जन्माया।

(जलप्रलय का बर्णन.)

६ १ फिर जब मनुष्य भूमि के ऊपर बहुत होने लगे और उन के बेटियां उत्पन्न हुईं २ तब परमेश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को देखा कि वे सुन्दर हैं सो उन्हों ने जिस को जिस को चाहा उन को अपनी स्त्रियां बना लिया। ३ और यहोवा ने कहा मेरा आत्मा मनुष्य से सदा लों बिवाद करता न रहेगा क्योंकि मनुष्य भी शरीर ही है पर उस का समय एक सौ बीस बरस और बाकी है। ४ उन दिनों में पृथिवी पर नपील् लोग हुए और उस के उपरान्त अर्थात् जब जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियों के पास जाते और ये उन के जन्माये पुत्र जनतीं तब वे पुत्र भी शूरबीर होते थे जिन की कीर्त्ति प्राचीनकाल से बनी है। ५ फिर यहोवा ने देखा कि मनुष्यों की बुराई पृथिवी पर बढ़ गई है और उन के मन के बिचार में जो कुछ उत्पन्न होता सो निरन्तर बुरा ही होता है। ६ और यहोवा पृथिवी पर मनुष्य को बनाने से पछताया और वह मन में अति खेदित हुआ। ७ सो यहोवा ने

कहा मैं मनुष्य को जिसे मैं ने सिरजा है पृथिवी के ऊपर से मिटा दूंगा मनुष्य क्या बल्कि पशु और रेंगनेहारे जन्तु और आकाश के पक्षी सब को मिटा दूंगा क्योंकि मैं उन के बनाने ८ से पछताता हूं। पर यहोवा की अनुग्रह की दृष्टि नूह पर बनी रही।

९ नूह का वृत्तान्त यह है नूह धर्म्मी पुरुष और अपने समय के लोगों में खरा था और नूह परमेश्वर ही के १० साथ साथ चलता रहा। और नूह ने तीन पुत्र अर्थात् शेम् और हाम् ११ और येपेत् को जन्माया। और पृथिवी परमेश्वर की दृष्टि में बिगड़ गई थी १२ और उपद्रव से भर गई थी। और परमेश्वर ने जो पृथिवी पर दृष्टि किई तो क्या देखा कि वह बिगड़ी हुई है क्योंकि सब शरीरधारियों ने पृथिवी पर अपनी अपनी चाल चलन बिगाड़ दिई थी।

१३ तब परमेश्वर ने नूह से कहा सब शरीरधारियों का अन्त करना मेरे मन में आ गया है क्योंकि उन के कारण पृथिवी उपद्रव से भर गई है सो मैं उन को पृथिवी समेत नष्ट कर १४ डालूंगा। गोपेर् वृक्ष की लकड़ी का एक जहाज बना ले उस में कोठरियां भी बनाना और भीतर बाहर उस १५ पर राल लगाना। और इस ढब से उस को बनाना जहाज की लम्बाई तीन सौ हाथ चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की होवे। १६ जहाज में एक खिड़की बनाना और इस के एक हाथ ऊपर उस की छत पाटना और जहाज की एक अलंग में एक द्वार रखना और जहाज में पहिला दूसरा तीसरा खण्ड बनाना। १७ और सुन मैं पृथिवी पर जलप्रलय करने पर हूं जिस्तें मैं सब शरीरधारियों को जिन में जीवनयुक्त आत्मा है आकाश के तले से नष्ट कर डालूं पृथिवी पर जो जो हैं उन का प्राण छूटेगा। १८ पर मैं तेरे संग बाचा बांधूंगा सो तू अपने पुत्रों स्त्री और बहुओं समेत १९ जहाज में जाना। और सब जीते शरीरधारियों में से तू एक एक जाति के दो दो जहाज में ले जाना जिस्तें वे तेरे साथ जीते रहें चाहिये कि वे २० नर और मादा होवें। एक एक जाति के पक्षी और एक एक जाति के पशु और एक एक जाति के भूमि पर रेंगनेहारे सब में से दो दो तेरे पास आवेंगे इस लिये कि तू उन को जीता २१ रक्खे। और भांति भांति का आहार जो कुछ खाया जाता है उस को तू लेके अपने पास बटोर रखना सो तेरे और उन के भोजन के लिये होवेगा। २२ सो जैसा परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दिई ठीक वैसा ही उस ने किया।

७ १ फिर यहोवा ने नूह से कहा तू अपने सारे घराने समेत जहाज में जा क्योंकि मैं ने इस समय के लोगों

में से केवल तुझी को अपने लेखे धर्म्मी २ देखा है। सब जाति के शुद्ध पशुओं में से तू सात सात लेना अर्थात् नर और मादा पर जो पशु शुद्ध नहीं उन में से दो दो लेना अर्थात् नर और ३ मादा। और आकाशचारी पक्षियों में से भी सात सात लेना अर्थात् नर और मादा जिस्तें उन का बंश बचके सारी ४ पृथिवी के ऊपर फैल जावे। क्योंकि अब सात दिन और बीतने पर मैं पृथिवी पर जल बरसाने लगूंगा और चालीस दिन और चालीस रात लों उसे बरसाता रहूंगा और जितनी बस्तें मैं ने बनाईं सब को भूमि के ऊपर से ५ मिटाऊंगा। सो जैसा यहोवा ने नूह को आज्ञा दिई ठीक वैसा ही उस ने किया।

६ जब नूह छः सौ बरस का हुआ तब जलप्रलय पृथिवी पर हुआ। ७ और नूह अपने पुत्रों स्त्री और बहुओं समेत प्रलय के जल से बचने के लिये ८ जहाज में गया। शुद्ध और अशुद्ध दोनों प्रकार के पशुओं में से और पक्षियों और भूमि पर रेंगनेहारों में से ९ भी दो दो अर्थात् नर और मादा जहाज में नूह के पास आये जैसा परमेश्वर ने नूह को आज्ञा दिई १० वैसा ही हुआ। और सात दिन के उपरान्त प्रलय का जल पृथिवी पर ११ आने लगा। जिस दिन नूह की अवस्था छः सौ बरस एक महीने और सत्तरह दिन की हुई उसी दिन बड़े गहिरे समुद्र के सब सोते फूट निकले और स्वर्ग के झरोखे खुल गये। १२ और वृष्टि चालीस दिन और चालीस रात लों पृथिवी पर होती रही। १३ ठीक उसी दिन नूह अपने पुत्रों अर्थात् शेम् हाम् येपेत् और स्त्री और तीनों बहुओं समेत जहाज में गया। १४ और उन के संग एक एक जाति के सब बनपशु और एक एक जाति के सब ग्रामपशु और एक एक जाति के सब पृथिवी पर रेंगनेहारे और एक एक जाति के सब पक्षी अर्थात् एक एक भान्ति की सब चिड़ियाएं आईं। १५ अर्थात् जितने शरीरधारियों में जीवन युक्त आत्मा था उन सब जातियों में से दो दो नूह के पास जहाज में आये। १६ और जो आये सो परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार सब जाति के शरीरधारियों में से नर और मादा आये तब यहोवा ने नूह के पीछे द्वार मूंद दिया। १७ और प्रलय पृथिवी पर चालीस दिन लों रहा और जल बढ़ने लगा और उस से जहाज उभरने लगा यहां लों कि वह पृथिवी पर से ऊंचा हो गया। १८ और जल बढ़ते बढ़ते पृथिवी पर बहुत ही बढ़ गया और जहाज जल के ऊपर ऊपर तैरता रहा। १९ और जल पृथिवी पर अत्यन्त बढ़ गया यहां लों कि सारे आकाश के तले जितने बड़े बड़े पहाड़ थे सब ढंप गये। २० जल पन्द्रह हाथ ऊपर बढ़ गया इस रीति

२१ पहाड़ ढंप गये। और सब शरीरधारी जो पृथिवी पर चलते थे क्या पक्षी क्या ग्रामपशु क्या बनपशु बल्कि जितने जन्तु पृथिवी में बहुतायत से भर गये थे उन सभों का और सब मनुष्यों का २२ भी प्राण छूट गया। जो जो स्थल पर थे उन में से जितनों के नथनों में जीवनयुक्त आत्मा का श्वास था सब २३ मर मिटे। और जो जो भूमि के ऊपर थे क्या मनुष्य क्या पशु क्या रेंगनेहारे जन्तु क्या आकाशचारी पक्षी सो सब पृथिवी पर से मिट गये केवल नूह और जितने उस के संग जहाज में २४ थे सोई बच गये। और जल पृथिवी पर एक सौ पचास दिन लों बढ़ा रहा।

८ तब परमेश्वर ने नूह को और जितने बनपशु और ग्रामपशु उस के संग जहाज में थे उन सभों की सुधि लिई और परमेश्वर ने पृथिवी पर पवन बहाई तब जल घटने लगा। २ और गहिरे समुद्र के सोते और स्वर्ग के झरोखे मुंद गये और आकाश से ३ वृष्टि थम गई। और जल पृथिवी पर से लगातार घटने लगा और एक सौ पचास दिन के बीते पर जल कुछ घट ४ गया। और सातवें महीने की सतरहवीं तिथि को जहाज अरारात् नाम पहाड़ ५ पर टिक गया। और जल दसवें महीने लों घटता चला गया दसवें महीने की परिवा को पहाड़ों की चोटियां दिखाई दिईं। और चालीस दिन के उपरान्त ६ नूह ने अपने बनाये हुए जहाज की खिड़की को खोलके एक काला ७ कौवा उड़ा दिया सो जब लों जल पृथिवी पर से सूख न गया तब लों इधर उधर फिरता रहा। फिर ८ उस ने अपने पास से एक कबूतरी को भी उड़ा दिया जिस्तें देखे कि जल भूमि पर से घट गया कि नहीं। पर ९ कबूतरी ने अपने चंगुल के टेकने के लिये कोई स्थान न पाया सो वह उस के पास जहाज में लौट आई क्योंकि सारी पृथिवी के ऊपर जल ही जल रहा तब उस ने हाथ बढ़ाके उसे अपने पास जहाज में ले लिया। फिर वह और सात दिन लों ठहरा १० रहा तब उसी कबूतरी को जहाज में से फिर उड़ा दिया। और कबूतरी ११ सांझ के समय उस के पास आ गई और उस ने क्या देखा कि उस की चोंच में जलपाई का एक नया पत्ता है सो नूह ने जान लिया कि जल पृथिवी पर घट गया है। पर वह सात दिन १२ लों और ठहरा रहा तब फिर कबूतरी को उड़ा दिया और वह उस के पास फिर कभी लौटके न आई। जब छः १३ सौ बरस पूरे हुए तब दूसरे दिन जल पृथिवी पर से सूख गया था तब नूह ने जहाज की छत को खोलके क्या देखा कि धरती सूख गई है। और दूसरे महीने की सत्ताईसवीं १४

तिथि को पृथिवी पूरी रीति से सूख गई।

१५ १६ तब परमेश्वर ने नूह से कहा तू अपने पुत्रों स्त्री और बहुओं समेत १७ जहाज में से निकल आ। जितने शरीरधारी जीवजन्तु तेरे सङ्ग हैं क्या पत्ती क्या पशु क्या सब भांति के रेंगनेहारे जन्तु जो पृथिवी पर रेंगते हैं उन सब को अपने साथ निकाल ले आ और पृथिवी पर उन से बहुत बच्चे उत्पन्न होवें और वे फूलें फलें और १८ पृथिवी पर फैल जावें। सो नूह और उस के पुत्र स्त्री और बहुआं निकल १९ आईं। सब चौपाये रेंगनेहारे जन्तु और पत्ती निदान जितने जीवजन्तु पृथिवी पर चलते फिरते हैं सो सब जाति जाति करके जहाज में से निकल २० आये। तब नूह ने यहोवा की एक बेदी बनाई और सब शुद्ध पशुओं और सब शुद्ध पत्तियों में से कुछ कुछ लेकर बेदी पर होमबलि करके चढ़ाये। २१ तब यहोवा ने सुखदायक सुगन्ध पाया और उस ने अपने मन में कहा मैं मनुष्य के कारण फिर भूमि को कभी स्राप न देऊंगा हां मनुष्य के मन में बचपन से जो कुछ उत्पन्न होता सो तो बुरा ही होता है पर जैसा मैं ने सब जीवधारियों को अब मारा है वैसा उन को फिर कभी न २२ मारूंगा। अब जब लों पृथिवी बनी रहेगी तब लों बोने लवने का समय ठंढ और तपन धूपकाल और शीतकाल दिन और रात निरन्तर होती चली जावेंगी।

९ फिर परमेश्वर ने नूह और उस के पुत्रों को यह आशीष दिई कि फूलो फलो और बढ़ो और पृथिवी में भर जाओ। १ २ और तुम्हारा डर और प्रताप पृथिवी के सब पशुओं और आकाशचारी सब पत्तियों और भूमि पर के सब रेंगनेहारे जन्तुओं और समुद्र की सब मछलियों पर बना रहेगा ये सब तुम्हारे बश में कर दिये गये हैं। ३ सब चलनेहारे जीते जन्तु तुम्हारा आहार होवेंगे जैसा तुम को अन्नादि हरे हरे छोटे पेड़ दिये थे तैसा ही अब सब कुछ देता हूं। ४ पर मांस को प्राण समेत अर्थात् लोहू समेत तुम न खाना। ५ और निश्चय मैं तुम्हारे रक्तरूपी प्राणों का पलटा लेऊंगा सब पशुओं से और मनुष्यों से भी मैं उसे लेऊंगा मनुष्य के प्राण का पलटा मैं एक एक के भाई बन्धु से लूंगा। ६ अर्थात् जो कोई मनुष्य का लोहू बहावे उस का लोहू मनुष्य ही से बहाया जावे क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है। ७ और तुम जो हो सो फूलो फलो और बढ़ो और पृथिवी में बहुत ही बढ़के उस में भर जाओ।

८ फिर परमेश्वर ने नूह और उस ९ के पुत्रों से कहा सुनो मैं तुम्हारे साथ और तुम्हारे पीछे जो तुम्हारा बंश

होगा उस के साथ भी बाचा बांधता हूं। १० और सब जीते प्राणियों से भी जो तुम्हारे संग हैं क्या पक्षी क्या ग्रामपशु क्या पृथिवी के सब बनपशु निदान जितने तुम्हारे संग जहाज से निकले हैं अर्थात् पृथिवी के जितने जीवजन्तु हैं सब के ११ साथ भी मेरी यह बाचा है। और मैं तुम्हारे साथ अपनी इस बाचा को पूरा करूंगा कि सब शरीरधारी फिर प्रलय के जल से लोप न होवेंगे और पृथिवी के नष्ट करने के लिये फिर जल १२ प्रलय न होगा। फिर परमेश्वर ने कहा जो बाचा मैं अपने और तुम्हारे और जितने जीते प्राणी तुम्हारे संग हैं सब के बीच में युगानयुग की पीढ़ियों के लिये बान्धता हूं उस का यह चिन्ह १३ है कि मैं ने बादल में अपना धनुष रक्खा है सो मेरे और पृथिवी के बीच १४ में बाचा का चिन्ह होवेगा। और जब मैं पृथिवी पर बादल फैलाऊं तब १५ बादल में धनुष देख पड़ेगा। तब मेरी जो बाचा मेरे और तुम्हारे और सब जीते प्राणियों अर्थात् सब शरीरधारियों के बीच में बन्धी है उस को मैं स्मरण करूंगा सो फिर जलप्रलय न होवेगा जिस से सब शरीरधारियों का १६ बिनाश होवे। सो बादल में धनुष होवेगा और मैं उसे देखके वह सदा की बाचा स्मरण करूंगा जो मेरे और सब जीते प्राणियों के अर्थात् जितने शरीरधारी पृथिवी पर हैं सब के बीच में बंधी है। १७ और परमेश्वर ने नूह से कहा जो बाचा मैं ने अपने और पृथिवी भर के सब शरीरधारियों के बीच बांधी है उस का चिन्ह यही है।

१८ नूह के जो पुत्र जहाज में से निकले सो शेम् हाम् और येपेत् थे और हाम् जो था सो कनान् का पिता हुआ। १९ नूह के तीन पुत्र ये ही हैं और इन का बंश सारी पृथिवी पर फैल गया।

२० फिर नूह किसनई करने लगा और २१ उस ने दाख की बारी लगाई। और वह दाखमधु पीके मतवाला हुआ और अपने तम्बू के भीतर नंगा हो गया। २२ और कनान् के पिता हाम् ने अपने पिता को नंगा देखा और बाहर आके अपने दोनों भाइयों को बता दिया। २३ यह सुनके शेम् और येपेत् ने कपड़ा लिया और दोनों ने अपने कन्धों पर रक्खा और पीछे की ओर उलटा चलके अपने पिता के नंगे तन को ढांप दिया और वे अपने मुख पीछे किये थे ऐसा कि उन्हों ने अपने पिता को नंगा न २४ देखा। फिर जब नूह का नशा उतर गया तब उस ने जान लिया कि मेरे लहुरे पुत्र ने मुझ से क्या किया है। २५ सो उस ने कहा

कनान् स्रापित होवे
वह अपने भाइयों के दासों का
दास होवे।

२६ फिर उस ने कहा

धन्य है यहोवा जो शेम् का पर-
मेश्वर है
और कनान् शेम् का दास होवे ।
२७ परमेश्वर येपेत् के बंश को फैलावे
और वह शेम् के तम्बुओं में बसे
और कनान् उस का दास होवे ।
२८ और नूह जलप्रलय के पीछे साढ़े
२९ तीन सौ बरस जीता रहा । सो नूह
की सारी अवस्था साढ़े नौ सौ बरस
की हुई तब वह मर गया ।

(नूह की बंशावली.)

१० नूह के पुत्र जो शेम् हाम् और येपेत् थे जलप्रलय के पीछे उन के पुत्र उत्पन्न हुए सो उन की बंशावली यह है ।

२ येपेत् के पुत्र गोमेर् मागोग् मादै यावान् तूबल् मेशेक् और तीरास् हुए । ३ और गोमेर् के पुत्र अश्कनज् रीपत् ४ और तोगर्मा हुए । और यावान् के बंश में एलीशा तर्शीश् और कित्ती और ५ दोदानी लोग हुए । इन के बंश उन द्वीपों के देशों में बंट गये जो अब अन्यजातियों के कहावते हैं ऐसा कि भिन्न भिन्न भाषा कुल और जातिवाले भिन्न भिन्न हो गये ।

६ फिर हाम् के पुत्र कूश् मिस्र पूत् और ७ कनान् हुए । और कूश् के पुत्र सबा हवीला सब्ता रामा और सब्तका हुए और रामा के पुत्र शबा और ८ ददान् हुए । और कूश् के बंश में निम्रोद् भी हुआ पृथिवी पर पहिला बीर वही हुआ । ९ वह यहोवा के लेखे में पराक्रमी व्याधा ठहरा इस कारण से यह कहावत चली है कि निम्रोद् की नाईं जो यहोवा के लेखे में पराक्रमी व्याधा ठहरा । १० और उस की प्रथम राज-धानी बाबेल् हुआ और एरेक् अक्कद् और कल्ने भी ये सब उस की राज-धानियां हुईं ये सब नगर शिनार् देश में हैं । ११ उस देश से वह अश्शूर् को निकल गया और नीनवे रहोबोतीर् और कालह् को १२ और नीनवे और कालह् के बीच जो रेसेन् है उसे भी बसाया बड़ा नगर यही है । १३ और मिस्र के बंश १४ में लूदी अनामी लहाबी नप्तूही पत्रूसी और कसलूही लोग जिन में से पलिश्ती लोग निकले और कप्तोरी लोग भी हुए ।

१५ फिर कनान् के बंश में उस का जेठा १६ सीदोन् और हेत् और यबूसी एमोरी १७ गिर्गाशी १८ हिव्वी अर्की सीनी अर्वदी समारी और हमाती लोग भी हुए और कनानियों के कुल उन के पीछे ही फैल गये । १९ और कनानियों का सिवाना सीदोन् से लेके गरार् के मार्ग से होके अज्जा लों और फिर सदोम् अमोरा अद्मा और सबोयीम् के मार्ग से होके लाशा लों हुआ । २० हाम् के बंश ये ही हुए और उन के भिन्न भिन्न कुल भाषा देश और जाति-वाले भिन्न भिन्न हो गये ।

२१ फिर शेम् जो सब एबेर्बंशियों

का मूलपुरुष हुआ और जिस का जेठा भाई येपेत् था उस के भी
२२ पुत्र उत्पन्न हुए । शेम् के पुत्र एलाम् अश्शूर् अर्पक्षद् लूद् और अराम् हुए।
२३ और अराम् के पुत्र ऊस् हूल् गेतेर्
२४ और मश् हुए । और अर्पक्षद् ने शेलह् को और शेलह् ने एबेर् को जन्माया।
२५ और एबेर् के दो पुत्र उत्पन्न हुए एक का नाम पेलेग् रक्खा गया इस कारण कि उस के दिनों में पृथिवी बंट गई और उस के भाई का नाम योक्तान्
२६ था । और योक्तान् ने अल्मोदाद्
२७ शेलेप् हसर्मावेत् येरह् हदोराम्
२८ ऊजाल् दिक्ला ओबाल् अबीमाएल्
२९ शबा ओपीर् हवीला और योबाब् को जन्माया ये सब योक्तान् के पुत्र हुए।
३० और इन के रहने का स्थान मेशा से लेके सपारा जो पूरब में एक पहाड़ है
३१ उस के मार्ग लों हुआ। शेम् के पुत्र ये ही हुए इन के भिन्न भिन्न कुल भाषा देश और जातिवाले भिन्न भिन्न हो गये ।

३२ नूह के पुत्रों के कुल ये ही हैं और उन की जातियों के अनुसार उन की बंशावलियां ये ही हैं और जलप्रलय के पीछे पृथिवी भर की जातियां इन्हीं से होके बंट गईं ।

(मनुष्य की भाषाओं में गड़बड़ पड़ने का वर्णन.)

११ पहिले तो सारी पृथिवी पर एक ही भाषा और एक ही
२ बोली थी। और लोग पूरब ओर चलते चलते शिनार् देश में एक चौगान पाके उस में बस गये। तब
३ वे आपस में कहने लगे चलो ईंटें बना बनाके भली भांति पकावें सो उन के लिये ईंटें पत्थरों का और मिट्टी की राल गारे का काम देती थी। फिर
४ उन्हों ने कहा चलो हम एक नगर और एक गुम्मट बना लेवें जिस की चोटी स्वर्ग से बातें करे इस प्रकार से हम अपना नाम करें न होवे कि हम को सारी पृथिवी पर फैलना पड़े। तब जिस
५ नगर और जिस गुम्मट को आदमबंशी बनाते थे उसे देखने के लिये यहोवा उतर आया । और यहोवा ने कहा
६ मैं क्या देखता हूं कि सब लोग एक ही समुदाय के हैं और भाषा भी उन सब की एक ही है और उन्हों ने ऐसा ही कार्य्य भी आरम्भ किया सो अब जो कुछ वे करने का यत्न करेंगे उस में से कुछ उन के लिये अनहोना न होगा।
७ चलो हम उतरके उन की भाषा में वहीं गड़बड़ डालें जिस्तें वे एक दूसरे की
८ भाषा को न समझ सकें। ऐसा ही करके यहोवा ने उन को वहां से सारी पृथिवी के ऊपर फैला दिया और उन्हें उस नगर का बनाना छोड़ देना
९ पड़ा । इस कारण उस नगर का नाम बाबेल्[1] पड़ा क्योंकि सारी पृथिवी की भाषा में जो गड़बड़ है सो यहोवा ने वहीं डाली और वहां से यहोवा ने

(१) अर्थात् गड़बड़.

मनुष्यों को सारी पृथिवी के ऊपर फैला दिया ।

(शेम् की बंशावली.)

१० शेम् की बंशावली यह है जलप्रलय के दो बरस पीछे जब शेम् एक सौ बरस का हुआ तब उस ने अर्पक्षद् ११ को जन्माया । और अर्पक्षद् के जन्म के पीछे शेम् पांच सौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ।

१२ जब अर्पक्षद् पैंतीस बरस का हुआ १३ तब उस ने शेलह् को जन्माया । और शेलह् के जन्म के पीछे अर्पक्षद् चार सौ तीन बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ।

१४ जब शेलह् तीस बरस का हुआ १५ तब उस ने एबेर् को जन्माया । और एबेर् के जन्म के पीछे शेलह् चार सौ तीन बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ।

१६ जब एबेर् चैांतीस बरस का हुआ १७ तब उस ने पेलेग् को जन्माया । और पेलेग् के जन्म के पीछे एबेर् चार सौ तीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ।

१८ जब पेलेग् तीस बरस का हुआ तब १९ उस ने रू को जन्माया । और रू के जन्म के पीछे पेलेग् दो सौ नौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ।

२० जब रू बत्तीस बरस का हुआ तब २१ उस ने सरूग् को जन्माया । और सरूग् के जन्म के पीछे रू दो सौ सात बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ।

२२ जब सरूग् तीस बरस का हुआ तब २३ उस ने नाहोर् को जन्माया । और नाहोर् के जन्म के पीछे सरूग् दो सौ बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ।

२४ जब नाहोर् उनतीस बरस का हुआ २५ तब उस ने तेरह् को जन्माया । और तेरह् के जन्म के पीछे नाहोर् एक सौ उन्नीस बरस जीता रहा और उस के और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं ।

२६ जब तेरह् सत्तर बरस का हुआ तब उस ने अब्राम् नाहोर् और हारान् को जन्माया ।

२७ तेरह् की यह बंशावली है कि तेरह् ने अब्राम् नाहोर् और हारान् को जन्माया और हारान् ने लूत को २८ जन्माया । और हारान् अपने पिता के साम्हने ही अपनी जन्मभूमि में अर्थात् कस्दियों के ऊर् नाम नगर में २९ मर गया । और अब्राम् और नाहोर् ने स्त्रियां ब्याह लिईं अब्राम् की स्त्री का नाम तो सारै और नाहोर् की स्त्री का नाम मिल्का है यह उस हारान् की बेटी थी जो मिल्का और यिस्का ३० दोनों का पिता था । सारै तो बांझ ३१ थी उस के सन्तान न हुआ । और तेरह्

ने अपने पुत्र अब्राम् को और अपने पोते लूत को जो हारान् का पुत्र था और अपनी बहू सारै को जो उस के पुत्र अब्राम् की स्त्री थी लिया और वे एक संग कस्दियों के ऊर् नगर से कनान् देश जाने को निकले पर हारान् नाम देश को पहुंचके वहीं रहने लगे। ३२ और जब तेरह् दो सौ पांच बरस का हुआ तब वह हारान् देश में मर गया।

(परमेश्वर की ओर से इब्राहीम के बुलाये जाने का वर्णन.)

१२ तब यहोवा ने अब्राम् से कहा अपने देश और अपनी जन्मभूमि और अपने पिता के घर को छोड़के उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। २ वहां मैं तुझ से एक बड़ी जाति उपजाऊंगा और तुझे आशीष देऊंगा और तेरा नाम बड़ा करूंगा सो तू ३ आशीष का मूल होवे। और जो तुझे आशीर्वाद देवें उन्हें मैं आशीष देऊंगा और जो तुझे कोसे उसे मैं स्राप देऊंगा और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा ४ आशीष पावेंगे। सो अब्राम् यहोवा के कहे के अनुसार चला और लूत भी उस के संग चला और जब अब्राम् हारान् देश से निकला तब वह पचहत्तर बरस ५ का था। सो अब्राम् अपनी स्त्री सारै और अपने भतीजे लूत को और जो धन उन्हों ने एकट्ठा किया था और जो प्राणी उन्हों ने हारान् में प्राप्त किये थे सब को लेके कनान् देश में जाने को निकल चला और वे कनान् देश में आ गये। ६ और अब्राम् उस देश के बीच में होके जाते जाते शेकेम् के स्थान में जहां मोरे का बांज वृक्ष है वहां लों पहुंच गया उस समय तो कनानी लोग उस देश में रहते थे। ७ तब यहोवा ने अब्राम् को दर्शन देके कहा यह देश मैं तेरे बंश को देऊंगा सो उस ने यहोवा की जिस ने उस को दर्शन दिया था वहां एक बेदी बनाई। ८ फिर वहां से कूंच करके वह उस पहाड़ पर आया जो बेतेल् की पूरब ओर है और उस ने अपना तम्बू उस स्थान में खड़ा किया जिस की पच्छिम ओर बेतेल् और पूरब ओर ऐ है और वहां उस ने यहोवा की एक बेदी बनाई और यहोवा से प्रार्थना भी किई। ९ पीछे अब्राम् दक्षिण देश की ओर यात्रा करता गया।

१० उन दिनों उस देश में अकाल पड़ा सो अब्राम् मिस्र को गया कि वहां परदेशी होके रहे क्योंकि कनान् देश में भारी अकाल पड़ा था। ११ और मिस्र के निकट पहुंचके उस ने अपनी स्त्री सारै से कहा सुन मैं जानता हूं कि तू सुन्दरी स्त्री है। १२ सो क्या जानिये मिस्री लोग तुझे देखके कहें यह उस की स्त्री है और मुझ को तो मार डालें पर तुझ को जीती रख लें। १३ सो कृपा करके कहना कि मैं उस की बहिन हूं जिस्तें तेरी खातिर मेरा भला होवे और मेरा

१४ प्राण बचे । जब अब्राम् मिस्र में आया तब मिस्रियों ने उस स्त्री को देखा १५ कि यह बहुत सुन्दरी है । और फिरौन राजा के नीचे के हाकिमों ने उस को देखके फिरौन के साम्हने उस की प्रशंसा किई सो वह स्त्री फिरौन १६ के घर में रक्खी गई । और उस ने उस की खातिर अब्राम् की भलाई किई सो उस को भेड़ बकरी गाय बैल गदहे दास १७ दासियां गदहियां और ऊंट मिले । तब यहोवा ने फिरौन और उस के घराने पर सारै के कारण जो अब्राम् की स्त्री १८ थी बड़ी बड़ी बिपत्तियां डालीं । सो फिरौन ने अब्राम् को बुलवाके कहा अरे तू ने मुझ से क्या किया है तू ने मुझे क्यों नहीं बताया कि यह मेरी स्त्री है । १९ तू ने क्यों कहा कि यह मेरी बहिन है तेरे यह कहने से तो मैं ने उसे अपनी स्त्री कर लिया पर अब अपनी स्त्री २० को लेके चला जा । सो फिरौन ने अपने लोगों को उस के विषय में आज्ञा दिई और उन्हों ने उस को और उस की स्त्री को उस सब समेत जो उस का था वहां से बाहर कर दिया ।

(इब्राहीम और लूत के अलग अलग होने का वर्णन.)

१३ सो अब्राम् अपनी स्त्री और अपनी सारी सम्पत्ति समेत मिस्र को छोड़के कनान् के दक्षिण देश में आया और लूत भी उस के संग था । २ और अब्राम् भेड़ बकरी गाय बैल और सोने रूपे का बड़ा धनी था । ३ फिर वह दक्षिण देश से यात्रा करते करते बेतेल् के पास उसी स्थान को पहुंचा जहां उस का तम्बू पहिले पहिल पड़ा था जो बेतेल् और ऐ के बीच में है । ४ वह उसी बेदी का स्थान है जो उस ने पहिले पहिल वहां बनाई थी और वहां अब्राम् ने यहोवा से प्रार्थना किई । ५ और लूत जो अब्राम् के साथ साथ जाता था उस के भी भेड़ बकरी गाय बैल और तम्बू थे । ६ सो उस देश में उन दोनों की समाई न हो सकी कि वे एकट्ठे रहें क्योंकि उन के बहुत धन था यहां तक कि वे एकट्ठे न रह सके । ७ इतने में अब्राम् और लूत की भेड़ बकरी और गाय बैल के चरवाहों में झगड़ा हुआ और उस समय कनानी और परिज्जी लोग उस देश में रहते थे । ८ यह हाल देखके अब्राम् लूत से कहने लगा बिनती यह है कि मेरे और तेरे बीच और मेरे और तेरे चरवाहों के बीच में झगड़ा न होने पावे क्योंकि हम लोग भाई बन्धु हैं । ९ क्या सारा देश तेरे साम्हने पड़ा नहीं है कृपा करके मुझ से अलग हो यदि तू बाईं ओर जावे तो मैं दहिनी ओर जाऊंगा और यदि तू दहिनी ओर जावे तो मैं बाईं ओर जाऊंगा । १० यह सुन लूत ने आंख उठाके यर्दन नदी की सारी दून को देखा कि वह सब सिंची हुई है जानना चाहिये कि जब लों यहोवा ने सदोम्

और अमोरा को नष्ट न किया था तब लों वह दून सोअर् के मार्ग लों यहोवा की बारी और मिस्र देश के समान ११ थी। सो लूत ने यर्दन की सारी दून में रहना अंगीकार करके पूरब ओर यात्रा किई इस प्रकार वे एक दूसरे १२ से अलग हो गये। अब्राम् तो कनान् देश में रहा पर लूत उस दून के नगरों में रहने लगा और निदान अपना तम्बू सदोम् के निकट ही खड़ा किया। १३ जानना चाहिये कि सदोम् के लोग यहोवा के लेखे में बड़े दुष्ट और १४ पापी थे। जब लूत अब्राम् से अलग हो गया उस के पीछे यहोवा ने अब्राम् से कहा आंख उठाके जिस स्थान पर तू है वहां से उत्तर दक्खिन पूरब और १५ पच्छिम ओर दृष्टि कर। क्योंकि जितनी भूमि तुझे देख पड़ती है उस सब को मैं तुझे और तेरे बंश को १६ युगानयुग के लिये देऊंगा। और मैं तेरे बंश को पृथिवी की धूल के किनकों की नाईं बहुत करूंगा यहां लों कि जो कोई पृथिवी की धूल के किनकों को गिन सके सोई तेरा बंश भी गिन १७ सकेगा। उठ इस देश की लम्बाई और चौड़ाई में भ्रमण कर क्योंकि मैं १८ उसे तुझी को देऊंगा। इस के पीछे अब्राम् अपना तम्बू उखाड़के मम्रे के बांजों के बीच जो हेब्रोन् में थे आके रहने लगा और वहां यहोवा की एक बेदी बनाई।

(इब्राहीम के विजय और मेल्कीसेदेक् के दर्शन देने का बर्णन.)

१४ १ शिनार् के राजा अम्रापेल् और एल्लासार् के राजा अर्योक् और एलाम् के राजा कदोर्लाओमेर् और गोयीम् के राजा तिदाल् २ के दिनों में क्या हुआ कि ये सदोम् के राजा बेरा और अमोरा के राजा बिर्शा और अद्मा के राजा शिनाब् और सबोयीम् के राजा शेमेबेर् और बेला जो सोअर् भी कहावता है उस ३ के राजा के साथ भी लड़े। इन पांचों ने सिद्दीम् नाम दून में जो खार ताल ४ के पास है एका किया। बारह बरस लों तो वे कदोर्लाओमेर् के अधीन रहे पर तेरहवें बरस में उस के बिरुद्ध ५ उठे। सो चौदहवें बरस में कदोर्लाओमेर् और उस के सङ्गी राजा आये और अश्तरोत्कर्नैम् में रपाइयों को और हाम् में जूजियों को और शावेकिर्यातैम् में एमियों को ६ और सेईर् नाम पहाड़ में होरियों को मारते मारते उस एल्पारान् लों जो बन के ७ सिवाने में है पहुंच गये। वहां से वे घूमके एन्मिश्पात् को आये जो कादेश् भी कहावता है और अमालेकियों के सारे चौगान को और उन एमोरियों को भी जीत लिया जो हससोन्तामार ८ में रहते थे। तब सदोम् अमोरा अद्मा सबोयीम् और बेला अर्थात् सोअर् के राजा निकले और सिद्दीम् की दून में

उन के साथ युद्ध के लिये पांति बन्धाई। ९ अर्थात् एलाम् के राजा कदोर्लाओमेर् गोयीम् के राजा तिदाल् शिनार् के राजा अम्रापेल् और एल्लासार् के राजा अर्योक् इन चारों के बिरुद्ध उन पांचों १० ने पान्ति बन्धाई। सिद्दीम् की दून में तो लसार मिट्टी के गड़हे ही गड़हे थे और सदोम् और अमोरा के राजा भागते भागते उन्हीं में गिर पड़े और ११ बाकी लोग पहाड़ पर भाग गये। तब दूसरी ओर के राजा सदोम् और अमोरा के सारे धन और भोजन की बस्तुओं को लूटके चले गये। १२ और वे अब्राम् के भतीजे लूत को जो सदोम् में रहता था और उस के धन १३ को लेके चले गये। पर एक जन ने जो भागके बच गया आके इब्री अब्राम् को समाचार दिया अब्राम् तो एमोरी मम्रे जो एश्कोल् और आनेर् का भाई था तिस के बांज वृक्षों के बीच में रहता था और ये लोग अब्राम् के संग १४ बाचा बांधे हुए थे। सो अब्राम् ने यह सुनके कि मेरा भतीजा बन्धुआई में गया अपने तीन सौ अठारह सीखे हुए दासों को जो उस के घर में उत्पन्न हुए थे हथियार बन्धाके दान् १५ लों उन का पीछा किया और अपने दासों के अलग अलग दल बान्धकर रात को उन पर लपकके उन को मार लिया और होबा लों जो दमिश्क् की उत्तर ओर है उन का पीछा किया। १६ और वह सारे धन को और अपने भतीजे लूत और उस के धन को और स्त्रियों को भी निदान सब लोगों को फेर ले आया। १७ और वह कदोर्लाओमेर् और उस के संगी राजाओं को जीतके लौटा आता था कि सदोम् का राजा शावे की दून में जो राजा की भी दून कहावती है उस से भेंट करने को आया। १८ तब मल्कीसेदेक् जो शालेम् का राजा था रोटी और दाखमधु ले आया वह तो परमप्रधान ईश्वर का याजक था। १९ और उस ने अब्राम् को यह आशीर्बाद दिया कि परमप्रधान ईश्वर की ओर से जो स्वर्ग और पृथिवी का अधिकारी है तू धन्य होवे। २० और धन्य है परमप्रधान ईश्वर जिस ने तेरे द्रोहियों को तेरे बश में कर दिया है। और अब्राम् ने उस को सब का दशमांश दिया। २१ तब सदोम् के राजा ने अब्राम् से कहा प्राणियों को मुझे दे और धन को अपने पास रख। २२ पर अब्राम् ने सदोम् के राजा से कहा मैं ने परमप्रधान ईश्वर यहोवा की जो स्वर्ग और पृथिवी का अधिकारी है यह किरिया खाई है २३ कि जो कुछ तेरा है उस में से न तो एक सूत और न जूती की बन्धनी न कोई और बस्तु लेऊंगा ऐसा न होवे कि तू कहने पावे कि अब्राम् मेरे ही द्वारा धनी हुआ। २४ पर हां जो कुछ जवान लोगों ने खा लिया है और

जो पुरुष मेरे संग चले अर्थात् आनेर् एश्कोल् और मम्रे जो हैं उन का भाग तो मैं फेर न दूंगा वे अपना अपना भाग रक्खें।

(इब्राहीम के साथ यहोवा के बाचा बान्धने का बर्णन।)

१५ इन बातों के पीछे यहोवा का यह बचन दर्शन में अब्राम् के पास पहुंचा कि हे अब्राम् मत डर तेरी ढाल और तेरा अत्यन्त बड़ा २ फलरूप मैं हूं। इतना सुनके अब्राम् ने कहा हे प्रभु यहोवा मैं तो निर्बंश हूं और मेरे घर का वारिस यह दमिश्की एलीएजेर् होगा सो तू मुझे ३ क्या देवेगा। फिर अब्राम् ने कहा देख मुझे तो तू ने बंश नहीं दिया और क्या देखता हूं कि मेरे घर में जो उत्पन्न हुए उन में से एक मेरे घर ४ का वारिस होवेगा। तब यहोवा का यह बचन उस के पास पहुंचा कि यह तेरा वारिस न होवेगा पर तेरा जो औरस पुत्र होगा सोई तेरा वारिस ५ होगा। फिर उस ने उस को बाहर ले जाके कहा आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन क्या तू उन को गिन सकता है फिर उस ने उस से कहा तेरा ६ बंश ऐसा ही होवेगा। इतना सुनके उस ने यहोवा पर बिश्वास किया और यहोवा ने इस बात को उस के लेखे ७ में धर्म्म गिना। फिर उस ने उस से कहा मैं वही यहोवा हूं जो तुझे कस्दियों के ऊर् नगर से बाहर ले आया जिस्तें तुझ को इस देश का अधिकार देऊं। उस ने कहा हे प्रभु यहोवा मैं ८ कैसे जानूं कि मैं इस का अधिकारी होऊंगा। तब यहोवा ने उस से कहा ९ मेरे लिये तीन बरस की एक कलोर और तीन बरस की एक बकरी और तीन बरस का एक मेंढ़ा और एक पिण्डुक और पिण्डुकी का एक बच्चा ले। उस ने इन सभों को लेके बीच बीच १० से दो दो टुकड़े कर दिया और टुकड़ों को आम्हने साम्हने रक्खा पर चिड़ियाओं को उस ने दो दो टुकड़े न किया। और जब जब मांसाहारी ११ पक्षी लोथों पर झपटे तब तब अब्राम् ने उन्हें उड़ा दिया। जब सूर्य अस्त १२ होने लगा तब अब्राम् को घोर निद्रा पड़ी और फिर क्या हुआ कि अत्यन्त भय और महा अन्धकार ने उसे छा लिया। तब यहोवा ने अब्राम् से कहा १३ यह निश्चय जान कि तेरे बंश पराये देश में चार सौ बरस लों परदेशी होके रहेंगे और उस देश के लोगों के दास हो जावेंगे और वे उन को दुःख देवेंगे। और फिर जिस जाति के वे १४ दास होंगे उस को मैं दण्ड दूंगा और उस के पीछे वे बड़ा धन लेके निकल आवेंगे। और तू जो है सो अपने १५ पितरों में कुशल के साथ मिल जावेगा तुझे पूरे बुढ़ापे में मिट्टी दिई जावेगी। पर वे चौथी पीढ़ी में यहां फिर १६

आवेंगे क्योंकि अब लों तो एमोरियों के अधर्म्म की नाव नहीं भर गई । १७ जब सूर्य अस्त हो गया और घोर अन्धकार छा गया तब एक धूआं उठती हुई अंगेठी और एक जलता हुआ पलीता देख पड़ा जो उन टुकड़ों के १८ बीच होके निकल गया । उसी दिन यहोवा ने अब्राम् के साथ यह बाचा बान्धी कि मिस्र के महानद से लेके परात् नाम बड़े नद लों जो देश है उसे मैं ने तेरे बंश को दिया है । १९ अर्थात् केनियों कनज्बंशियों कद्मो- २० नियों हित्तियों परिज्जियों रपा- २१ इयों एमोरियों कनानियों गिर्गा- शियों और यबूसियों का जो देश है सो मैं ने तुझे दिया है ।

(इश्माएल् की उत्पत्ति का बर्णन.)

१६ अब्राम् की स्त्री सारै कोई सन्तान न जनी और उस के हागार् नाम एक मिस्री लौंडी थी । २ सो एक दिन सारै ने अब्राम् से कहा देख तो यहोवा मेरी कोख बन्द किये है सो कृपा करके मेरी लौंडी के पास जा क्या जानिये मेरा घर उस के द्वारा बस जावे । और अब्राम् ने सारै की ३ मानी । सो जब अब्राम् को कनान् देश में रहते दस बरस बीत चुके तब उस की स्त्री सारै ने अपनी मिस्री लौंडी हागार् को लेके अपने पति अब्राम् को दिया कि वह उस की स्त्री होवे । ४ और वह हागार् के पास गया और वह गर्भवती हुई और जब उस ने जाना कि मैं गर्भवती हुई हूं तब वह अपनी स्वामिनी को अपने लेखे में तुच्छ गिनने लगी । सो सारै ने अब्राम् ५ से कहा जो मुझ पर उपद्रव हुआ सो तेरे ही सिर पर होवे देख मैं ही ने अपनी लौंडी को तेरी स्त्री कर दिया और जब उस ने जाना कि मैं गर्भवती हूं तब वह मुझे तुच्छ गिनने लगी सो यहोवा मेरे तेरे बीच में न्याय करे । इतना सुनके अब्राम् ने सारै से कहा ६ देख तेरी लौंडी तेरे बश में है जैसा तुझे भावे तैसा ही उस से कर और जब सारै उस को दुःख देने लगी तब वह उस के साम्हने से भाग गई । और ७ यहोवा के दूत ने उस को बन में शूर् के मार्ग पर जल के एक सोते के पास पाया और कहा हे सारै की लौंडी ८ हागार् तू कहां से आती और कहां को जाती है उस ने कहा मैं तो अपनी स्वामिनी सारै के साम्हने से भाग आई हूं । तब यहोवा के दूत ने उस से कहा ९ अपनी स्वामिनी के पास लौटके उस के दाब में रह । फिर यहोवा के दूत १० ने उस से कहा मैं तेरे बंश को बहुत बढ़ाऊंगा बल्कि वह बहुतायत के मारे गिना न जावेगा । फिर यहोवा ११ के दूत ने उस से कहा देख तू गर्भवती है और पुत्र जनेगी सो उस का नाम इश्माएल[1] रखना क्योंकि यहोवा ने

(१) अर्थात्. ईश्वर सुननेहारा.

१२ तेरे दुःख को सुना है। और वह मनुष्य बनैले गदहे के समान स्वाधीन रहेगा उस का हाथ सब के बिरुद्ध होगा और सब के हाथ उस के बिरुद्ध होंगे और वह अपने सब भाई बन्धुओं के १३ साम्हने बसा करेगा। और यहोवा जिस ने उस से बातें किईं थीं उस का नाम उस ने यह कहके अन्ताएल्रोई[1] रक्खा कि क्या मैं यहां भी उस को जाते हुए १४ देखने पाई जो मेरा देखनेहारा है। इस कारण उस कूए का नाम लहैरोई[2] का कूआं पड़ा वह तो कादेश् और बेरेद् १५ के बीच है। सो हागार् अब्राम् का जन्माया एक पुत्र जनी और अब्राम् ने अपने पुत्र का नाम जिसे हागार् १६ जनी थी इश्माएल् रक्खा। और जब हागार् अब्राम् के जन्माये इश्माएल् को जनी उस समय अब्राम् छियासी बरस का था।

(खतना की बिधि के ठहरने का बर्णन और इस्हाक् की उत्पत्ति की प्रतिज्ञा.)

१७ जब अब्राम् निन्नानवे बरस का हो गया तब यहोवा उस को दर्शन देके कहने लगा मैं सर्बशक्तिमान् ईश्वर हूं मुझे अपने साम्हने जानके चल और खरा रह। २ और मैं अपने और तेरे बीच में बाचा बान्धूंगा और तेरे बंश को ३ अत्यन्त ही बढ़ाऊंगा। इतना सुनके अब्राम् मुंह के बल गिरा और परमेश्वर उस से यों बातें कहता गया ४ सुन मेरी बाचा तेरे साथ बन्धी रहेगी और तू जातियों के बृन्द का मूलपुरुष हो ५ जावेगा। सो अब तेरा नाम अब्राम्[1] न रहेगा पर तेरा नाम इब्राहीम[2] होवेगा क्योंकि मैं ने तुझे जातियों के ६ बृन्द का मूलपुरुष ठहराया है। और मैं तुझे अत्यन्त ही फुलाऊं फलाऊंगा और तुझ को जाति जाति का मूल बना दूंगा और तेरे बंश में राजा उत्पन्न होवेंगे। ७ और मैं अपनी बाचा को जो मेरे तेरे और तेरे बंश के बीच में बन्धी है तेरे पीछे तेरे बंश की पीढ़ियों तक पूरी करता रहूंगा कि वह युगानयुग की बाचा होवे सो यह है कि मैं तेरा और तेरे पीछे तेरे बंश का भी परमेश्वर रहूंगा। ८ और मैं तुझ को और तेरे पीछे तेरे बंश को भी यह देश जिस में तू परदेशी होके रहता है अर्थात् सारा कनान् देश देऊंगा कि वह युगानयुग उन की निज भूमि रहे और मैं उन का परमेश्वर ९ रहूंगा। फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा तू भी मेरी बाचा का पालन करना तू क्या बलिक तेरे पीछे तेरे बंश भी अपनी अपनी पीढ़ी में उस का १० पालन करें। मेरी जो बाचा मेरे तुम्हारे और तेरे पीछे तेरे बंश के बीच की है और तुम्हें पालनी पड़ेगी सो यह

(१) अर्थात्. तू सर्ब्बदर्शी ईश्वर है.
(२) अर्थात्. जीते देखनेहारे.

(१) अर्थात्. उन्नत पिता.
(२) अर्थात्. बहुतों का पिता.

है कि तुम में से एक एक पुरुष का
११ खतना होवे। तुम अपनी अपनी खलड़ी
का खतना करा लेना सो मेरी जो बाचा
मेरे और तुम्हारे बीच में है उस का
१२ यही चिन्ह होगा। पीढ़ी पीढ़ी में
जब कोई पुरुष आठ दिन का हो
जावे तब उस का खतना होवे सो
केवल तेरे बंश ही का नहीं बल्कि सब
परदेशियों का भी जो तेरे घर में
उत्पन्न अथवा तेरे रूपे से मोल लिये
१३ होवें खतना किया जावे। जो तेरे घर
में उत्पन्न होवे अथवा तेरे रूपे से
मोल लिया जावे उस का खतना
अवश्य ही किया जावे इस रीति मेरी
बाचा तुम्हारी देह में युगानयुग की
१४ रहेगी। और जो पुरुष खतनारहित
रहे अर्थात् जिस की खलड़ी का खतना
न होवे उस प्राणी ने जो मेरी बाचा
को तोड़ दिया है सो वह अपने लोगों
में से नष्ट किया जावे।

१५ फिर परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा
तेरी स्त्री सारै जो है उस को तू अब
सारै न कहना पर उस का नाम
१६ सारा होवेगा। और मैं उस को आशीष
देऊंगा और तुझ को उस के द्वारा एक
पुत्र देऊंगा बल्कि मैं उस को ऐसी
आशीष दूंगा कि वह जातियों की
मूलमाता हो जावेगी और उस के बंश
में जाति जाति के राजा उत्पन्न होवेंगे।
१७ यह सुनके इब्राहीम मुंह के बल गिरके
हंसा और मन ही मन कहने लगा
क्या सौ बरस के पुरुष के भी सन्तान
होवेगा और क्या सारा जो नब्बे बरस
की है जनेगी। १८ इस पर इब्राहीम ने
परमेश्वर से कहा इश्माएल् तेरी दृष्टि
में जीता रहे तो यही अच्छा है। १९ परन्तु
परमेश्वर ने कहा निश्चय तेरी स्त्री
सारा तेरा जन्माया एक पुत्र जनेगी
और तू उस का नाम इस्हाक् रखना
और मैं अपनी बाचा को उस के साथ
और उस के पीछे उस के बंश के साथ
भी बांधूंगा कि वह युगानयुग की बाचा
होवे। २० और इश्माएल् के विषय में भी
मैं ने तेरी सुनी है सुन मैं ने उस को
भी आशीष दिई और उसे फुलाऊं
फलाऊंगा और अत्यन्त ही बढ़ा दूंगा
उस से बारह प्रधान उत्पन्न होवेंगे
और मैं उस से एक बड़ी जाति उप-
जाऊंगा। २१ पर मैं अपनी बाचा तो
इस्हाक् ही के साथ बांधूंगा जिसे
सारा अगले बरस के इसी नियत समय
में तेरा जन्माया जनेगी। २२ तब परमे-
श्वर ने इब्राहीम से बातें करनी बन्द
किई और उस के पास से ऊपर चढ़
गया। २३ सो इब्राहीम ने अपने पुत्र
इश्माएल् को और घर में जितने
उत्पन्न हुए थे और जितने रूपे से
मोल लिये हुए थे निदान घर में
जितने पुरुष थे उन सभों को लेके
उसी दिन परमेश्वर के कहे के अनुसार
उन की खलड़ी का खतना किया।
२४ और जब इब्राहीम की खलड़ी का

खतना हुआ तब वह निन्नानवे बरस २५ का था। जब उस के पुत्र इश्माएल् की खलड़ी का खतना हुआ तब इश्माएल् २६ तेरह बरस का हुआ था। एक ही दिन में इब्राहीम और उस के पुत्र इश्माएल् दोनों का खतना हुआ। २७ बल्कि इब्राहीम के घर में जितने पुरुष थे क्या घर में उत्पन्न हुए क्या परदेशियों के हाथ से मोल लिये हुए सब का खतना उस के सङ्ग ही हुआ।

१८ एक दिन की बात है कि इब्राहीम मम्रे के बांजों के बीच कड़े घाम के समय तम्बू के द्वार पर बैठा हुआ था तब यहोवा ने उसे २ दर्शन दिया। और ऐसा हुआ कि उस ने आंख उठाके दृष्टि किई तो क्या देखा कि तीन पुरुष मेरे पास खड़े हैं सो यह देखके वह उन से भेंट करने को तम्बू के द्वार से दौड़ा और भूमि पर ३ गिर दण्डवत् करके कहने लगा हे प्रभु यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि हो तो कृपा करके मुझ अपने ४ दास के पास से चला न जा। इच्छा होवे तो थोड़ा सा जल लाया जावे और तुम लोग अपने पांव धोओ और इस ५ वृक्ष के तले उठंग जाओ। फिर मैं एक टुकड़ा रोटी ले आऊं और उस से तुम अपने अपने जीव को ठण्डा करो तब उस के पीछे चले जाओ क्योंकि तुम मुझ अपने दास के द्वार पर इस लिये आ गये हो कि तुम्हारा सत्कार किया जावे उन्हों ने कहा जैसा तू कहता है ६ तैसा ही कर। सो इब्राहीम ने तम्बू में सारा के पास फुर्त्ती से जाके कहा तीन सआ[1] मैदा फुर्त्ती से गून्ध और ७ फुलके बना। फिर इब्राहीम गाय बैल के झुण्ड में दौड़ा और एक कोमल और अच्छा बछड़ा लेके अपने सेवक को दिया और उस ने फुर्त्ती से उस ८ को पकाया। तब उस ने मक्खन और दूध और वह बछड़ा जो उस ने पकवाया था लेके उन के आगे धर दिया और आप वृक्ष के तले उन के आगे ९ खड़ा रहा सो वे खाने लगे। तब उन्हों ने उस से पूछा तेरी स्त्री सारा कहां है १० उस ने कहा वह तो तम्बू में है। उस ने कहा मैं बसन्त ऋतु में निश्चय तेरे पास फिर आऊंगा तब तेरी स्त्री सारा पुत्र जनेगी उस समय सारा तम्बू के द्वार पर जो इब्राहीम के पीछे था सुनती थी। ११ पर इब्राहीम और सारा बहुत पुरनिये थे सो सारा को मासिक धर्म्म न होता १२ था। सो सारा अपने मन में हंसके कहने लगी मैं जो बूढ़ी हूं और मेरा पति भी बूढ़ा है तो क्या मुझे यह सुख १३ होगा। तब यहोवा ने इब्राहीम से कहा सारा यह कहके क्यों हंसी कि क्या मैं बुढ़िया होके सचमुच जनूंगी। १४ क्या यहोवा के लिये कोई काम कठिन है नियत समय में अर्थात् बसन्त ऋतु में मैं तेरे पास फिर आऊंगा और

(१) यह नपुआ बिशेष है.

१५ सारा पुत्र जनेगी। तब सारा यह कहके मुकर गई कि मैं नहीं हंसी क्योंकि वह डरती थी पर उस ने कहा नहीं तू ते हंसी ।

(सदोम् आदि नगरों के बिध्वंस का बर्णन.)

१६ फिर वे पुरुष वहां से चलके सदोम् की ओर ताकने लगे और इब्राहीम उन्हें बिदा करने के लिये उन के संग
१७ संग चला। तब यहोवा ने कहा यह जो मैं करता हूं सो क्या इब्राहीम से
१८ छिपा रक्खूं। इब्राहीम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति उपजेगी और पृथिवी की सारी जातियां उस
१९ के द्वारा आशीष पावेंगी। क्योंकि मैं ने इसी मनसा से उस पर मन लगाया है कि वह अपने पुत्रों और घराने को जो उस के पीछे रह जावेंगे ऐसी आज्ञा देवे कि वे मेरे मार्ग को धरे हुए धर्म्म और न्याय करते रहें जिस्तें जो कुछ मैं ने इब्राहीम के विषय में कहा है उस को उस के लिये पूरा
२० करूं। फिर यहोवा ने कहा सदोम् और अमोरा के पाप की चिल्लाहट जो बढ़ी और वह पाप जो बहुत
२१ भारी हो गया है इस लिये मैं उतरके देखूंगा कि उन के पाप की जैसी चिल्लाहट मेरे कान तक पहुंची है उन्हों ने ठीक वैसा ही काम किया कि नहीं और नहीं किया तो इसे मैं
२२ जानूंगा। सो वे पुरुष वहां से फिरके सदोम् की ओर जाने लगे पर इब्राहीम यहोवा के आगे खड़ा रहा।
२३ फिर वह और निकट जाके कहने लगा क्या तू सचमुच दुष्ट के संग धर्म्मी
२४ को भी मिटावेगा। क्या जानिये उस नगर में पचास धर्म्मी होवें तो क्या तू सचमुच उस को मिटावेगा और उस स्थान को उन पचास धर्म्मियों के कारण जो उस में होवें न छोड़ेगा।
२५ यह तुझ से दूर होवे कि इस प्रकार का काम करे कि दुष्ट के संग धर्म्मी को भी मार डाले और धर्म्मी और दुष्ट दोनों की एकी दशा होवे यह तुझ से दूर रहे क्या सारी पृथिवी का
२६ न्यायी न्याय न करे। यहोवा ने कहा यदि मुझे सदोम् के बीच पचास धर्म्मी मिलें तो उन के कारण उस सारे स्थान
२७ को छोड़ूंगा। फिर इब्राहीम ने कहा हे प्रभु कृपा करके सुन मैं तो मिट्टी और राख हूं तौभी मैं ने तुझ से बात करने
२८ को ढिठाई किई है। क्या जानिये उन पचास धर्म्मियों में पांच घट जावें तो क्या तू उस सारे नगर का पांच ही के घटने के कारण नाश करेगा उस ने कहा यदि मुझे वहां पैंतालीस भी मिलें तौभी उस का नाश न
२९ करूंगा। फिर उस ने उस से यह भी कहा क्या जानिये चालीस वहां मिलें उस ने कहा तो मैं चालीस के कारण
३० भी ऐसा न करूंगा। फिर उस ने कहा हे प्रभु कोपित न हो तो मैं कुछ और

कहूंगा क्या जानिये वहां तीस मिलें उस ने कहा यदि मुझे वहां तीस भी ३१ मिलें तौभी ऐसा न करूंगा। फिर उस ने कहा हे प्रभु कृपा करके सुन मैं ने तुझ से बातें करने को ढिठाई किई है क्या जानिये वहां बीस मिलें उस ने कहा तो मैं बीस के कारण भी उस ३२ का नाश न करूंगा। फिर उस ने कहा हे प्रभु कोपित न हो तो मैं अब की एक बार और बोलूंगा क्या जानिये वहां दस मिलें उस ने कहा तो मैं दस के कारण भी उस का नाश न करूंगा। ३३ जब यहोवा इब्राहीम से बातें कर चुका तब चला गया और इब्राहीम अपने स्थान को लौट गया।

१९ वे दो दूत सांझ को सदोम् के पास आये और लूत सदोम् के फाटक के पास बैठा था सो वह उन को देखके उन से भेंट करने को उठा और मुंह के बल भूमि पर गिर दण्ड- २ वत् करके कहा हे मेरे प्रभुओ कृपा करके मुझ अपने दास के घर में पधारो और वहां रात बिताना और अपने पांव धोओ फिर भोर को उठके अपना मार्ग लेना पर उन्हों ने कहा सो नहीं पर हम चौक ही पर रात बिता- ३ वेंगे। तब उस ने उन को बहुत बिनती करके दबाया सो वे उस के घर की ओर चले और उस में आये और उस ने उन की जेवनार किई और बिन खमीर की रोटियां बनवाके उन को खिलाईं। उन के सो जाने से पहिले ४ उस नगर के अर्थात् सदोम् के पुरुषों ने लड़कों से लेके बूढ़ों तक बल्कि चारों ओर के सब लोगों ने आके उस घर को घेर लिया और लूत को ५ पुकारके उस से कहने लगे जो पुरुष आज रात को तेरे पास आये सो कहां हैं उन को हमारे पास बाहर ले आ कि हम उन से लौंडेबाजी करें। यह ६ सुनके लूत उन के पास द्वार के बाहर गया और किवाड़ को अपने पीछे बन्द किया और कहा हे मेरे भाइयो ७ कृपा करके ऐसी बुराई न करो। देखो ८ मेरे दो बेटियां हैं जिन्हों ने अब लों पुरुष का मुंह नहीं देखा इच्छा हो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर ले आऊं और तुम को जैसा अच्छा लगे तैसा व्यवहार उन से करो तो करो पर इन पुरुषों से कुछ न करो क्योंकि वे मेरी छत के तले इस लिये आये हैं कि उन का सत्कार किया जावे। पर उन्हों ने ९ कहा हट जा फिर वे कहने लगे तू एक परदेशी आया तो यहां रहने के लिये अब न्यायी भी बन बैठा है सो अब हम उन से भी अधिक तेरे साथ बुराई करेंगे इतना कहके वे उस पुरुष अर्थात् लूत को बहुत दबाने लगे और किवाड़ तोड़ने के लिये निकट आये। पर उन पाहुनों ने हाथ १० बढ़ाके लूत को अपने पास घर में खींच लिया और किवाड़ को बन्द

११ करके बिलाई लगा दिई और उन्हों ने उन पुरुषों को जो घर के द्वार पर थे छोटों से बड़ों तक सब को अन्धा कर दिया सो वे द्वार को ढूंढते ढूंढते १२ थक गये। फिर उन पाहुनों ने लूत से पूछा यहां तेरे और कौन कौन हैं दामाद बेटे बेटियां वा नगर में तेरा जो कोई होवे उन को लेके इस स्थान १३ से निकल जा। क्योंकि हम यह स्थान नष्ट करने पर हैं इस लिये कि उस के पाप की चिल्लाहट यहोवा के सन्मुख बढ़ गई है और यहोवा ने हमें उस का नाश करने के लिये भेज दिया है। १४ इतना सुन लूत ने निकलके अपने दामादों को जिन के साथ उस की बेटियों की सगाई हो गई थी समझाके उन से कहा उठो इस स्थान से निकल चलो क्योंकि यहोवा इस नगर को नाश किया चाहता है। पर वह अपने दामादों के लेखे में हंसी करनेहारा १५ सा जान पड़ा। और जब पह फटने लगी तब दूतों ने यह कहके लूत से फुर्त्ती कराई कि चल अपनी स्त्री और दोनों बेटियों को जो यहां हैं ले जा नहीं तो तू भी इस नगर के अधर्म्म १६ के दण्ड में भस्म हो जावेगा। पर वह तब भी बिलम्ब करता रहा सो यहोवा ने जो उस पर कोमलता दिखाई इस से उन पुरुषों ने उस का और उस की स्त्री और दोनों बेटियों के हाथ पकड़ लिये और उस को निकालके नगर के बाहर खड़ा कर दिया। और जब उन को निकाला तब १७ उस ने कहा अपना प्राण लेके भाग जा पीछे फिरके मत ताकना और दून भर में मत ठहरना पहाड़ पर भाग जाना नहीं तो तू भस्म हो जावेगा। पर १८ लूत ने उस से कहा हे प्रभु कृपा करके ऐसा न कर। देख मुझ तेरे दास पर १९ तेरी अनुग्रह की दृष्टि हुई है और तू ने जो मेरे प्राण को बचाया है सो तो मुझ पर बड़ी कृपा किई है पर मैं पहाड़ पर भाग नहीं सकता कहीं ऐसा न हो कि यह बिपत्ति मुझ पर भी आ पड़े और मैं मर जाऊं। देख यह नगर २० ऐसा निकट है कि मैं वहां भाग सकता हूं और वह छोटा भी है सो उसे बचाना और मुझे वहीं भाग जाने दे क्योंकि वह छोटा तो है ही और इस प्रकार मेरे प्राण की रक्षा कर। उस २१ ने उस से कहा सुन मैं ने इस बिषय में भी तेरी बिनती अंगीकार किई है कि जिस नगर की चर्चा तू ने किई है उस को मैं न उलटूंगा। फुर्त्ती करके २२ वहां भाग जा क्योंकि जब लों तू वहां न पहुंचे तब लों मैं कुछ न कर सकूंगा। इसी कारण उस नगर का नाम सोअर[1] पड़ा। लूत के सोअर के निकट पहुंचते २३ ही सूर्य्य पृथिवी पर उदय हुआ। तब २४ यहोवा ने सदोम् और अमोरा पर अपनी ओर से अर्थात् स्वर्ग से गन्धक

(१) अर्थात्, छोटा.

२५ और आग बरसाके उन नगरों और
उस सम्पूर्ण दून को और नगरों के सब
निवासियों को और भूमि की सारी
२६ उपज को उलट दिया । पर लूत
की स्त्री ने उस के पीछे से दृष्टि फेरके
ताका सो वह लोन का खंभा हो गई ।
२७ और इब्राहीम भोर को उठके उस
स्थान को गया जहां वह यहोवा के
२८ सन्मुख खड़ा रहा था और सदोम्
और अमोरा और उस दून के सारे देश
की ओर ताकके क्या देखा कि उस देश
में से भट्ठी का सा धूआं उठ रहा है ।
२९ सो जब परमेश्वर ने उस दून के
नगरों का जिन में लूत रहता था
नाश करना अर्थात् उलटना चाहा
तब उस ने इब्राहीम की सुधि करके
लूत को उलटने से बचा लिया ।
३० पर लूत सोअर् में रहते डरता था
सो वह अपनी दोनों बेटियों समेत उस
स्थान को छोड़के पहाड़ पर चढ़ गया
और वहां रहने लगा अर्थात् वह और
उस की दोनों बेटियां एक गुफा में रहने
३१ लगीं । एक दिन बड़की बेटी ने छुटकी
से कहा हमारा पिता बूढ़ा है और
पृथिवी[1] भर में कोई ऐसा पुरुष नहीं
जो संसार की रीति के अनुसार हमारे
३२ पास आवे । सो चल हम अपने पिता
को दाखमधु पिलाके उस के साथ सोवें
और इसी रीति अपने पिता के द्वारा
३३ बंश उत्पन्न करें । सो उन्हों ने उसी

(१) अथवा. देश.

दिन रात के समय अपने पिता को
दाखमधु पिलाया तब बड़की बेटी
जाके अपने पिता के पास सोई पर
उस को न तो उस के सोने के समय
न उस के उठने के समय कुछ भी
चेत था । और दूसरे दिन बड़की ३४
ने छुटकी से कहा सुन कल रात
को मैं अपने पिता के साथ सोई सो
आज भी रात को हम उस को दाख-
मधु पिलावें तब तू जाके उस के साथ
सोना इसी भान्ति हम अपने पिता
के द्वारा बंश उत्पन्न करें । सो उन्हों ३५
ने उस दिन भी रात के समय अपने
पिता को दाखमधु पिलाया तब छुटकी
बेटी जाके उस के पास सोई पर उस
को उस के भी सोने और उठने के
समय चेत न था । इसी प्रकार से लूत ३६
की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भ-
वती हुईं । और बड़की एक पुत्र जनी ३७
और उस का नाम मोआब्[1] रक्खा
सो मोआब् नाम जाति का जो आज
लों है मूलपुरुष हुआ । और छुटकी ३८
भी एक पुत्र जनी और उस का नाम
बेनम्मी[2] रक्खा सो अम्मोन्बंशियों का
जो आज लों हैं मूलपुरुष हुआ ।

(इस्हाक् की उत्पत्ति का बर्णन.)

२० फिर इब्राहीम वहां से कूंच १
कर दक्षिण देश में आके कादेश्
और शूर् के बीच में ठहरा और गरार्

(१) अर्थात्. पिता का बीर्य्य.
(२) अर्थात्. मेरे कुटुम्बी का बेटा.

नगर में परदेशी होके रहने लगा। २ वहां इब्राहीम अपनी स्त्री सारा के बिषय में कहने लगा कि वह मेरी बहिन है सो गरार् के राजा अबीमेलेक् ने दूत भेजके सारा को बुलवा ३ लिया। परन्तु परमेश्वर ने रात को स्वप्न में अबीमेलेक् के पास आके उस से कहा सुन तो जिस स्त्री को तू ने बुलवा लिया है उस के कारण तू मुर्दा ही ४ है क्योंकि वह सुहागिन है। पर अबीमेलेक् उस के पास न गया था सो उस ने कहा हे प्रभु क्या तू धर्म्मी जाति ५ का भी घात करेगा। क्या उसी ने मुझ से नहीं कहा कि वह मेरी बहिन है और उस स्त्री ने भी आप कहा कि वह मेरा भाई है मैं ने तो अपने मन की खराई और अपने व्यवहार की ६ सच्चाई से यह काम किया। तब परमेश्वर ने उस से स्वप्न में कहा मैं भी जानता हूं कि अपने मन की खराई ही से तू ने यह काम किया है बल्कि मैं ही ने तुझे रोक रक्खा कि तू मेरे बिरुद्ध पाप न करे इसी कारण मैं ने ७ तुझ को उसे छूने नहीं दिया। सो अब उस पुरुष की स्त्री को उसे फेर दे क्योंकि वह नबी है और तेरे लिये प्रार्थना करेगा कि तू जीता रहे पर यदि तू उस को न फेर दे तो जान रख कि तू और तेरे जितने लोग हैं ८ सब निश्चय मर जावेंगे। बिहान को अबीमेलेक् ने तड़के उठकर अपने सब कर्म्मचारियों को बुलवाके उन को ये सब बातें सुनाईं और वे लोग निपट डर गये। तब अबीमेलेक् ने इब्राहीम को ९ बुलवाके उस से कहा तू ने हम से यह क्या किया है और मैं ने तेरा क्या बिगाड़ा था कि तू ने मेरे और मेरे राज्य के ऊपर ऐसा पाप डाल दिया है तू ने मुझ से जो काम किया है सो करने के योग्य न था। फिर अबीमे- १० लेक् ने इब्राहीम से पूछा तू ने ऐसा क्या देखा कि यह काम किया है। इब्राहीम ने कहा मैं ने यह सोचा था ११ कि इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भय न होगा सो ये लोग मेरी इस स्त्री के कारण मेरा घात करेंगे। और १२ सचमुच वह मेरी बहिन है ही वह मेरे पिता की बेटी तो है पर मेरी माता की बेटी नहीं इस लिये वह मेरी स्त्री हो गई। और जब परमेश्वर १३ ने मुझे अपने पिता का घर छोड़के घूमने की आज्ञा दिई तब मैं ने सारा से कहा कि इतनी कृपा तुझे मुझ पर करनी होगी कि मैं और तू जहां जहां जाऊं तहां तहां तू मेरे बिषय में कहना कि यह मेरा भाई है। यह सुन अबीमेलेक् ने भेड़ बकरी १४ गाय बैल और दास दासियां लेके इब्राहीम को दिईं और उस की स्त्री सारा को भी उसे फेर दिया। और १५ अबीमेलेक् ने कहा देख मेरा देश तेरे साम्हने है जहां तुझे भावे तहां बस।

१६ और सारा से उस ने कहा देख मैं ने तेरे भाई को रूपे के हजार टुकड़े दिये हैं सुन तेरे सारे संगियों के साम्हने और और सभों के साम्हने इब्राहीम ही तेरी आंखों का पर्दा बनेगा यह सुनके सारा निरुत्तर १७ रह गई। जानना चाहिये कि यहोवा ने अबीमेलेक् के घर की सब स्त्रियों की कोखों को इब्राहीम की स्त्री सारा के कारण बिल्कुल बन्द किया था पर जब इब्राहीम ने परमेश्वर से प्रार्थना किई तब उस ने अबीमेलेक् और उस की स्त्री और दासियों की उस बला को दूर किया कि वे जनने लगीं।

२१ इस के पीछे यहोवा ने जैसा कहा था तैसा ही सारा की सुधि लेके उस के साथ अपने बचन २ के अनुसार किया। सो सारा इब्राहीम से गर्भवती होके उस के बुढ़ापे में उसी नियत समय पर जो परमेश्वर ने उस ३ से बान्धा था एक पुत्र जनी। और इब्राहीम ने अपने उस पुत्र का नाम जो उत्पन्न हुआ था अर्थात् जिसे सारा ४ जनी थी इस्हाक्[1] रक्खा। और उस ने अपने पुत्र इस्हाक् का आठवें दिन परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार खतना ५ किया। और जब इब्राहीम का पुत्र इस्हाक् उत्पन्न हुआ तब वह एक सौ ६ बरस का था। और सारा ने कहा परमेश्वर ने मुझे हंसमुख कर दिया है जो कोई सुने सो मेरे कारण हंस

(१) अर्थात्. हंसनेहारा.

देगा। फिर उस ने कहा कौन कभी ७ इब्राहीम से कह सकता था कि सारा लड़कों को दूध पिलावेगी पर देखो मैं उस के बुढ़ापे में पुत्र जनी। वह ८ लड़का बढ़ा और उस का दूध छुड़ाया गया और इस्हाक् के दूध छुड़ाने के दिन इब्राहीम ने बड़ी जेवनार किई। तब सारा ने मिस्री हागार् के पुत्र ९ को जिसे वह इब्राहीम का जन्माया जनी थी हंसी करते देखा और १० देखके उस ने इब्राहीम से कहा इस दासी को पुत्र सहित दुर्दुराके निकाल दे क्योंकि इस दासी का पुत्र मेरे पुत्र इस्हाक् के साथ भागी न होवेगा। यह बात इब्राहीम को अपने पुत्र ११ इश्माएल् के कारण बहुत बुरी लगी। परन्तु परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा १२ उस लड़के और अपनी दासी के कारण यह बात तुझे बुरी न लगे पर जो कुछ सारा तुझ से कहे उस के बिषय में उस की बात मान क्योंकि जो तेरा बंश कह-लावेगा सो इस्हाक् ही से चलेगा। हां इस दासी के पुत्र से भी तो मैं एक १३ जाति उपजाऊंगा इस लिये कि वह तेरा ही बंश है। सो इब्राहीम ने १४ बिहान को तड़के उठ रोटी और पानी से भरी हुई चमड़े की एक थैली ले हागार् को देके उस के कन्धे पर रक्खी और लड़के को उसे सोंपके उसे बिदा किया सो वह चली गई और बेर्शेबा के बन में घूमने फिरने लगी। उस के १५

फिरते फिरते थैली का जल चुक गया तब उस ने लड़के को एक झाड़ी के १६ नीचे छोड़ दिया और आप उस से बाण भर के टप्पे पर दूर जाके उस की दृष्टि की ओट में यह कहकर बैठ गई कि मुझ को लड़के की मृत्यु न देखनी पड़े सो वह उस से ओट में बैठी हुई चिल्ला चिल्लाके रोने लगी। १७ तब परमेश्वर ने उस लड़के की सुनी और परमेश्वर के दूत ने स्वर्ग से हागार् को पुकारके कहा हे हागार् तुझे क्या हुआ मत डर क्योंकि जहां तेरा लड़का है तहां से परमेश्वर ने १८ उस की सुनी है। उठ उस लड़के को उठाके अपने हाथ से थांभ ले क्योंकि मैं उस से एक बड़ी जाति उपजाऊंगा। १९ तब परमेश्वर ने उस की आंखें खोल दिईं और उस को एक कूआं देख पड़ा सो उस ने जाकर थैली को जल २० से भरके लड़के को पिला दिया। और परमेश्वर उस लड़के के साथ साथ रहा और वह बड़ा हुआ और बन में २१ रहते रहते धनुर्धारी हो गया। वह पारान् नाम बन में रहा करता था और उस की माता ने उस के लिये मिस्र देश से एक स्त्री मंगवाई।

२२ उन दिनों में अबीमेलेक् और उस का सेनापति पीकोल् इब्राहीम से कहने लगे जो कुछ तू करता है उस में परमेश्वर तेरे संग संग रहता २३ है। सो अब मुझ से यहां परमेश्वर की इस बिषय में किरिया खा कि मैं न तुझ से न तेरे बंश से कभी छल करूंगा पर जैसी प्रीति से तू ने मेरे साथ बर्त्ताव किया है तैसी ही प्रीति मैं तुझ से और इस देश से जहां मैं परदेशी हूं करूंगा। इब्राहीम ने कहा २४ हां मैं ऐसी ही किरिया खाऊंगा। फिर इब्राहीम ने अबीमेलेक् को एक २५ कूएं के विषय में जो उस के दासों ने बरियाई से ले लिया था उलहना दिया। पर अबीमेलेक् ने कहा मैं नहीं २६ जानता कि किस ने यह काम किया और तू ने भी मुझ को न जताया था और न मैं ने आज तक यह सुना था। सो इब्राहीम ने भेड़ बकरी और गाय २७ बैल लेके अबीमेलेक् को दिये और उन दोनों ने बाचा बान्धी। और इब्राहीम २८ ने भेड़ की सात बच्ची अलग कर रक्खीं। तब अबीमेलेक् ने इब्राहीम से पूछा २९ इन सात बच्चियों का जो तू ने अलग कर रक्खी हैं क्या प्रयोजन है। उस ने ३० कहा तू इन सात बच्चियों को मेरे हाथ से ले जिस्तें इस बात की साक्षी होवे कि मैं ने यह कूआं खोदा है। सो उन ३१ दोनों ने जो वहां आपस में किरिया खाई इसी कारण उस स्थान का नाम बेर्शेबा[1] पड़ा। और बेर्शेबा में उन्हों ३२ ने परस्पर बाचा बान्धी तब अबीमेलेक् और उस का सेनापति पीकोल् उठके पलिश्तियों के देश में लौट गये। और ३३

(१) अर्थात् किरिया का कूआं.

इब्राहीम ने बेर्शेबा में झाऊ का एक वृक्ष लगाया और वहां यहोवा जो सनातन ईश्वर है तिस से प्रार्थना ३४ किई। और इब्राहीम पलिश्तियों के देश में परदेशी होके बहुत दिन रहा।

(इब्राहीम के परीक्षा में पड़ने का वर्णन.)

२२ इन बातों के पीछे परमेश्वर इब्राहीम की परीक्षा करने लगा अर्थात् उस से कहा हे इब्राहीम उस ने कहा क्या आज्ञा। २ तब उस ने कहा अपने पुत्र को अर्थात् अपने एकलौते इसहाक् को जिस से तू प्रेम रखता है लेके मोरिय्याह् देश में चला जा और वहां उस को एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊंगा होमबलि करके चढ़ा। ३ यह आज्ञा पाके इब्राहीम ने बिहान को तड़के उठ अपने गदहे पर काठी कसके अपने दो सेवक और अपने पुत्र इस्हाक् को संग लिया और होमबलि के लिये लकड़ी चीर लिई और कूंच करके उस स्थान को चला जिस की चर्चा परमेश्वर ने उस से किई थी। ४ तीसरे दिन इब्राहीम ने आंखें उठाके ५ उस स्थान को दूर से देखा। तब उस ने अपने सेवकों से कहा यहां गदहे के पास ठहरे रहो तो मैं और यह लड़का हम दोनों वहां लों जाकर परमेश्वर को दण्डवत् करके ६ फिर तुम्हारे पास लौट आवेंगे। फिर इब्राहीम ने होमबलि की लकड़ी लेके अपने पुत्र इस्हाक् पर लादी और आग और छूरी को अपने हाथ में लिया सो वे दोनों संग संग चले। तब ७ इस्हाक् ने अपने पिता इब्राहीम से कहा हे मेरे पिता उस ने कहा हे मेरे पुत्र क्या बात है फिर उस ने कहा देख आग और लकड़ी तो हैं पर होमबलि के लिये भेड़ कहां है। इब्राहीम ८ ने कहा हे मेरे पुत्र परमेश्वर आप ही होमबलि की भेड़ का बन्दोबस्त करेगा सो वे दोनों संग संग चले। निदान वे उस स्थान को जिसे परमेश्वर ९ ने उस को बताया था पहुंचे तब इब्राहीम ने वहां बेदी बनाकर लकड़ी को उस पर चुन चुनके रक्खा और अपने पुत्र इस्हाक् को बान्धके बेदी पर की लकड़ी के ऊपर रख दिया। तब इब्राहीम ने छूरी के लेने को १० हाथ बढ़ाया कि अपने पुत्र को बलि करे। पर यहोवा के दूत ने स्वर्ग ११ से उस को पुकारके कहा हे इब्राहीम हे इब्राहीम उस ने कहा क्या आज्ञा। दूत ने कहा उस लड़के पर हाथ १२ मत बढ़ा और न उस से कुछ कर क्योंकि अब मैं जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है क्योंकि तू ने मुझ से अपने पुत्र अर्थात् अपने एकलौते पुत्र को नहीं रख छोड़ा। तब १३ इब्राहीम ने जो आंखें उठाईं तो क्या देखा कि मेरे पीछे एक मेंढ़ा अपने

सींगों से एक झाड़ी में बझा हुआ है सो इब्राहीम ने जाके उस मेंढ़े को लिया और अपने पुत्र की सन्ती १४ होमबलि करके चढ़ाया। और इब्राहीम ने उस स्थान का नाम यहोवा यिरे[1] रक्खा जैसा आज लों भी कहा जाता है कि यहोवा के पहाड़ पर १५ बन्दोबस्त किया जावेगा। फिर यहोवा के दूत ने दूसरी बार स्वर्ग से इब्राहीम १६ को पुकारके कहा यहोवा की यह बाणी है कि मैं ने अपनी ही इस विषय में किरिया खाई है कि तू ने जो यह काम किया है कि अपने पुत्र अर्थात् अपने एकलौते पुत्र को नहीं १७ रख छोड़ा इस कारण मैं निश्चय तुझे आशीष दूंगा और निश्चय तेरे बंश को आकाश के तारागण और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूंगा और तेरा बंश अपने शत्रुओं के नगरों का स्वामी १८ होगा। और पृथिवी की सारी जातियां अपने को तेरे बंश के कारण धन्य मानेंगी यह सब इस लिये होगा कि १९ तू ने मेरी बात मानी है। इस पर इब्राहीम अपने सेवकों के पास लौट गया और वे सब बेर्शेबा को संग संग गये और इब्राहीम बेर्शेबा में रहा किया।

२० इन बातों के पीछे इब्राहीम को यह सन्देश मिला कि मिल्का से तेरे भाई

(१) अर्थात्. यहोवा बन्दोबस्त करेगा.

नाहोर् के सन्तान जन्मे हैं अर्थात् २१ उस का जेठा ऊस् और ऊस् का भाई बूज् और कमूएल् जो अराम् का पिता हुआ फिर केसेद् हजो पिल्दाश् २२ यिद्लाप् और बतूएल्। इसी बतूएल् २३ से रिब्का जन्मी ये आठ इब्राहीम के भाई नाहोर् के बंश में मिल्का के द्वारा उपजे। और उस के २४ रूमा नाम एक उढ़री भी थी सो तेबह् गहम् तहश् और माका को जनी।

(सारा की मृत्यु और अन्तक्रिया का वर्णन.)

२३ फिर सारा एक सौ सत्ताईस १ बरस की अवस्था को पहुंची और सारा की इतनी ही सम्पूर्ण अवस्था हुई। तब वह किर्यतर्बा में मर गई २ यह कनान् देश में है और हेब्रोन् भी कहावता है सो इब्राहीम सारा के लिये रोने पीटने को आया। तब ३ इब्राहीम अपने मुर्दे के पास से उठके हेत्बंशियों से कहने लगा मैं तुम्हारे ४ बीच उपरी और परदेशी मनुष्य हूं सो मुझे अपने बीच में कबरिस्तान के लिये ऐसी भूमि देओ जो मेरी निज हो जावे जिस्तें मैं अपने मुर्दे को गाड़के अपनी आंख की ओट करूं। तब हेत्बंशियों ने इब्राहीम को यह ५ उत्तर दिया कि हे हमारे प्रभु ६ हमारी सुन तू तो हमारे बीच में परमेश्वर की ओर से प्रधान है सो

हमारी कबरें में से जिस के तू चाहे उस में अपने मुर्दे के गाड़ हम में से कोई तुझे अपनी कबर के लेने से न रोकेगा कि तू अपने मुर्दे के उस में ७ गाड़ने न पावे। इतना सुन इब्राहीम उठके खड़ा हुआ और उस देश के लोगों अर्थात् हेत्बंशियों के सन्मुख ८ दण्डवत् करके उन से फिर कहा कि यदि तुम्हारी यह इच्छा होवे कि मैं अपने मुर्दे के गाड़के अपनी आंख की ओट करूं तो मेरी सुनके सोहर् के पुत्र ९ एप्रोन् से मेरे लिये बिनती करो कि वह अपनी मक्पेलावाली गुफा जो उस की भूमि के सिवाने पर है मुझे दे देवे और उस का पूरा दाम लेवे कि वह तुम्हारे बीच कबरिस्तान के लिये मेरी निज १० भूमि हो जावे। एप्रोन् हित्ती भी हेत्-बंशियों के बीच बैठा हुआ था सो उस ने हेत्बंशियों के अर्थात् जितने उस के नगर के फाटक होके भीतर जाते थे उन सभों के सुनते इब्राहीम ११ को उत्तर दिया कि हे मेरे प्रभु सो नहीं मेरी सुन वह भूमि मैं तुझे देता हूं और उस में जो गुफा है सो भी मैं तुझे देता हूं अपने जातिभाइयों के सन्मुख मैं उसे तुझ को देता हूं सो १२ अपने मुर्दे को कबर में रख। यह सुनकर इब्राहीम ने देश के लोगों के १३ साम्हने दण्डवत् किई और उन के साम्हने एप्रोन् से कहा यदि तू ऐसी कृपा करता है तो मेरी सुन उस भूमि का दाम जो मैं देता हूं उसे ले ले तो मैं अपने मुर्दे को वहां गाड़ूंगा। तब १४ एप्रोन् ने इब्राहीम को यह उत्तर दिया कि हे मेरे प्रभु मेरी सुन उस १५ भूमि का दाम तो चार सौ शेकेल् रूपा है पर मेरे और तेरे बीच में यह क्या बस्तु है सो अपने मुर्दे को कबर में रख। तब इब्राहीम ने एप्रोन् की बात १६ मानके उस को उतना रूपा तौल तौलके दिया जितना उस ने हेत्बंशियों के सुनते कहा था अर्थात् चार सौ शेकेल् जो ब्योपारियों में चलते थे। सो एप्रोन् १७ की मम्रे के सन्मुख की मक्पेलावाली भूमि गुफा समेत और उन सब वृक्षों समेत भी जो उस में और उस की चारों ओर के सिवानों में थे हेत्- १८ बंशियों के साम्हने अर्थात् जितने उस के नगर के फाटक होके भीतर जाते थे उन सभों के साम्हने इब्राहीम के अधिकार में पक्की रीति से आ गई। और इस के पीछे इब्राहीम ने अपनी १९ स्त्री सारा को मक्पेला की भूमि की गुफा में जो मम्रे के अर्थात् हेब्रोन् के साम्हने कनान् देश में है मिट्टी दिई। और २० यह भूमि गुफा समेत हेत्बंशियों की ओर से कबरिस्तान के लिये इब्राहीम के अधिकार में पक्की रीति से आ गई।

(इस्हाक् के बिवाह का वर्णन.)

२४ इतने में इब्राहीम बूढ़ा १ बल्कि बहुत पुरनिया हो गया और यहोवा ने सब बातों में उस

२ को आशीष दिई थी। सो एक दिन इब्राहीम ने अपने उस दास से जो उस के सब दासों में से बूढ़ा और उस की सारी सम्पत्ति पर अधिकारी था कहा अपना हाथ मेरी जांघ के नीचे ३ रखके मुझ से स्वर्ग और पृथिवी दोनों के परमेश्वर यहोवा की इस विषय में किरिया खा कि मैं तेरे पुत्र के लिये कनानियों की लड़कियों में से जिन के बीच तू रहनेहारा है ४ किसी को न ले आऊंगा। पर मैं तेरे देश में तेरे ही कुटुम्बियों के पास जाके तेरे पुत्र इस्हाक् के लिये एक ५ स्त्री ले आऊंगा। इतने पर उस दास ने उस से कहा क्या जानिये वह स्त्री इस देश में मेरे पीछे आने न चाहे तो क्या मुझे तेरे पुत्र को उस देश में जहां ६ से तू आया है ले जाना पड़ेगा। इब्राहीम ने उस से कहा चौकस रह कि ७ तू मेरे पुत्र को वहां न ले जावे। स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा जो मुझे मेरे पिता के घर से और मेरी जन्मभूमि से ले आया और जिस ने मुझ से किरिया खाके कहा कि मैं तेरे ही बंश को यह देश देऊंगा सोई अपना दूत तेरे आगे आगे भेजेगा और तू मेरे पुत्र के लिये वहां से एक स्त्री ले ८ आ सकेगा। हां यदि वह स्त्री तेरे पीछे आने न चाहे तो तू मेरी इस किरिया से छूट जावेगा पर जो हो सो हो मेरे पुत्र को वहां न ले जाना।

यह सुनके उस दास ने अपने स्वामी ९ इब्राहीम की जांघ के नीचे अपना हाथ रखके उस से इसी बिषय की किरिया खाई। और उस दास के पास उस के १० स्वामी के सब उत्तम उत्तम पदार्थ जो रहा करते थे सो वह उस के ऊंटों में से दस ऊंट लेके चला और अरम्नहरैम् में नाहोर् के नगर के पास पहुंचके ऊंटों ११ को नगर के बाहर एक कूएं के पास बैठाया वह समय सांझ का था जिस में स्त्रियां जल भरने के लिये निकलती हैं। तब १२ वह कहने लगा हे मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा कृपा करके आज मेरे कार्य्य को सिद्ध कर और मेरे स्वामी इब्राहीम से करुणा का व्यवहार कर। देख मैं जल के इस सोते के पास खड़ा १३ हूं और नगरबासियों की बेटियां जल भरने के लिये निकली आती हैं। सो १४ ऐसा होवे कि जिस कन्या से मैं कहूं कि अपना घड़ा मेरी ओर झुका कि मैं पीऊं और वह कहे कि ले पी ले पीछे मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी सो वही होवे जिसे तू ने अपने दास इस्हाक् के लिये ठहराया होवे सो इस रीति से मैं जान लूंगा कि तू ने मेरे स्वामी से करुणा का व्यवहार किया है। वह कहता ही था कि क्या देखा १५ कि रिब्का जो इब्राहीम के भाई नाहोर् के जन्माये मिल्का के पुत्र बतूएल् की बेटी थी सो कन्धे पर घड़ा लिये हुए निकली आती है। वह कन्या १६

अति सुन्दर और कुमारी भी थी उस ने अब लों किसी पुरुष का मुंह न देखा था इस समय वह सोते के पास उतर गई और अपना घड़ा भरके फिर १७ ऊपर आई। तब वह दास उस से भेंट करने को दौड़ा और कहा अपने घड़े में से तनिक पानी तो मुझे पिला १८ दे। उस ने कहा हे मेरे प्रभु ले पी ले ऐसा कहके उस ने फुर्त्ती से घड़ा उतारकर हाथ में लिये लिये उस को पिला १९ दिया। और जब वह उस को पिला चुकी तब कहा मैं तेरे ऊंटों के लिये भी पानी भरती हूं और जब लों वे पी न चुकें तब लों भरती रहूंगी। २० ऐसा कहके वह फुर्त्ती से अपने घड़े का जल कठौते में उण्डेलके फिर कूएं पर भरने को दौड़ गई और उस के सब ऊंटों के लिये पानी भर दिया। २१ और वह पुरुष उस की ओर चुपचाप अचंभे के साथ ताकता हुआ यह सोचता था कि यहोवा ने मेरी यात्रा २२ को सुफल किया है कि नहीं। जब ऊंट पी चुके तब उस पुरुष ने आध तोले का एक सोने का नत्थ निकालके उस को दिया और दस तोले के सोने के २३ कड़े उस के हाथों में पहिना दिये और पूछा तू किस की बेटी है सो मुझ को बता दे क्या तेरे पिता के घर में हमारे २४ टिकने के लिये स्थान है। उस ने उस को उत्तर दिया कि मैं तो नाहोर् के जन्माये मिल्का के पुत्र बतूएल् की बेटी हूं। २५ फिर उस ने उस से कहा हमारे यहां तो पुआल और चारा बहुत है और टिकने के लिये स्थान भी है। २६ इतना सुनकर उस पुरुष ने सिर झुकाकर यहोवा को दण्डवत् करके २७ कहा धन्य है मेरे स्वामी इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा कि उस ने अपनी करुणा और सच्चाई को मेरे स्वामी पर से हटा नहीं लिया पर यहोवा ने मुझ को ठीक मार्ग से मेरे स्वामी के भाइयों के घर पर पहुंचा दिया। २८ तब उस कन्या ने दौड़के अपनी माता के घर के लोगों को यह सारा वृत्तान्त कह सुनाया। २९ तब लाबान् जो रिब्का का भाई था सो बाहर सोते के निकट उस पुरुष के पास दौड़ा। ३० और जब उस ने वह नत्थ और अपनी बहिन रिब्का के हाथों में वे कड़े देखे और उस की यह बात भी सुनी कि उस पुरुष ने मुझ से ऐसी ऐसी बातें कहीं तब उस पुरुष के पास गया वह तो सोते के निकट ऊंटों के पास खड़ा था। ३१ और उस ने कहा हे यहोवा की ओर से धन्य पुरुष भीतर आ तू क्यों बाहर खड़ा है मैं ने तो घर और ऊंटों के लिये भी स्थान लैस किया है। ३२ सो वह पुरुष घर में आया और लाबान् ने ऊंटों की काठियां खोलके पुआल और चारा दिया और उस के और उस के संगी जनों के पांव धोने को जल दिया।

३३ तब उस ने उस के आगे जलपान के लिये कुछ रक्खा पर उस ने कहा मैं जब लों अपना प्रयोजन न कह दूं तब लों न खाऊंगा लाबान् ने कहा कह ३४ दे। तब उस ने कहा मैं इब्राहीम का ३५ दास हूं। और यहोवा ने मेरे स्वामी को बड़ी आशीष दिई है सो वह बढ़ गया है और उस ने उस को भेड़ बकरी गाय बैल सोना रूपा दास दासियां ऊंट और गदहे दिये हैं। ३६ और मेरे स्वामी की स्त्री सारा उस का जन्माया बुढ़ापे में एक पुत्र जनी और इसी पुत्र को इब्राहीम ने अपना ३७ सर्वस्व दिया है। और मेरे स्वामी ने मुझ से किरिया खिलाके यह कहला लिया कि मैं तेरे पुत्र के लिये कनानियों की लड़कियों में से जिन के देश में तू ३८ रहता है कोई स्त्री न ले आऊंगा पर मैं तेरे पिता के घर और कुल के लोगों के पास जाके तेरे पुत्र के लिये एक स्त्री ३९ ले आऊंगा। तब मैं ने अपने स्वामी से कहा क्या जानिये वह स्त्री मेरे पीछे ४० न आवे। तब उस ने मुझ से कहा यहोवा जिस को अपने साम्हने जानके मैं चलता आया हूं सो तेरे संग अपने दूत को भेजके तेरी यात्रा को सुफल करेगा सो तू मेरे कुल और मेरे पिता के घराने में से मेरे पुत्र के लिये एक स्त्री ले ४१ आ सकेगा। तू तब ही मेरी इस किरिया से छूटेगा जब मेरे कुल के लोगों के पास पहुंचेगा और वे तुझे कोई स्त्री न देवें तब तो तू मेरी किरिया से छूट सकता है। सो मैं ४२ आज उस सोते के निकट आके कहने लगा हे मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा यदि तू मेरी इस यात्रा को सुफल करता है तो देख मैं जल ४३ के इस सोते के निकट खड़ा हूं सो ऐसा होवे कि जो कुमारी जल भरने के लिये निकल आवे और मैं उस से कहूं अपने घड़े में से मुझे थोड़ा पानी पिला और वह मुझ से कहे तू तो ४४ पी ही ले और मैं तेरे ऊंटों के पीने के लिये भी भरूंगी सो वही स्त्री होवे जिस को तू ने हे यहोवा मेरे स्वामी के पुत्र के लिये ठहराया हो। मैं मन ४५ ही मन यह कही रहा था कि क्या देखा कि रिब्का कन्धे पर घड़ा लिये हुए निकली आती है सो वह सोते के पास उतरके भरने लगी और मैं ने उस से कहा कृपा करके मुझे पिला दे। तब उस ने फुर्त्ती से अपने घड़े ४६ को कन्धे पर से उतारके कहा ले पी ले पीछे मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी सो मैं ने पिया और उस ने ऊंटों को भी पिला दिया। तब मैं ने उस से ४७ पूछा कि तू किस की बेटी है और उस ने कहा मैं तो नाहोर् के जन्माये मिल्का के पुत्र बतूएल् की बेटी हूं सो मैं ने उस की नाक में नत्थ और उस के हाथों में कड़े पहिना दिये। फिर ४८ मैं ने सिर झुकाके यहोवा को दण्डवत्

किया और अपने स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा क्योंकि उस ने मुझे ठीक मार्ग से पहुंचाया जिस्तें मैं अपने स्वामी के पुत्र के लिये उस की भतीजी को ले जाऊं। ४९ सो अब यदि तुम मेरे स्वामी के साथ कृपा और सच्चाई का व्यवहार करने चाहते हो तो मुझ से कहो और यदि नहीं चाहते तौभी मुझ से कह देओ जिस्तें मैं जान लूं कि किधर फिरना चाहिये दहिनी ओर अथवा बाईं। ५० यह सुनके लाबान् और बतूएल् ने उत्तर दिया यह बात यहोवा ही की ओर से हुई है सो हम लोग तुझ से न तो भला कह सकते हैं न बुरा। ५१ देख रिब्का तेरे साम्हने है उस को ले जा और वह यहोवा के कहे के अनुसार तेरे स्वामी के पुत्र की स्त्री हो जावे। ५२ जब इब्राहीम के दास ने उन का यह बचन सुना तब उस ने भूमि पर गिरके यहोवा को दण्डवत् किया। ५३ फिर उस दास ने सोने और रूपे के गहने और बस्त्र निकालके रिब्का को दिये और उस के भाई और माता को भी उस ने अनमोल अनमोल बस्तें दिईं। ५४ तब वह अपने संगी जनों समेत खाने पीने लगा और रात वहीं बिताई और जब तड़के उठे तब इब्राहीम के दास ने कहा मुझ को अपने स्वामी के पास जाने के लिये बिदा करो। ५५ पर रिब्का के भाई और माता ने कहा कन्या को हमारे पास कुछ दिन अर्थात् कम से कम दस दिन तो रहने दे फिर उस के पीछे वह चली जावेगी। ५६ पर उस ने उन से कहा यहोवा ने जो मेरी यात्रा को सुफल किया है सो तुम मुझे मत रोको अब मुझे बिदा कर दो कि मैं अपने स्वामी के पास जाऊं। ५७ उन्हों ने कहा हम कन्या को बुलाके पूछेंगे कि वह क्या कहती है। ५८ सो उन्हों ने रिब्का को बुलाके उस से पूछा क्या तू इस मनुष्य के संग जावेगी उस ने कहा हां मैं जाऊंगी। ५९ तब उन्हों ने अपनी बहिन रिब्का और उस की धाई और इब्राहीम के दास और उस के जनों को बिदा किया। ६० और उन्हों ने रिब्का को आशीर्बाद देके कहा तू तो हमारी बहिन है तू लाखों की आदि माता होवे और तेरा बंश अपने बैरियों के नगरों का स्वामी होवे। ६१ इस पर रिब्का अपनी सहेलियों समेत चली और ऊंट पर चढ़के उस पुरुष के पीछे हो लिई सो वह दास रिब्का को साथ लेके चल दिया। ६२ और इस्हाक् जो दक्षिण देश में रहता था सो लहै-रोई नाम कूएं के मार्ग से होके उसी दिन चला आता था। ६३ इस्हाक् तो सांझ के समय चौगान में ध्यान करने के लिये निकला था तब उस ने जो आंखें उठाईं तो क्या देखा कि ऊंट चले आते हैं। ६४ उसी समय रिब्का ने

भी जो आंखें उठाईं तो इस्हाक् को देखा और देखते ही ऊंट पर से उतर पड़ी । ६५ तब उस ने उस दास से पूछा यह जो चैागान पर हम से मिलने को चला आता है सो कौन सा पुरुष है दास ने कहा वह तो मेरा स्वामी है इतना सुन रिब्का ने बुर्का लेके अपने मुंह ६६ को ढांप लिया । तब उस दास ने इस्हाक् से अपना सारा वृत्तान्त बर्णन ६७ किया । इस के उपरान्त इस्हाक् रिब्का को अपनी माता सारा के तम्बू में ले आया और उस को ब्याहके उस से प्रेम किया इस प्रकार इस्हाक् को माता की मृत्यु के शोक दूर होने से शान्ति हुई ।

(इब्राहीम के उत्तर चरित्र और मृत्यु का बर्णन.)

२५ और इब्राहीम ने फिर एक स्त्री किई जिस का नाम कतूरा २ था । और वह उस के जन्माये जिम्रान् योक्षान् मदान् मिद्यान् यिश्बाक् और ३ शूह् को जनी । और योक्षान् ने शबा और ददान् को जन्माया और ददान् के बंश में अश्शूरी लतूशी और लुम्मी ४ लोग उपजे । और मिद्यान् के पुत्र एपा एपेर् हनोक् अबीदा और एल्दा हुए ये सब कतूरा के बंश में उत्पन्न ५ हुए । पर इब्राहीम ने अपना सर्वस्व ६ इस्हाक् ही को दिया । और उस की जो उढ़रियां थीं उन के पुत्रों में से उस ने किसी को कुछ और किसी को कुछ देके अपने जीते जी अपने पुत्र इस्हाक् के पास से पूरब ओर अर्थात् पूरबी देश में भेज दिया । और इब्रा- ७ हीम की सारी अवस्था एक सौ पच-हत्तर बरस की हुई । निदान इब्राहीम ८ का दीर्घायु होने पर बल्कि पूरे बुढ़ापे की अवस्था में प्राण छूट गया और वह अपने लोगों में जा मिला । और उस ९ के पुत्र इस्हाक् और इश्माएल् जो थे उन्हों ने उस को हित्ती सोहर् के पुत्र एप्रोन् की मस्रे के सन्मुखवाली भूमि में मक्पेला की गुफा में मिट्टी दिई । अर्थात् जो भूमि इब्राहीम ने हेत्- १० बंशियों से मोल लिई थी उसी में इब्रा-हीम और उस की स्त्री सारा दोनों प्राणियों को मिट्टी दिई गई । और ११ इब्राहीम के मरने के पीछे परमेश्वर ने उस के पुत्र इस्हाक् को आशीष दिई इस्हाक् तो लहैरोई के कूएं के पास रहता था ।

(इश्माएल् की बंशावली.)

इब्राहीम का पुत्र इश्माएल् जिस १२ को सारा की लौंडी मिस्री हागार् इब्राहीम के जन्माने से जनी थी तिस की यह बंशावली है । इश्माएल् के १३ पुत्रों के नाम और बंशावली यह है अर्थात् इश्माएल् का जेठा पुत्र नबायोत् फिर केदार् अद्बेल् मिब्साम् मिश्मा १४ दूमा मस्सा हदर् तेमा यतूर् नापीश् १५ और केदमा । इश्माएल् के पुत्र ये ही १६ थे और इन्हीं के नाम के अनुसार

इन के गांवों और छावनियों के नाम भी पड़े और ये ही बारह अपनी अपनी प्रजा के प्रधान हुए। १७ और इश्माएल् की सारी अवस्था एक सौ सैंतीस बरस की हुई तब उस का प्राण छूट गया और वह अपने लोगों में जा मिला। १८ और उस के बंश हवीला से शूर् लों जो मिस्र के सन्मुख अश्शूर् के मार्ग में है बस गये और उन का भाग उन के सब भाई बन्धुओं के सन्मुख पड़ा।

(इस्हाक् के पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन.)

१९ फिर इब्राहीम के पुत्र इस्हाक् की बंशावली यह है इब्राहीम ने इस्हाक् को जन्माया। २० और इस्हाक् ने चालीस बरस का होके रिब्का को जो पद्दन-राम् के बासी अरामी बतूएल् की बेटी और अरामी लाबान् की बहिन थी ब्याह लिया। २१ फिर उस की स्त्री जो बांझ थी इस से उस ने उस के निमित्त यहोवा से बिनती किई और यहोवा ने उस की बिनती सुनी सो उस की स्त्री रिब्का गर्भवती हुई। २२ और लड़के उस के गर्भ में आपस में लिपटके एक दूसरे को मारने लगे तब उस ने कहा मेरी जो ऐसी ही दशा रहेगी तो मैं क्यों जीती रहूंगी और वह यहोवा की इच्छा पूछने को गई। २३ तब यहोवा ने उस से कहा

तेरे गर्भ में दो जातियां हैं
और तेरी कोख से निकलते ही
मनुष्यों के दो समुदाय अलग
अलग होवेंगे
और एक समुदाय दूसरे समुदाय
से अधिक सामर्थी होवेगा
और बड़का बेटा लुटके के
अधीन होवेगा।

२४ और जब उस के जनने का समय आया तब क्या प्रगट हुआ कि उस के गर्भ में जुड़ेरे बालक हैं। २५ और पहिला जो निकला सो लाल निकला और उस का सारा शरीर कम्बल के समान रोंआर था सो लोगों ने उस का नाम एसाव्[1] रक्खा। २६ और पीछे उस का भाई अपने हाथ से एसाव् की एड़ी पकड़े हुए निकला और इस्हाक् ने उस का नाम याकूब[2] रक्खा और जब रिब्का इन को जनी तब इस्हाक् साठ बरस का हुआ था। २७ फिर लड़के बढ़ने लगे और एसाव् बनबासी होके चतुर अहेरी हो गया पर याकूब सीधा मनुष्य था और तम्बुओं में रहा करता था। २८ और इस्हाक् जो एसाव् के अहेर का मांस खाया करता था इस लिये वह उस से प्रीति रखता था पर रिब्का याकूब से प्रीति रखती थी। २९ एक दिन की बात है कि याकूब भोजन के लिये कुछ सिझा रहा था कि एसाव् बन से थका हुआ आया। ३० तब एसाव् ने याकूब से कहा दया करके वह जो

(१) अर्थात्, रोंआर.
(२) अर्थात्, अड़ंगा मारनेहारा.

लाल बस्तु है उस लाल बस्तु में से कुछ खिलाके मेरा पेट भर दे क्योंकि मैं थका हूं इस कारण उस का नाम
३१ एदोम्[1] भी पड़ा । पर याकूब ने कहा अपना पहिलौठे का हक्क आज मेरे
३२ हाथ बेंच दे तो मैं दूंगा । एसाव् ने कहा देख मैं तो अभी मरने पर हूं तो पहिलौठे के हक्क से मेरा क्या लाभ
३३ होगा । याकूब ने कहा तो अभी मुझ से किरिया खा तब उस ने उस से किरिया खाई इस रीति उस ने अपना पहिलौठे का हक्क याकूब के हाथ बेंच
३४ डाला । तब याकूब ने एसाव् को रोटी और सिझाई हुई मसूर की दाल दिई और उस ने खाया पिया तब वह उठके चला गया यों एसाव् ने अपने पहिलौठे का हक्क तुच्छ जाना ।

(इस्हाक् का वृत्तान्त.)

२६ फिर उस देश में अकाल पड़ा सो उस पहिले अकाल से भिन्न था जो इब्राहीम के दिनों में पड़ा था सो इस्हाक् गरार् को पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक् के पास गया ।
२ तब यहोवा ने उस को दर्शन देके कहा मिस्र में मत जा पर जो देश मैं तुझे
३ बताऊं उसी में रह । अर्थात् इसी देश में परदेशी होके रह तो मैं तेरे संग संग रहूंगा और तुझे आशीष दूंगा और ये सब देश मैं तुझ को और तेरे बंश को देऊंगा और जो किरिया मैं

(१) अर्थात्. लाल.

ने तेरे पिता इब्राहीम से खाई थी उसे
४ मैं पूरी करूंगा । और मैं तेरे बंश को आकाश के तारागण के समान बढ़ाऊंगा और तेरे बंश को ये सब देश देऊंगा और पृथिवी की सारी जातियां तेरे ही बंश के कारण अपने को धन्य
५ मानेंगी । यह इस के पलटे में होगा कि इब्राहीम ने मेरी मानी और जो काम मैं ने उसे सौंपा था उस को और मेरी आज्ञाओं विधियों और व्यवस्था
६ को पूरा किया । यह सुनके इस्हाक्
७ गरार् में रह गया । जब उस स्थान के लोग उस की स्त्री के विषय में पूछते तब वह कहता था यह तो मेरी बहिन है क्योंकि वह यह सोचके उस को अपनी स्त्री कहते डरता था कि क्या जाने यहां के लोग रिब्का के कारण मुझ को मार डालें क्योंकि यह सुन्दरी
८ है । और जब उस को वहां रहते बहुत दिन बीत गये तब एक दिन पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक् ने खिड़की में से झांका तो क्या देखा कि इस्हाक् अपनी स्त्री रिब्का के
९ साथ क्रीड़ा कर रहा है । यह देखके अबीमेलेक् ने इस्हाक् को बुलवाके कहा देख वह तो निश्चय तेरी स्त्री है फिर तू ने क्योंकर उस को अपनी बहिन कहा इस्हाक् ने उत्तर दिया कि मैं ने कहा ऐसा न होवे कि उस के कारण
१० मेरी मृत्यु हो । तब अबीमेलेक् ने कहा तू ने हम से यह क्या किया था यदि

प्रजा में से कोई तेरी स्त्री के साथ कुकर्म्म करता तो कुछ आश्चर्य्य न था और इस प्रकार से तू हम को पाप में फंसाता। ११ सो अबीमेलेक् ने अपनी सारी प्रजा को यह आज्ञा दिई कि जो कोई इस पुरुष को अथवा उस की स्त्री को छूवेगा सो निश्चय मार डाला जावेगा। १२ फिर इस्हाक् ने उस देश में जोता बोया और उसी बरस में सौ गुणा फल पाया और यहोवा ने उस को आशीष दिई। १३ सो वह पुरुष बढ़ा और दिन दिन उस की बढ़ती होती चली गई यहां लों कि वह अति महान् हो गया। १४ अर्थात् उस के भेड़ बकरी गाय बैल और बहुत सी दास दासियां भी हुईं यह देखके पलिश्ती लोग उस से डाह १५ करने लगे। सो जितने कूओं को उस के पिता इब्राहीम के दासों ने इब्राहीम के जीते जी खोदा था उन को पलिश्तियों ने मिट्टी से भर दिया। १६ तब अबीमेलेक् ने इस्हाक् से कहा हमारे पास से चला जा क्योंकि तू हम १७ से बहुत सामर्थी हो गया है। सो इस्हाक् वहां से चला गया और गरार् के नाले में अपना तम्बू खड़ा करके १८ वहां रहने लगा। तब जो कूएं उस के पिता इब्राहीम के दिनों में खोदे गये थे और इब्राहीम के मरने के पीछे पलिश्तियों से भर दिये गये थे उन को इस्हाक् ने फिर से खुदवाया और उन के वे ही नाम रक्खे जो उस के पिता ने रक्खे थे। १९ फिर इस्हाक् के दासों को उसी नाले में खोदते खोदते बहते जल का एक सोता मिला। २० तब गरार् के चरवाहों ने इस्हाक् के चरवाहों से झगड़ा करके कहा कि यह जल हमारा ही है सो उस ने उस कूएं का नाम एसेक्[1] रक्खा इस लिये कि वे उस से झगड़े थे। २१ फिर इन्हों ने दूसरा कूआं खोदा और उन्हों ने उस के लिये भी झगड़ा किया सो उस ने उस का नाम सित्ना[2] रक्खा। २२ तब उस ने वहां से कूंच करके एक और कूआं खुदवाया और उस के लिये तो उन्हों ने झगड़ा न किया सो उस ने उस का नाम यह कहके रहोबोत्[3] रक्खा कि अब तो यहोवा ने हमारे निर्बाह के लिये बहुत स्थान दिया है और हम इस देश में फूलें फलेंगे। २३ तब वह वहां से बेर्शेबा को गया। २४ और उसी दिन यहोवा ने रात को उसे दर्शन देके कहा मैं तेरे पिता इब्राहीम का परमेश्वर हूं मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूं और अपने दास इब्राहीम की खातिर तुझे आशीष दूंगा और तेरा बंश बढ़ाऊंगा। २५ सो उस ने वहां एक बेदी बनाके यहोवा से प्रार्थना किई और वहां अपना तम्बू खड़ा किया और वहां इस्हाक् के दासों ने एक कूआं खोदा। २६ फिर अबीमेलेक् अपने मित्र

(१) अर्थात्. झगड़ा. (२) अर्थात्. बिरोध.
(३) अर्थात्. चौड़ा स्थान.

अहुज्जत् और अपने सेनापति पीकोल् को संग लेकर गरार् से उस के पास गया। २७ उन को देखके इस्हाक् ने उन से कहा तुम ने तो मुझ से बैर करके मुझ को अपने बीच से निकाल दिया सो अब क्यों मेरे पास आये हो। २८ उन्हों ने कहा हम ने तो प्रत्यक्ष देखा है कि यहोवा तेरे संग संग रहता है सो हम ने कहा हमारे बीच में अर्थात् हमारे और तेरे बीच में किरिया खाई जावे और हम आपस में बाचा बान्धें। २९ अर्थात् जैसे हम ने तुझे नहीं छूआ बल्कि तेरे साथ निरी भलाई ही किई और तुझ को कुशल क्षेम से बिदा किया इस के अनुसार तू भी हम से कुछ बुराई न करना क्योंकि तू तो यहोवा की ओर से धन्य है। ३० यह सुनके उस ने उन की जेवनार किई और उन्हों ने खाया पिया। ३१ और बिहान को उन्हों ने तड़के उठके आपस में किरिया खाई तब इस्हाक् ने उन को बिदा किया और वे कुशल क्षेम से उस के पास से चले गये। ३२ और उसी दिन इस्हाक् के दासों ने आकर अपने उस खोदे हुए कूएं का वृत्तान्त सुनाके कहा कि हम को जल का एक सोता मिला है। ३३ तब उस ने उस का नाम शिबा[1] रक्खा इस कारण उस नगर का नाम बेर्शेबा पड़ा और आज लों भी वही नाम प्रसिद्ध है।

(१) अर्थात्. किरिया.

३४ जब एसाव् चालीस बरस का हुआ तब उस ने हित्ती बेरी की बेटी यहूदीत् और हित्ती एलोन् की बेटी बाशमत् को ब्याह लिया। ३५ और इन स्त्रियों के कारण इस्हाक् और रिब्का के मन को खेद हुआ।

(याकूब और एसाव् को आशीर्बाद मिलने का वर्णन.)

२७ १ फिर जब इस्हाक् बूढ़ा हो गया और उस की आंखें ऐसी धुंधली पड़ गईं कि उस को सूझता न था तब उस ने एक दिन अपने जेठे पुत्र एसाव् को बुलाके कहा हे मेरे पुत्र उस ने कहा क्या आज्ञा। २ उस ने कहा देख मैं तो बूढ़ा हो गया हूं और नहीं जानता कि मेरी मृत्यु का दिन कब होवे। ३ सो अब तू अपने हथियार अर्थात् अपने बाणों का तर्कश और धनुष लेके बन में जा और मेरे लिये अहेर कर ले आ। ४ और मेरी रुचि के अनुसार स्वादिष्ठ भोजन बनाके मेरे पास ले आ जिस्तें मैं उसे खाके मरने से पहिले तुझे जी से आशीर्बाद देऊं। ५ सो एसाव् अहेर करने को बन में गया। जब इस्हाक् एसाव् से यह बात कहता था तब रिब्का सुन रही थी। ६ सो उस ने अपने पुत्र याकूब से कहा सुन मैं ने तेरे पिता को तेरे भाई एसाव् से यह कहते सुना कि ७ तू मेरे लिये अहेर करके उस का स्वादिष्ठ

भोजन बना कि मैं उसे खाके तुझे यहोवा के आगे मरने से पहिले ८ आशीर्बाद देऊं। सो अब हे मेरे पुत्र मेरी सुन और मैं जो आज्ञा देऊं उस ९ के अनुसार कर। भेड़ बकरियों के पास जाके बकरियों के दो अच्छे अच्छे बच्चे ले आ और मैं तेरे पिता के लिये उस की रुचि के अनुसार उन के मांस १० का स्वादिष्ठ भोजन बनाऊंगी। तब तू उस को अपने पिता के पास ले जाना कि वह उसे खाके मरने से पहिले तुझ ११ को आशीर्बाद देवे। इतना सुनके याकूब ने अपनी माता रिब्का से कहा देख मेरा भाई एसाव् जो है सो रोंआर पुरुष है और मैं रोमहीन १२ पुरुष हूं। क्या जानिये मेरा पिता मुझे टटोलने लगे तो मैं उस के लेखे में ठग ठहरूंगा और आशीष के बदले स्राप १३ ही पाने का कारण होऊंगा। उस की माता ने उस से कहा हे मेरे पुत्र तेरा स्राप मुझी पर पड़े तू केवल मेरी सुन और जाके वे बच्चे मेरे पास ले आ। १४ सो याकूब जाके उन को अपनी माता के पास ले आया और माता ने उस के पिता की रुचि के अनुसार स्वादिष्ठ १५ भोजन बना दिया। तब रिब्का ने अपने पहिलौठे पुत्र एसाव् के सुन्दर बस्त्र जो उस के पास घर में थे लेके अपने लहुरे पुत्र याकूब को पहिना १६ दिये और बकरियों के बच्चों की खालों को उस के हाथों में और उस के चिकने

गले में लपेट दिया और वह स्वादिष्ठ १७ भोजन और अपनी बनाई हुई रोटी भी अपने पुत्र याकूब के हाथ में दिई। तब उस ने अपने पिता के पास आके १८ कहा हे मेरे पिता उस ने कहा क्या बात है हे मेरे पुत्र तू कौन है। याकूब १९ ने अपने पिता से कहा मैं तो तेरा जेठा पुत्र एसाव् हूं जैसा तू ने मुझ से कहा था वैसा ही मैं ने किया है सो उठके बैठ और मेरे अहेर के मांस में से खा जिस्तें तू जी से मुझे आशीर्बाद देवे। पर इस्हाक् ने अपने पुत्र से २० कहा हे मेरे पुत्र इस का क्या कारण है कि वह तुझे ऐसे झट मिल गया उस ने उत्तर दिया यह कि तेरे परमेश्वर यहोवा ने उस को मेरे साम्हने कर दिया। फिर इस्हाक् ने याकूब २१ से कहा हे मेरे पुत्र निकट आ तो मैं तुझे टटोलके जानूं कि तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव् है वा नहीं। सो याकूब २२ अपने पिता इस्हाक् के निकट गया और उस ने उस को टटोलके कहा बोल तो याकूब का सा है पर हाथ एसाव् ही के से जान पड़ते हैं। सो २३ वह उस को न चीन्ह सका क्योंकि उस के हाथ उस के भाई एसाव् के हाथों के समान रोंआर थे सो उस ने उस को आशीर्बाद दिया। पर पहिले २४ उस ने पूछा क्या तू सचमुच मेरा पुत्र एसाव् ही है उस ने कहा हां मैं हूं। तब उस ने कहा उस को मेरे निकट २५

ले आ कि मैं तुझ अपने पुत्र के अहेर के मांस में से खाके तुझे जी से आशीर्बाद देऊं सो वह उस को उस के निकट ले आया और उस ने खाया और वह उस के पास दाखमधु भी लाया और २६ उस ने पिया। तब उस के पिता इस्हाक् ने उस से कहा हे मेरे पुत्र निकट २७ आके मुझे चूम। उस ने निकट जाके उस को चूमा और उस ने उस के बस्त्रों का सुगन्ध सूंघके उस को आशीर्बाद दिया और कहा

सुन मेरे पुत्र का सुगन्ध
ऐसे खेत का सा है जिस पर यहोवा
　　ने आशीष दिई हो।
२८ सो परमेश्वर तुझे आकाश से ओस
और भूमि की उत्तम से उत्तम उपज
और बहुत सा अनाज और नया
　　दाखमधु देवे।
२९ भिन्न भिन्न समुदाय के लोग तेरे
　　अधीन होवें
और जातियां तुझे दण्डवत् करें
तू अपने भाइयों का स्वामी होवे
और तेरी माता के पुत्र तुझे दण्ड-
　　वत करें
जो तुझे स्राप देवें सो आप ही
　　स्रापित होवें
और जो तुझे आशीर्बाद दें सो
　　आशीष पावें।

३० इस्हाक् याकूब को आशीर्बाद दे चुका और याकूब अपने पिता इस्हाक् के साम्हने से निकलता ही था कि एसाव् अहेर लेके आ पहुंचा। ३१ और वह भी स्वादिष्ठ भोजन बनाके अपने पिता के पास ले आया और उस से कहा हे मेरे पिता उठके अपने पुत्र के अहेर का मांस खा जिस्तें तू मुझे जी से आशीर्बाद देवे। ३२ पर उस के पिता इस्हाक् ने उस से पूछा तू कौन है उस ने कहा मैं तो तेरा जेठा पुत्र एसाव् हूं। ३३ इतना सुनके इस्हाक् ने अत्यन्त थरथर कांपते हुए कहा फिर वह कौन था जो अहेर करके मेरे पास ले आया था और मैं ने तेरे आने से पहिले सब कुछ खा लिया और उस को आशीर्बाद दिया बल्कि उस को आशीष लगेगी भी। ३४ अपने पिता की यह बात सुनते ही एसाव् ने अत्यन्त ऊंचे और दुःख भरे स्वर से चिल्लाके अपने पिता से कहा हे मेरे पिता मुझ को भी आशीर्बाद दे। ३५ उस ने कहा तेरे भाई ने आके धूर्त्तता किई और तेरे विषय के आशीर्बाद को लेके चला गया। ३६ उस ने कहा क्या उस का नाम याकूब यथार्थ ही नहीं रक्खा गया उस ने तो मुझे दो बार अड़ंगा मारा मेरे पहिलौठे का हक्क तो उस ने ले ही लिया था और अब देख उस ने मेरे विषय का आशीर्बाद भी ले लिया फिर उस ने कहा क्या तू ने मेरे लिये भी कोई आशीर्बाद नहीं सोच रक्खा। ३७ पर इस्हाक् ने एसाव् को उत्तर देके कहा देख मैं ने तो उस को तेरा स्वामी

और उस के सब भाइयों को उस के अधीन कर दिया और अनाज और नया दाखमधु देके उस को पुष्ट किया सो अब हे मेरे पुत्र मैं तेरे लिये क्या
३८ करूं। पर एसाव् ने अपने पिता से कहा हे मेरे पिता क्या तू एक ही को आशीर्बाद देने जानता है हे मेरे पिता मुझ को भी आशीर्बाद दे यों
३९ कहके एसाव् फूट फूटके रोया। यह देखकर उस के पिता इस्हाक् ने उस से कहा

सुन तेरा निवास उपजाऊ भूमि पर होवे
और ऊपर से आकाश की ओस उस पर पड़े।
४० और तू अपनी तलवार के बल से जीवे और अपने भाई के अधीन होवे
पर जब तू उस के जूए को उछाल दे
तब उस को अपने कन्धे पर से तोड़ भी फेंके।

४१ और एसाव् ने याकूब से उस आशीर्बाद के कारण जो उस के पिता ने उस को दिया था बैर रक्खा और एसाव् ने अपने मन में ठाना कि मेरे पिता के अन्तकाल का दिन निकट है जब वह आवेगा तब मैं अपने भाई याकूब को
४२ घात करूंगा। सो रिब्का को अपने पहिलौठे पुत्र की यह बातें सुनने में आईं तब उस ने अपने लहुरे पुत्र याकूब को बुलवा भेजा और उस से कहा सुन तेरा भाई एसाव् तुझे घात करने का बिचार करके अपने मन को धीरज
४३ दे रहा है। सो अब हे मेरे पुत्र मेरी सुन और हारान् को मेरे भाई लाबान्
४४ के पास भाग जा। और थोड़े दिन लों अर्थात् जब लों तेरे भाई का क्रोध न उतरे तब लों उसी के पास रहना।
४५ सो जब तेरे भाई का क्रोध तुझ पर से उतरे और जो काम तू ने उस से किया है उस को वह भूल जावे तब मैं तुझे वहां से बुलवा भेजूंगी ऐसा क्यों हो कि एक ही दिन में तुम दोनों से मुझे हाथ धोना पड़े।

४६ फिर रिब्का ने इस्हाक् से कहा हेत्बंशी लड़कियों के कारण मैं अपने प्राण से घिन करती हूं यदि ऐसी हेत्बंशी लड़कियों में से जैसी ये देशी लड़कियां हैं याकूब भी एक को कहीं ब्याह लेवे तो मेरे जीवन में क्या लाभ होगा।

२८

१ यह सुनकर इस्हाक् ने याकूब को बुलाके आशीर्बाद दिया और उस को आज्ञा दिई कि तू कनानी लड़कियों में से किसी को
२ न ब्याह लेना। पद्दनराम् में अपने नाना बतूएल् के घर जाके वहां अपने मामा लाबान् की बेटियों में से एक
३ को ब्याह लेना। और सर्बशक्तिमान् ईश्वर तुझे आशीष देवे और फुलाय फलाके बढ़ावे और तू जातियों की
४ मण्डली का मूल होवे। और वह

तुझे और तेरे बंश को भी इब्राहीम की सी आशीष देवे जिस्तें तू यह देश जिस में परदेशी होके रहता है और जिसे परमेश्वर ने इब्राहीम को दिया ५ था तिस का स्वामी हो जावे। सो इस्हाक् ने याकूब को बिदा किया और वह पद्दनराम् को अरामी बतूएल् के पुत्र लाबान् के पास चला गया जो याकूब और एसाव् की माता रिब्का ६ का भाई था। जब इस्हाक् ने याकूब को आशीर्बाद देके पद्दनराम् भेज दिया जिस्तें वह वहीं से स्त्री ब्याह लावे और उस को आशीर्बाद देने के समय उस ने यह आज्ञा भी दिई कि तू कनानी लड़कियों में से किसी को ७ ब्याह न लेना और याकूब माता पिता की मानके पद्दनराम् को चला ८ गया तब एसाव् यह सब देखके और यह भी सोचके कि कनानी लड़कियां मेरे पिता इस्हाक् को बुरी लगती ९ हैं इब्राहीम के पुत्र इश्माएल् के पास गया और उसी इश्माएल् की बेटी महलत् को जो नबायोत् की बहिन थी ब्याहके अपनी स्त्रियों में मिला लिया।

(याकूब के परदेश जाने का वर्णन.)

१० सो याकूब बेर्शेबा से निकलके ११ हारान् की ओर चला। और किसी एक स्थान में पहुंचके उस ने वहीं रात बिताने का बिचार किया क्योंकि सूर्य्य अस्त हो गया था सो उस ने उस स्थान के पत्थरों में से एक पत्थर ले उसे अपना उसीसा बनाके रक्खा और उसी स्थान में सो गया। तब उस ने स्वप्न १२ में क्या देखा कि एक सीढ़ी पृथिवी पर खड़ी है और उस का सिरा स्वर्ग लों पहुंचा है और फिर क्या देखा कि परमेश्वर के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं। फिर क्या देखा कि यहोवा १३ उस के ऊपर खड़ा होके कहता है कि मैं तेरे दादा इब्राहीम का परमेश्वर और इस्हाक् का भी परमेश्वर यहोवा हूं जिस भूमि पर तू पड़ा है उसे मैं तुझ को और तेरे बंश को देऊंगा। और तेरा बंश भूमि की धूल १४ के किनकों के समान बहुत होगा और पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन चारों ओर फैलता जावेगा और तेरे और तेरे बंश के द्वारा पृथिवी के सारे कुल आशीष पावेंगे। और देख मैं तेरे संग १५ रहूंगा और जहां कहीं तू जावे तहां तेरी रक्षा करूंगा और तुझे इस देश में लौटा ले आऊंगा क्योंकि मैं अपने कहे हुए को जब लों पूरा न कर लूं तब लों तुझ को न छोड़ूंगा। इतने पर याकूब १६ जाग उठा और कहने लगा निश्चय यहोवा इस स्थान में है और मैं इस बात को न जानता था। सो वह डर गया १७ और कहा यह स्थान क्या ही भयपूर्ण है यह तो परमेश्वर के भवन को छोड़ और कुछ नहीं है बल्कि यह स्वर्ग का फाटक ही है। सो भोर को याकूब १८

तड़के उठा और अपने उसीसे का पत्थर लेके उस का खंभा खड़ा किया और उस के सिरे पर तेल डाल दिया।
१९ और उस ने उस स्थान का नाम बेतेल्[1] रक्खा पर नगर का नाम तो पहिले
२० लूज् था। तब याकूब ने यह मनौती मानी कि यदि परमेश्वर मेरे संग संग रहके इस यात्रा में मेरी रक्षा करे और मुझे खाने के लिये रोटी और
२१ पहिनने के लिये कपड़ा देवे और मैं अपने पिता के घर में कुशल क्षेम से लौट आऊं तो यहोवा मेरा पर-
२२ मेश्वर ठहरेगा। और यह पत्थर जिस का मैं ने खंभा खड़ा किया है परमेश्वर का भवन ठहरेगा और जो कुछ तू मुझे देवे उस का दशमांश मैं अवश्य ही तुझे दिया करूंगा।

(याकूब के बिवाहों और उस के पुत्रों की उत्पत्ति का वर्णन.)

२९ फिर याकूब ने अपना मार्ग लिया और पूर्बियों के देश
२ में आया। और उस ने जो दृष्टि किई तो क्या देखा कि चौगान में एक कूआं है और उस के पास भेड़ बकरियों के तीन झुण्ड बैठे हुए हैं क्योंकि उसी कूएं में से झुण्डों को जल पिलाया जाता था और कूएं के मुंह पर एक
३ भारी सा पत्थर धरा हुआ था। और जब सब झुण्ड वहां एकट्ठे होते तब चरवाहे उस पत्थर को कूएं के मुंह पर से लुढ़काकर भेड़ बकरियों को पानी पिलाके पत्थर को कूएं के मुंह पर ज्यों
४ का त्यों कर देते थे। सो याकूब ने उन से पूछा हे मेरे भाइयो तुम कहां के हो
५ उन्हों ने कहा हम हारान् के हैं। तब उस ने उन से पूछा क्या तुम नाहोर् के पोते लाबान् को जानते हो उन्हों
६ ने कहा हां हम उसे जानते हैं। फिर उस ने उन से पूछा क्या वह कुशल से है उन्हों ने कहा हां कुशल से तो है और वह देख उस की बेटी राहेल् भेड़ बकरियों को लिये हुए चली आती
७ है। तब उस ने कहा देखो अभी तो दिन बहुत है पशुओं के एकट्ठे होने का समय नहीं सो भेड़ बकरियों को जल पिलाकर फिर ले जाके चराओ।
८ उन्हों ने कहा जब लों सब झुण्ड एकट्ठे न होवें और पत्थर कूएं के मुंह पर से लुढ़काया न जावे तब लों हम ऐसा नहीं कर सकते पर तब हम भेड़
९ बकरियों को पानी पिलाते हैं। उन की यह बातचीत हो ही रही थी कि राहेल् जो पशु चराया करती थी सो अपने पिता की भेड़ बकरियों को लेके
१० आ गई। जब याकूब ने अपने मामा लाबान् की बेटी राहेल् को और लाबान् की भेड़ बकरियों को भी देखा तब निकट जा कूएं के मुंह पर से पत्थर को लुढ़काके अपने मामा लाबान् की भेड़
११ बकरियों को पिला दिया। फिर याकूब ने राहेल् को चूमा और ऊंचे स्वर से

(१) अर्थात्. ईश्वर का भवन.

१२ रोया। पीछे याकूब ने राहेल् को बता दिया कि मैं तेरा फुफेरा भाई हूं अर्थात् रिब्का का पुत्र हूं इतना सुन उस ने
१३ दौड़के अपने पिता से कह दिया। सो लाबान् अपने भांजे याकूब का समाचार पाते ही उस से भेंट करने को दौड़ा और उस को गले लगाके चूमा फिर अपने घर ले आया और याकूब ने लाबान् से अपना सब वृत्तान्त वर्णन
१४ किया। तब लाबान् ने उस से कहा तू तो सचमुच मेरा हाड़ मांस है और याकूब उस के साथ महीना भर रहा।
१५ इस के बीते पर लाबान् ने याकूब से कहा क्या भाई बन्धु होने के कारण तुझ से सेंतमेंत सेवा कराना मुझे उचित है सो कह दे मैं तुझे इस के
१६ बदले क्या दूं। जानना चाहिये कि लाबान् के दो बेटियां थीं बड़की का नाम लेआ और छुटकी का नाम राहेल्
१७ है। लेआ की आंखें तो चून्धली थीं पर राहेल् रूपवती और सुन्दर थी।
१८ और याकूब राहेल् से प्रीति रखता था सो उस ने कहा मैं तेरी छुटकी बेटी राहेल् के लिये सात बरस
१९ तेरी सेवा करूंगा। लाबान् ने कहा उसे पराये पुरुष को देने से तुझी को देना उत्तम होगा सो तू मेरे पास रह।
२० सो याकूब ने राहेल् के लिये सात बरस सेवा किई और वे उस को राहेल् की प्रीति के कारण थोड़े ही
२१ दिनों के समान जान पड़े। उन के बीतने पर याकूब ने लाबान् से कहा मेरी स्त्री मुझे दे तो मैं उस के पास जाऊंगा क्योंकि मेरा समय पूरा हो गया है।
२२ सो लाबान् ने उस स्थान के सब मनुष्यों को बुलाके एकट्ठा किया और उन की जेवनार किई।
२३ फिर सांझ को वह अपनी बेटी लेआ को याकूब के पास ले गया और उस ने उस से प्रसंग किया।
२४ और लाबान् ने अपनी बेटी लेआ को अपनी लौंडी जिल्पा को दिया कि वह उस की लौंडी होवे।
२५ जब भोर हुआ तब याकूब ने देखा कि यह तो लेआ है सो उस ने लाबान् से कहा यह तू ने मुझ से क्या किया है मैं ने तेरे साथ रहके जो तेरी सेवा किई सो क्या राहेल् ही के लिये नहीं किई फिर तू ने मुझ से क्यों ऐसा छल किया है।
२६ लाबान् ने कहा हमारे यहां ऐसी रीति नहीं कि जेठी से पहिले दूसरी का बिवाह कर देवें।
२७ अब इस का अठवारा तो पूरा कर फिर दूसरी भी तुझे इस शर्त पर मिलेगी कि तू मेरे साथ रहके और सात बरस लों सेवा करता रहे।
२८ और याकूब ने ऐसा ही किया अर्थात् लेआ के अठवारे को पूरा किया तब लाबान् ने उसे अपनी बेटी राहेल् को भी दिया कि वह उस की स्त्री होवे।
२९ और लाबान् ने अपनी बेटी राहेल् को अपनी लौंडी बिल्हा को दिया कि वह उस की लौंडी होवे।
३० तब याकूब राहेल् के पास भी गया

और उस की प्रीति उस पर लेआ से अधिक हुई इस भांति उस ने लाबान् के साथ रहके और भी सात बरस उस की सेवा किई।

३१ जब यहोवा ने देखा कि लेआ तो अप्रिय हुई तब उस ने उस की कोख खोली पर राहेल् बांझ ही रही। ३२ सो लेआ गर्भवती हुई और एक पुत्र जनी और यह कहके उस का नाम रूबेन्[1] रक्खा कि निश्चय यहोवा ने मेरे दुःख पर दृष्टि किई है सो अब ३३ मेरा पति मुझ से प्रीति रक्खेगा। फिर वह गर्भवती होके एक पुत्र और जनी और बोली यहोवा ने सुना है कि मैं अप्रिय हूं सो उस ने मुझे यह भी पुत्र दिया इस लिये उस ने उस का नाम ३४ शिमोन्[2] रक्खा। और फिर वह गर्भवती होके एक पुत्र और जनी और कहा अब की बार तो मेरे पति का मन मुझ से मिल जावेगा क्योंकि मैं उस के तीन पुत्र जनी हूं इस लिये ३५ उस का नाम लेवी[3] रक्खा गया। और फिर वह गर्भवती होके एक और पुत्र जनी और कहा अब की बार तो मैं यहोवा का धन्यबाद करूंगी इस लिये उस ने उस का नाम यहूदा[4] रक्खा तब उस का जनना बन्द हो गया।

(१) अर्थात्. देखो बेटा. (२) अर्थात्. सुन लेना. (३) अर्थात्. जुटना. (४) अर्थात्. जिस का धन्यबाद हुआ हो.

३० फिर जब राहेल् ने देखा कि याकूब के लिये मुझ से सन्तान नहीं हुए तब वह अपनी बहिन से डाह करने लगी और याकूब से कहा मुझे लड़के दे नहीं तो मर जाऊंगी। २ यह सुनके याकूब ने राहेल् से क्रोधित होके कहा क्या मैं परमेश्वर हूं तेरी कोख तो उसी ने बन्द कर रक्खी है। ३ राहेल् ने कहा अच्छा तो मेरी लौंडी बिल्हा हाजिर है उसी के पास जा वह मेरे घुटनों पर जनेगी और इस प्रकार से मेरा घर भी उस के द्वारा ४ बसेगा। सो उस ने उसे अपनी लौंडी बिल्हा को दिया कि वह उस की स्त्री होवे और याकूब उस के पास गया। ५ और बिल्हा गर्भवती होके याकूब का ६ जन्माया एक पुत्र जनी। तब राहेल् ने कहा परमेश्वर ने मेरा न्याय किया और मेरी सुनके मुझे एक पुत्र दिया इस लिये उस ने उस का नाम दान्[1] ७ रक्खा। और राहेल् की लौंडी बिल्हा फिर गर्भवती होके याकूब का जन्माया ८ एक पुत्र और जनी। तब राहेल् ने कहा मैं ने मानो अपनी बहिन के साथ बड़े बल से लिपटके मल्लयुद्ध किया और अब जीत गई सो उस ने ९ उस का नाम नप्ताली[2] रक्खा। जब लेआ ने देखा कि मैं अब जनने से रहित हो गई हूं तब उस ने भी अपनी लौंडी जिल्पा को लेके याकूब को

(१) अर्थात्. न्यायी. (२) अर्थात्. मेरा मल्लयुद्ध.

१० दिया कि वह उस की स्त्री होवे। और लेआ की लौंडी जिल्पा भी याकूब ११ का जन्माया एक पुत्र जनी। तब लेआ ने कहा मेरा सौभाग्य फिर जागा है सो उस ने उस का नाम गाद्[1] रक्खा। १२ फिर लेआ की लौंडी जिल्पा याकूब १३ का जन्माया एक पुत्र और जनी। तब लेआ ने कहा मैं धन्य हूं निश्चय स्त्रियां मुझे धन्य कहेंगी सो उस ने उस का १४ नाम आशेर्[2] रक्खा। गेहूं की कटनी के दिनों में एक दिन रूबेन् को चौगान में दूदा के फल मिले और उन को अपनी माता लेआ के पास ले गया उन को देखके राहेल् ने लेआ से कहा कृपा करके अपने पुत्र के दूदाफलों में १५ से कुछ मुझे भी दे। पर उस ने उस से कहा तू ने जो मेरे पति को ले लिया है सो क्या छोटी बात है फिर क्या तू मेरे पुत्र के दूदाफल भी लेने चाहती है राहेल् ने कहा अच्छा तेरे पुत्र के दूदाफलों के पलटे में वह आज १६ रात को तेरे संग सोवेगा। सो सांझ को जब याकूब चौगान से आता था तब लेआ उस से भेंट करने को निकली और उस से कहा मेरे ही पास आ क्योंकि मैं ने अपने पुत्र के दूदाफल देके तुझे सचमुच मोल लिया है सो वह उस रात को उसी के संग सोया। १७ तब परमेश्वर ने लेआ की सुनी सो वह गर्भवती होके याकूब का जन्माया

(१) अर्थात्. सौभाग्य. (२) अर्थात्. धन्य.

पांचवां पुत्र जनी। तब लेआ ने कहा १८ मैं ने जो अपने पति को अपनी लौंडी दिई इस की सन्ती परमेश्वर ने मुझे मेरी मजूरी दिई है सो उस ने उस का नाम इस्साकार्[1] रक्खा। और १९ लेआ फिर गर्भवती होके याकूब का जन्माया छठवां पुत्र जनी। तब लेआ २० ने कहा परमेश्वर ने मुझे अच्छा फल दिया है अब की बार मेरा पति मेरे संग बना रहेगा क्योंकि मैं उस के जन्माये छः पुत्र जनी हूं सो उस ने उस का नाम जबलून्[2] रक्खा। और २१ इस के पीछे उस के एक बेटी भी हुई और उस ने उस का नाम दीना रक्खा। फिर परमेश्वर ने राहेल् की सुधि २२ लिई और उस ने उस की सुनके उस की कोख खोली। सो वह गर्भवती होके २३ एक पुत्र जनी और कहा परमेश्वर ने मेरी नामधराई को दूर कर दिया है। इस कारण उस ने यह कहके उस का २४ नाम यूसुफ़[3] रक्खा कि परमेश्वर मुझे एक और पुत्र भी देगा।

जब राहेल् यूसुफ को जनी तब २५ याकूब ने लाबान् से कहा अब मुझे बिदा कर कि मैं अपने देश और स्थान को जाऊं। मेरी स्त्रियां और २६ मेरे लड़केबाले जिन के लिये मैं ने तेरी सेवा किई है मुझे दे तो मैं

(१) अर्थात्. मजूरी में मिला. (२) अर्थात्. निवास. (३) अर्थात्. वह दूर करता है. अथवा. वह और भी देगा.

चला जाऊं क्योंकि तू जानता है कि २७ मैं ने तेरी कैसी सेवा किई है। पर लाबान् ने उस से कहा यदि तेरी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर है तो रह क्योंकि मैं ने लक्षण से जान लिया है कि यहोवा ने तेरे कारण से मुझे २८ आशीष दिई है। फिर लाबान् ने कहा अच्छा तो अब तू ही ठीक बता कि मैं तुझ को क्या दूं तो मैं उसे २९ देऊंगा। उस ने उस से कहा तू जानता है कि मैं ने तेरी कैसी सेवा किई और तेरे पशु मेरे पास किस प्रकार से रहे। ३० अर्थात् मेरे आने से पहिले वे कितनी थीं और अब कितनी हो गई हैं और यहोवा ने मेरे आने पर तुझे आशीष दिई है पर मैं अपने घर का भी कब ३१ बन्दोबस्त करने पाऊंगा। उस ने फिर कहा बता दे कि मैं तुझे क्या देऊं याकूब ने कहा तू मुझे कुछ न दे और यदि तू मेरे लिये एक काम करे तो मैं फिर तेरी भेड़ बकरियों को चरा- ३२ ऊंगा और उन की रक्षा करूंगा। मैं आज तेरी सब भेड़ बकरियों के बीच होके निकलूंगा और जो भेड़ वा बकरी चित्तीवाली अथवा चित्कबरी होवे और जो भेड़ काली हो और जो बकरी चित्कबरी वा चित्तीवाली होवे उन्हें मैं आगे को अलग कर रक्खूंगा और मेरी ३३ सेवा का बदला ये ही ठहरेंगी। इस प्रकार से जब आगे को मेरी मजूरी की चर्चा तेरे साम्हने चले तब मेरे धर्म्म की यही साक्षी होगी अर्थात् बकरियों में से जो कोई न चित्तीवाली न चित्कबरी होवे और भेड़ों में से जो कोई काली न होवे सो यदि मेरे पास निकले तो चोरी की ठहरेगी। यह ३४ सुनके लाबान् ने कहा तेरे कहने के अनुसार होवे तो अच्छा होवेगा। सो ३५ याकूब ने उसी दिन सब धारीवाले और चित्कबरे बकरों और सब चित्ती- वाली और चित्कबरी बकरियों को अर्थात् जितनियों में कुछ उजलापन था उन को और सब काली भेड़ों को भी अलग करके अपने पुत्रों के हाथ सौंप दिया। तब लाबान् ने अपने ३६ और याकूब के बीच में तीन दिन के मार्ग का अन्तर ठहराया सो याकूब लाबान् की बाकी भेड़ बकरियों को चराने लगा। फिर याकूब ने चिनार ३७ और बादाम और अर्मोन् वृक्षों की हरी हरी छड़ियां लेके उन के छिलके कहीं कहीं छीलके उन्हें गंडेरीदार बना दिया। और जिन छड़ियों को छीला ३८ था उन को वह भेड़ बकरियों के साम्हने उन के पानी पीने के कठौतों में खड़ा किया करता था क्योंकि जब वे पीने के लिये आतीं तब गाभिन होती थीं। सो भेड़ बकरियां छड़ियों के ३९ साम्हने गाभिन होके धारीवाले चित्ती- वाले और चित्कबरे बच्चे जनीं। तब ४० याकूब ने भेड़ों के बच्चों को अलग अलग किया और लाबान् की भेड़ बकरियों

के मुंह को चित्तीवाले और सब काले बच्चों की ओर कर दिया और अपने झुण्डों को उन से अलग रक्खा और लाबान् की भेड़ बकरियों से मिलने न दिया । ४१ और जब बलवन्त बलवन्त भेड़ बकरियां गाभिन होती थीं तब याकूब उन छड़ियों को कठौतों में उन के साम्हने रख देता था इस से वे छड़ियों ही को देखती हुई गाभिन हो जाती थीं । ४२ पर जब निर्बल निर्बल भेड़ बकरियां गाभिन होती थीं तब वह उन्हें उन के आगे न रखता था इस से निर्बल निर्बल लाबान् की रहीं और बलवन्त बलवन्त याकूब की हो गईं । ४३ इस प्रकार से वह पुरुष अत्यन्त धनाढ्य हो गया और उस के बहुत सी भेड़ बकरियां लौण्डियां दास ऊंट और गदहे हुए ।

(याकूब के लौट आने का वर्णन.)

३१ तब लाबान् के पुत्रों की ये बातें उस के सुनने में आईं कि याकूब ने हमारे पिता का सर्वस्व छीन लिया है और हमारे पिता का जो धन था उसी से उस ने अपना यह सारा बिभव कर लिया है । २ और याकूब लाबान् की चेष्टा से ताड़ गया कि वह आगे के समान अब मुझे नहीं देखता । ३ तब यहोवा ने याकूब से कहा अपने पितरों के देश और अपनी जन्मभूमि को लौट जा और मैं तेरे संग रहूंगा । ४ इस पर याकूब ने राहेल् और लेआ को चौगान पर अपनी भेड़ बकरियों के पास बुलवा भेजा ५ और उन से कहा तुम्हारे पिता की चेष्टा से मुझे समझ पड़ता है कि वह मुझे आगे की नाईं अब नहीं देखता पर मेरे पिता का परमेश्वर अब लों मेरे संग संग रहा है । ६ और तुम भी जानती हो कि मैं ने तुम्हारे पिता की सेवा शक्ति भर किई है । ७ और तुम्हारे पिता ने मुझ से छल करके मेरी सेवा के फल को दस बार बदल दिया परन्तु परमेश्वर ने उस को मेरी हानि नहीं करने दिया । ८ जब उस ने कहा कि चित्तीवाले बच्चे तेरा बदला ठहरेंगे तब सब भेड़ बकरियां चित्तीवाले ही जनने लगीं और जब उस ने कहा कि धारीवाले बच्चे तेरा बदला ठहरेंगे तब सब भेड़ बकरियां धारीवाले ही जनने लगीं । ९ इस रीति से परमेश्वर ने तुम्हारे पिता के पशुओं को छीनके मुझी को दे दिया । १० और एक समय जब भेड़ बकरियां गाभिन होने लगीं तब मैं ने स्वप्न में क्या देखा कि जो बकरे बकरियों पर चढ़ रहे हैं सो धारीवाले चित्तीवाले और धब्बेवाले हैं । ११ और परमेश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझ से कहा हे याकूब मैं ने कहा क्या आज्ञा । १२ उस ने कहा आंखें उठाके उन सब बकरों को जो बकरियों पर चढ़ रहे हैं देख कि वे धारीवाले चित्ती-

वाले और धब्बेवाले हैं क्योंकि जो कुछ लाबान् तुझ से करता है सो मैं ने देखा है। मैं उस बेतेल् का ईश्वर हूं जहां तू ने एक खम्भे पर तेल डाल दिया और जहां तू ने मेरी मनौती मानी अब चल इस देश से निकलके अपनी जन्मभूमि को लौट जा। यह सुन राहेल् और लेआ ने उस को उत्तर दिया क्या हमारे पिता के घर में अब हमारा कुछ भाग वा अंश रहा है। क्या हम उस के लेखे में उपरी नहीं ठहरीं क्योंकि उस ने तो हम को बेच डाला और हमारे रूपे को खा बैठा है। सो परमेश्वर ने हमारे पिता का जितना धन छीन लिया है सो हमारा और हमारे लड़केबालों ही का है सो अब जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उस के करने में लग जा। तब याकूब ने अपने लड़केबालों और स्त्रियों को ऊंटों पर चढ़ाया। और वह अपने सारे पशुओं को और जितना धन उस ने संचय किया था अर्थात् जितने पशुओं को उस ने पद्दनराम् में एकट्ठा किया था सब को कनान् में अपने पिता इस्हाक् के पास जाने की मनसा से साथ ले गया। उस समय लाबान् अपनी भेड़ बकरियों का रोआं कतराने के लिये चला गया था सो राहेल् अपने पिता के गृह-देवताओं को चुरा ले गई। इस रीति याकूब लाबान् अरामी के पास से चोरी से चला गया अर्थात् उस को न बताया कि मैं भागा जाता हूं। सो वह अपना सब कुछ लेके भाग गया और महानद के पार उतर गया और अपना मुंह गिलाद् के पहाड़ी देश की ओर किया।

फिर तीसरे दिन लाबान् को समाचार मिला कि याकूब भाग गया है। सो उस ने अपने भाइयों को साथ लेके उस का पीछा किया और उस का पीछा करते करते सात दिन के पीछे गिलाद् के पहाड़ी देश में उस को जा लिया। तब परमेश्वर ने रात के स्वप्न में अरामी लाबान् के पास आके उस से कहा सावधान रह कि तू याकूब से न तो भला कह और न बुरा। तब लाबान् ने याकूब से भेंट किई क्योंकि याकूब अपने तम्बू को उस पहाड़ी देश में खड़ा किये पड़ा था सो लाबान् ने भी अपने भाइयों के साथ अपना तम्बू गिलाद् ही के पहाड़ी देश में खड़ा किया। सो लाबान् याकूब से कहने लगा तू ने यह क्या किया कि मेरे पास से चोरी से चला आया और मेरी बेटियों को ऐसा ले आया जैसा कोई युद्ध में जीतकर बन्धुआ करके ले जावे। तू क्यों चुपके से भाग आया और बिना मुझ से कुछ कहे मेरे पास से चोरी से चला आया नहीं तो मैं तुझे आनन्द से और मृदंग और बीणा बजवाते और गीत गवाते

१३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७

२८ बिदा करता । तू ने मुझे इतना भी अवकाश न दिया कि मैं अपने बेटे बेटियों को चूमता तू ने जो किया सो
२९ मूर्खता ही से किया है । तुम लोगों की हानि करने की तो शक्ति मेरे हाथ में है पर तुम्हारे पिता के परमेश्वर ने मुझ से बीती हुई रात में कहा सावधान रह कि तू याकूब से
३० न तो भला कह और न बुरा । भला तू अपने पिता के घर का बड़ा अभिलाषी होके चला आया तो चला आया पर मेरे देवताओं को तू क्यों चुरा
३१ ले आया है । तब याकूब ने लाबान् को उत्तर दिया मैं यह सोचके डर गया था कि क्या जानिये लाबान् अपनी बेटियों को मुझ से छीन ले ।
३२ देख तू जिस किसी के पास अपने देवताओं को पावे सो जीता न बचेगा भाई बन्धुओं के साम्हने मेरे पास तेरा जो कुछ निकले सो पहिचानके ले ले। याकूब तो न जानता था कि राहेल् गृहदेवताओं को चुरा ले आई है ।
३३ सो लाबान् याकूब और लेआ और दोनों दासियों के तम्बुओं में गया पर कुछ न मिला तब लेआ के तम्बू में से
३४ निकलके राहेल् के तम्बू में गया । पर राहेल् गृहदेवताओं को ले ऊंट की काठी में रखके उन पर बैठी थी सो लाबान् ने सारे तम्बू को ढूंढ़ डाला
३५ पर उन्हें न पाया । और राहेल् ने अपने पिता से कहा आप इस से अप्रसन्न न हूजिये कि मैं आप के साम्हने नहीं उठी क्योंकि मैं स्त्रियों की रीति के अनुसार हूं सो उस ने ढूंढ़ ढांढ़ किया पर गृहदेवता उस को न मिले । तब याकूब क्रोधित होके
३६ लाबान् से झगड़ने लगा और उस से कहने लगा मेरा क्या अपराध है मेरा क्या पाप है कि तू ने इतना तेहा करके मेरा पीछा किया है और
३७ मेरी सारी सामग्री को तो टटोला पर तुझ को अपने घर की सारी सामग्री में से क्या मिला कुछ मिला हो तो उस को यहां अपने और मेरे भाइयों के साम्हने रख दे तो वे हम दोनों के बीच बिचार करें । इन बीस बरसों
३८ से मैं तेरे पास रहता हूं देख इन में न तो तेरी भेड़ बकरियों के गर्भ गिरे और न तेरे मेंढ़ों का मांस मैं ने कभी खाया । जो बनैले जन्तुओं से फाड़ा
३९ जाता उस को मैं तेरे पास न लाता था उस की हानि मैं ही उठाता था चाहे दिन को चोरी जाता चाहे रात को तू मेरे ही हाथ से उस को भर लेता था । मेरी तो यह दशा थी कि
४० दिन को तो घाम और रात को पाला मुझे सुखाये डालता था और मेरी आंखों को नींद दुर्लभ हो गई थी ।
४१ इस बीस बरस में मैं ने तेरे घर में रहके तेरी सेवा किई है चौदह बरस तो मैं ने तेरी दोनों बेटियों के लिये और छः बरस तेरी भेड़ बकरियों के

लिये सेवा किई और तू ने मेरी सेवा के फल को दस बार बदल डाला। ४२ मेरे पिता का परमेश्वर जो इब्राहीम का भी परमेश्वर है और जिस का भय इस्हाक् मानता है सो यदि मेरी ओर न होता तो निश्चय है कि तू अब मुझे छूछे हाथ जाने देता परन्तु परमेश्वर ने मेरे दुःख और मेरे हाथों के परिश्रम को देखा है और बीती हुई रात में तुझे दपटा भी। ४३ तब लाबान् ने याकूब को उत्तर दिया ये बेटियां मेरी ही हैं और ये पुत्र भी मेरे ही हैं और ये भेड़ बकरियां भी मेरी ही हैं और जो कुछ तुझे देख पड़ता है सो मेरा ही है और अब मैं अपनी बेटियों वा उन के सन्तान के लिये क्या कर सकता हूं। ४४ सो अब चल मैं और तू दोनों आपस में बाचा बांधें और वह मेरे और तेरे बीच साक्षी ठहरी रहे। ४५ यह सुन याकूब ने एक पत्थर लेके उस का खम्भा खड़ा किया। ४६ और याकूब ने अपने भाई बन्धुओं से कहा पत्थर बटोरो सो उन्हों ने पत्थर बटोरके एक ढेर लगाया और उन सभों ने वहीं ढेर के ऊपर भोजन किया। ४७ और लाबान् ने तो उस ढेर का नाम यगर्सहदूता[1] रक्खा पर याकूब ने उसे गलेद्[2] कहा। ४८ तब लाबान् ने कहा यह ढेर आज से मेरे और तेरे बीच साक्षी रहेगा इसी कारण उस का नाम गलेद् रक्खा गया। ४९ और मिज्पा[1] भी उस का नाम पड़ा क्योंकि लाबान् ने कहा जब हम एक दूसरे की आंखों की ओट रहेंगे तब यहोवा हमारे बीच में ताकता रहे। ५० यदि तू मेरी बेटियों को दुःख देवे अथवा उन से अधिक और स्त्रियां ब्याह ले तो हमारे साथ कोई मनुष्य रहेगा नहीं देख मेरे तेरे बीच में परमेश्वर ही साक्षी रहेगा। ५१ फिर लाबान् ने याकूब से कहा इस ढेर को देख और इस खम्भे को देख जिन को मैं ने अपने और तेरे बीच में खड़ा किया है। ५२ यह ढेर और यह खम्भा दोनों इस बात के साक्षी रहें कि एक दूसरे की हानि करने की मनसा से न तो मैं इस ढेर को लांघके तेरे पास जाऊं न तू इस ढेर और इस खम्भे को लांघके मेरे पास आवे। ५३ इब्राहीम और नाहोर् दोनों का जो परमेश्वर है जो उन के पिता का भी परमेश्वर है सो हम दोनों के बीच न्याय करे। यह सुनके याकूब ने उस की किरिया खाई जिस का भय उस का पिता इस्हाक् मानता था। ५४ फिर याकूब ने पहाड़ पर मेलबलि चढ़ाया और अपने भाई बन्धुओं को भोजन करने के लिये बुलाया सो उन्हों ने भोजन किया और पहाड़ पर रात बिताई। ५५ और बिहान

(१) अर्थात्. अरामी भाषा में. साक्षी का ढेर.
(२) अर्थात्. इब्रानी भाषा में. साक्षी का ढेर.

(१) अर्थात्. ताकने का स्थान.

को लाबान् ने तड़के उठके अपने बेटे बेटियों को चूमा और उन्हें आशीर्बाद देके चल दिया और अपने स्थान को लौट गया ।

३२

और याकूब ने भी अपना मार्ग लिया और २ परमेश्वर के दूत उसे आ मिले। उन को देखते ही याकूब ने कहा यह तो परमेश्वर का लश्कर है सो उस ने उस स्थान का नाम महनैम्[1] रक्खा ।

(याकूब के एसाव् से मिलने और उस के इस्राएल् नाम रक्खे जाने का बर्णन.)

३ फिर याकूब ने सेईर् देश अर्थात् एदोम् के चौगान में अपने भाई एसाव् के पास अपने आगे दूत भेज दिये । ४ और उस ने उन्हें यह आज्ञा दिई कि मेरे प्रभु एसाव् से यों कहना कि तेरे दास याकूब ने यह सन्देशा भेजा है कि मैं लाबान् के यहां परदेशी होके ५ अब लों बिलमा रहा। और इस बीच मेरे गाय बैल गदहे भेड़ बकरियां और दास दासियां हो गई हैं हे मेरे प्रभु मैं ने तेरे पास इस का सन्देशा इस लिये भेजा है कि तेरी अनुग्रह ६ की दृष्टि मुझ पर होवे। वे दूत याकूब के पास लौटके कहने लगे हम तेरे भाई एसाव् के पास गये थे सो वह भी तुझ से भेंट करने को चार सौ पुरुष संग लिये हुए चला आता है । ७ यह सुनके याकूब निपट डर गया और संकट में पड़के अपने संगवालों को और भेड़ बकरियों गाय बैल और ऊंटों के भी अलग अलग दो लश्कर कर लिये ८ और कहा यदि एसाव् आके पहिले लश्कर को मारने लगे तो दूसरा लश्कर भागके बचेगा। ९ फिर याकूब ने कहा हे यहोवा हे मेरे दादा इब्राहीम के परमेश्वर और मेरे पिता इस्हाक् के परमेश्वर तू ने तो मुझ से कहा कि अपने देश और जन्मभूमि में लौट जा तो मैं तेरी भलाई करूंगा । १० फिर तू ने जो जो करुणा और सत्यता मुझ अपने दास को दिखाई है उन में से मैं एक के भी योग्य न था मैं तो केवल अपनी छड़ी ही लेके इस यर्दन नदी के पार उतर आया था पर देख अब मेरे दो लश्कर हो गये हैं । ११ सो अब मुझे मेरे भाई एसाव् के हाथ से कृपा करके बचा मैं उस से डरता हूं कहीं ऐसा न होवे कि वह आके मुझे और मा समेत लड़कों को भी मार डाले । १२ तू ने तो कहा है कि मैं निश्चय तेरी भलाई करूंगा और तेरे बंश को समुद्र की बालू के किनकों के समान बढ़ा दूंगा जो बहुतायत के मारे गिने नहीं जाते । १३ फिर उस ने उस दिन की रात वहीं बिताई और जो कुछ उस के पास था उस में से अपने भाई एसाव् की भेंट के लिये छांट छांटके निकाला १४ अर्थात् दो सौ बकरियां और बीस बकरे दो सौ भेड़ें और बीस मेंढ़े १५ बच्चों समेत दूध देती

(१) अर्थात्. अनेक लश्कर.

हुई तीस तो ऊंटनियां और चालीस गायें दस बैल बीस गदहियां और १६ गदहियों के दस बच्चे । इन को उस ने झुण्ड झुण्ड करके अपने दासों को सौंप दिया और अपने दासों से कहा मेरे आगे बढ़ जाओ और झुण्डों के १७ बीच बीच में अन्तर रक्खो । फिर उस ने अगले झुण्ड के रखवाले को यह आज्ञा दिई कि जब मेरा भाई एसाव् तुझे मिले और पूछने लगे कि तू किस का दास है और कहां जाता है और १८ ये जो तेरे आगे हैं सो किस के हैं तब कहना कि तेरे दास याकूब के हैं हे मेरे प्रभु एसाव् ये भेंट के लिये तेरे पास भेजे गये हैं और देख वह आप १९ भी हमारे पीछे है । और उस ने दूसरे और तीसरे रखवालों को भी बल्कि उन सभों को जो झुण्डों के पीछे पीछे थे ऐसी ही आज्ञा दिई कि जब एसाव् तुम को मिले तब इसी प्रकार उस से २० कहना । और यह भी कहना कि देख तेरा दास याकूब हमारे पीछे है । याकूब ने यह सब कुछ यह सोचके किया कि यह भेंट जो मेरे आगे आगे जाती है इस के द्वारा मैं उस के क्रोध को शान्त करके तब उस का दर्शन करूंगा क्या जानिये वह मुझ से प्रसन्न २१ होवे । इस भान्ति वह भेंट याकूब से पहिले ही पार उतर गई और वह आप उस रात को छावनी में रहा ।

२२ फिर रात ही को वह उठके अपनी दोनों स्त्रियों और दोनों लौण्डियों और ग्यारहों लड़कों को संग लेके घाट से यब्बोक् के पार उतर गया । २३ जब उस ने उन्हें लेके उस नदी के पार उतार दिया अर्थात् जब वह २४ अपना सब कुछ उतार चुका और आप अकेला रह गया तब कोई पुरुष आके उस से मल्लयुद्ध करने लगा और २५ पह फटने लों करता रहा । और जब उस ने देखा कि मैं याकूब पर प्रबल नहीं होता तब उस ने उस की जांघ की नस को छूआ सो याकूब की जांघ की नस उस से मल्लयुद्ध करते ही २६ करते चढ़ गई । तब उस ने कहा मुझे जाने दे क्योंकि पह फटती है पर याकूब ने कहा जब लों तू मुझे आशीर्वाद न देवे तब लों मैं तुझे जाने न २७ दूंगा । फिर उस ने याकूब से पूछा कि तेरा नाम क्या है उस ने कहा २८ याकूब । उस ने कहा तेरा नाम अब याकूब न रहेगा पर इस्राएल्[1] होवेगा क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से २९ भी युद्ध करके प्रबल हुआ है । तब याकूब ने कहा कृपा करके अपना नाम बता पर उस ने कहा तू मेरा नाम क्यों पूछता है और उस ने उस को ३० वहीं आशीर्वाद दिया । और याकूब ने उस स्थान का नाम पनीएल्[2] रक्खा क्योंकि उस ने कहा मैं ने परमेश्वर

(१) अर्थात्. ईश्वर से युद्ध करनेहारा.
(२) अर्थात्. ईश्वर का दर्शन.

को आम्हने साम्हने देखा और तौभी ३१ मेरा प्राण बच गया है। फिर याकूब को पनूएल् से चलते चलते सूर्य्य उदय हो गया और वह जांघ से लंगड़ाता ३२ था। इस्राएल्‌बंशी जो उस जंघानस को जो जांघ की जोड़ पर है आज के दिन लों नहीं खाते इस का यही कारण है कि उस पुरुष ने याकूब की जांघ की जोड़ में जंघानस को छूआ था।

३३ फिर याकूब ने जो आंखें उठाईं तो क्या देखा कि एसाव् चार सौ पुरुष संग लिये हुए चला आता है सो उस ने लड़केबालों को अलग अलग बांटके लेआ और राहेल् और दोनों लौण्डियों को सौंप दिया। २ और सब के आगे लड़कों समेत लौण्डियों को तिस के पीछे लड़कों समेत लेआ को और सब के पीछे ३ राहेल् और यूसुफ को करके वह आप इन सभों के आगे बढ़ा और सात बार भूमि पर गिर गिरके दण्डवत् किई और इस प्रकार से अपने भाई ४ के पास पहुंचा। उसे देखके एसाव् उस से भेंट करने को दौड़ा और उस को हृदय में लगा उस के गले से लिपटके उस को चूमा फिर वे दोनों रो उठे। ५ तब उस ने आंखें उठाकर स्त्रियों और लड़केबालों को देखके पूछा ये तेरे कौन हैं उस ने कहा ये मुझ तेरे दास के लड़के हैं जिन्हें परमेश्वर ने अनुग्रह ६ करके मुझ को दिया है। इतने में लड़कों समेत लौण्डियों ने निकट आके ७ दण्डवत् किई। फिर लड़कों समेत लेआ निकट आई और उन्हों ने भी दण्डवत् किई सब के पीछे यूसुफ और राहेल् ने भी निकट आके दण्डवत् किई। ८ इस के पीछे उस ने पूछा तेरा एक बड़ा लश्कर जो मुझ को मिला उस का क्या प्रयोजन है उस ने कहा यह कि तुझ मेरे प्रभु की अनुग्रह की ९ दृष्टि मुझ पर होवे। पर एसाव् ने कहा हे भाई मेरे पास तो बहुत है जो कुछ तेरा है सो तेरा ही रहे। १० पर याकूब ने कहा नहीं नहीं यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर है तो मेरी भेंट को ग्रहण कर क्योंकि मैं ने जो तेरा दर्शन पाके मानो परमेश्वर ही का दर्शन पाया है और तू जो मुझ से प्रसन्न हुआ है इस लिये उचित है कि ११ तू मेरी भेंट ग्रहण करे। सो यह भेंट जो तुझे भेजी गई है कृपा करके ग्रहण कर क्योंकि परमेश्वर ने मुझ पर अनुग्रह किया है और जो कुछ मुझे चाहिये सो सब मेरे पास है। जब उस ने उस को इस भांति बिनती करके दबाया तब उस ने उस को ग्रहण किया। १२ फिर एसाव् ने कहा आ हम बढ़ चलें १३ और मैं तेरे आगे आगे चलूंगा। पर याकूब ने कहा हे मेरे प्रभु तू तो जानता है कि मेरे साथ सुकुमार सुकुमार लड़के हैं और दूध देनेहारी भेड़ बकरियां और गायें भी हैं सो यदि ये पशु

एक दिन भी अधिक हांके जावें तो सब के सब मर जावेंगे। सो हे मेरे प्रभु कृपा करके मुझ अपने दास के आगे बढ़ मैं भी इन पशुओं की शक्ति अनुसार और लड़केबालों की शक्ति अनुसार धीरे धीरे चलके अन्त को तुझ अपने प्रभु के पास सेईर् में पहुंचूंगा। तब एसाव् ने कहा तेरी इच्छा हो तो जो लोग मेरे संग हैं उन में से मैं कई एक तेरे साथ छोड़ जाऊं पर उस ने कहा तू ऐसा क्यों करे इतना ही बहुत है कि तुझ मेरे प्रभु की अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर बनी रहे। यह सुनके एसाव् ने उसी दिन सेईर् को लौट जाने के लिये अपना मार्ग लिया।

१४ ... १५ ... १६ ... १७ और याकूब वहां से कूंच करके सुक्कोत् को गया और वहां अपने लिये एक घर और पशुओं के लिये झोंपड़े बनाये इसी कारण उस स्थान का नाम सुक्कोत्[1] पड़ा।

१८ इस भान्ति याकूब पद्दनराम् से चलके कनान् देश के शकेम् नाम नगर के पास कुशल क्षेम से पहुंचा और उसी नगर के साम्हने डेरे खड़े किये। १९ और भूमि के जिस खण्ड पर उस ने अपना तम्बू खड़ा किया था उस को उस ने शकेम् के पिता हमोर् के पुत्रों के हाथ से एक सौ कसीतों में मोल लिया। २० और वहां उस ने एक बेदी बनाके उस का नाम एलेलोहे इस्राएल्[2] रक्खा।

(१) अर्थात् झोंपड़े.

(२) अर्थात् ईश्वर इस्राएल् का परमेश्वर.

(दीना के भ्रष्ट किये जाने का बर्णन.)

३४ १ इस के पीछे एक दिन लेआ की बेटी दीना जिसे वह याकूब की जन्माई जनी थी सो उस देश की लड़कियों से भेंट करने को निकली। २ सो उसे उस देश के प्रधान हित्ती हमोर् के पुत्र शकेम् ने देखा और उसे ले जाकर उस के साथ कुकर्म्म करके उस को भ्रष्ट कर डाला। ३ फिर उस का जी जो याकूब की बेटी दीना से अटक गया इस से उस ने उस कन्या से प्रीति की बातें कह कहके उस को धीरज बन्धाया। ४ फिर शकेम् ने अपने पिता हमोर् से कहा मुझे इस लड़की को मेरी स्त्री होने के लिये दिला दे। ५ इतने में याकूब ने सुना कि शकेम् ने मेरी बेटी दीना को अशुद्ध कर डाला है उस समय उस के पुत्र पशुओं के संग चौगान में थे सो वह उन के आने लों चुप रहा। ६ इतने में शकेम् का पिता हमोर् निकलके याकूब से बातचीत करने को उस के पास गया। ७ और याकूब के पुत्र सुनते ही चौगान से आये और वे निपट उदास और अति क्रोधित थे क्योंकि शकेम् ने जो याकूब की बेटी के साथ कुकर्म्म किया सो इस्राएल् के घराने से मूर्खता का काम किया था क्योंकि ऐसा काम कभी उचित भी नहीं। ८ सो हमोर् ने उन से कहा मेरे पुत्र शकेम् का मन तुम्हारी बेटी पर

बहुत लगा है सो कृपा करके उसे उस को दे देओ कि वह उस की स्त्री होवे। ९ और अपनी बेटियां हम को दिया करो और हमारी बेटियों को आप अपने लिये लिया करो इस रीति १० समधी होके हमारे संग बसे रहो और यह देश तुम्हारे साम्हने है सो इस में बास करके लेन देन करो और इस में की भूमि निज कर लेओ। ११ फिर शकेम् ने भी दीना के पिता और भाइयों से कहा यदि मुझ पर तुम लोगों की अनुग्रह की दृष्टि होवे तो जो कुछ तुम मुझ से कहो सो मैं दूंगा। १२ तुम मुझ से दीना के लिये कितना ही मूल्य अथवा बदला क्यों न मांगो तौभी तुम्हारे कहे के अनुसार ही मैं दूंगा पर इतना हो कि मुझे उस कन्या को १३ मेरी स्त्री होने के लिये दो। पर शकेम् ने जो याकूब के पुत्रों की बहिन दीना को अशुद्ध किया इस लिये उन्हों ने शकेम् और उस के पिता हमोर् को छल के १४ साथ उत्तर दिया कि हम ऐसा काम नहीं कर सकते कि किसी खतना-रहित पुरुष को अपनी बहिन दें क्योंकि १५ इस से हमारी नामधराई होगी। हां इस बात पर तो हम तुम्हारी मान लेंगे कि तुम में से एक एक पुरुष का हमारे समान खतना किया जावे। १६ तो हम अपनी बेटियां तुम्हें ब्याह देंगे और तुम्हारी बेटियां ब्याह लेंगे और तुम्हारे संग बसे भी रहेंगे और इस रीति हम दोनों एक ही समुदाय के मनुष्य हो जावेंगे। १७ पर यदि तुम हमारी मानके अपना खतना न कराओ तो हम अपनी लड़की लेके चले जावेंगे। १८ उन की इस बात पर हमोर् और उस का पुत्र शकेम् प्रसन्न हुए। १९ और वह जवान जो याकूब की बेटी को बहुत चाहता था इस से उस ने वैसा करने में बिलम्ब न किया। वह तो अपने पिता के सारे घराने में से अधिक प्रतिष्ठित था। २० सो वह और उस का पिता हमोर् अपने नगर के फाटक के निकट जाके नगरबासियों को यों समझाने लगे कि २१ ये मनुष्य जो हैं सो हमारे संग मेल से रहने चाहते हैं सो उन्हें इस देश में रहके लेन देन करने दो देखो देश जो है वह तो बहुत लम्बा चौड़ा होने से उन के और हमारे लिये बहुत है फिर हम लोग उन की बेटियों को ब्याह लेंगे और अपनी बेटियां को उन्हें दिया करेंगे। २२ पर ये मनुष्य केवल इसी बात पर हमारे संग रहना और एक ही समुदाय के मनुष्य हो जाना चाहेंगे कि हमारे सब पुरुषों का उन के समान खतना किया जावे। २३ सोचने की बात है कि उन की भेड़ बकरियां गाय बैल निदान उन के सारे पशु और धन सम्पत्ति हमारे ही हो जावेंगे इतना ही हो कि अब हम लोग उन की मान लें तो वे हमारे संग रहेंगे। २४ सो जितने

उस नगर के फाटक से निकलते थे उन सभों ने हमोर् की ओर उस के पुत्र शकेम् की मानी ओर जितने पुरुष उस नगर के फाटक से निकलते थे सब का खतना किया गया। २५ फिर तीसरे दिन जब वे लोग पीड़ित पड़े थे तब याकूब के पुत्र दीना के भाइयों में से दो भाई शिमोन् और लेवी ने अपनी अपनी तलवार ले उस नगर में निधड़क घुसके सब पुरुषों को घात किया। २६ और उन में हमोर् और उस के पुत्र शकेम् को भी उन्हों ने तलवार से मार डाला और दीना को शकेम् के घर में से निकाल ले गये। २७ तब उन्हों ने जो याकूब के पुत्रों की बहिन को अशुद्ध किया था इस लिये याकूब के पुत्रों ने घात कर डालने पर भी चढ़के नगर को लूट लिया। २८ वे तो उन की भेड़ बकरी गाय बैल और गदहे आदि जो कुछ उन का नगर वा चैागान में था सब ले गये। २९ इस रीति उन के सारे धन बाल बच्चों और स्त्रियों को वे हर ले गये और घर घर में जो कुछ था उस को लूट लिया। ३० यह हाल सुनके याकूब ने शिमोन् और लेवी से कहा तुम ने जो इस देश के निवासी कनानियों और परिज्जियों के मन में मुझ से घिन कराई है इस से तुम ने मुझे संकट में डाला है क्योंकि मेरे साथ तो थोड़े ही लोग हैं सो अब वे एकट्ठे होके मुझ पर चढ़ेंगे और मुझे मार लेंगे और मैं अपने घराने समेत उच्छिन्न हो जाऊंगा। ३१ तब उन्हों ने उत्तर दिया क्या हम अपनी बहिन पर बेश्या का सा अत्याचार होते देख सकते थे।

(बिन्यामीन् की उत्पत्ति और राहेल् की मृत्यु का वर्णन.)

३५ १ फिर परमेश्वर ने याकूब से कहा यहां से कूंच करके बेतेल् को जा और वहीं रह और वहां मेरी अर्थात् उस ईश्वर की एक बेदी बना जिस ने उस समय तुझे दर्शन दिया जब तू अपने भाई एसाव् के डर से भागा जाता था। २ यह आज्ञा पाके याकूब ने अपने घराने और अपने सब संगियों से कहा तुम्हारे बीच में जितने पराये देवता हैं सब को निकाल फेंको और शुद्ध होके अपने बस्त्र बदल डालो। ३ और हम यहां से कूंच करके बेतेल् को जावें और मैं वहां उस ईश्वर की एक बेदी बनाऊंगा जिस ने मुझे संकट के दिन उत्तर दिया और जिस मार्ग से मैं चलता था उस में मेरे संग संग रहा। ४ सो पराये देवताओं की जितनी मूर्त्तियां उन के पास थीं और जो कुण्डल उन के कानों में थे सो सब उन्हों ने याकूब को दिये और उस ने उन को उस बांज वृक्ष के नीचे जो शकेम् के पास है गाड़ दिया। ५ तब उन्हों ने कूंच कर दिया और उन की चारों ओर के नगरनिवासियों के

मन में परमेश्वर की ओर से ऐसा भय समा गया कि उन्हों ने याकूब के ६ पुत्रों का पीछा न किया। सो याकूब अपने सब संगियों समेत कनान् देश के लूज् नगर को आया और उसी का ७ नाम बेतेल् भी है। वहां उस ने एक बेदी बनाई और उस स्थान का नाम एल्बेतेल्[1] रक्खा क्योंकि जब वह अपने भाई के डर से भागा जाता था तब परमेश्वर उस को वहीं प्रगट हुआ था। ८ उन दिनों रिब्का की दूध पिलाने-हारी धाई दबोरा मर गई और बेतेल् के नीचे बांज वृक्ष के तले उस को मिट्टी दिई गई और याकूब ने उस बांज का नाम अल्लोन्बक्कूत्[2] रक्खा।

९ फिर याकूब के पद्दनराम् से आने के उपरान्त परमेश्वर ने दूसरी बार उस को दर्शन देके आशीष दिई। १० और परमेश्वर ने उस से कहा तेरा नाम तो याकूब है पर अब तेरा नाम याकूब न रहेगा पर इस्राएल् ही होवेगा इस प्रकार उस ने उस का ११ नाम इस्राएल् रक्खा। फिर परमेश्वर ने उस से कहा मैं सर्वशक्तिमान् ईश्वर हूं तू फूले फले और बढ़े और तुझ से एक जाति बल्कि जातियों की एक मण्डली उत्पन्न होवे और तेरे बंश में १२ राजा उत्पन्न होवें। और जो देश मैं ने इब्राहीम और इस्हाक् को दिया है वही देश तुझे और तेरे पीछे तेरे बंश को भी देऊंगा। इतना कह १३ परमेश्वर उस स्थान में जहां उस ने याकूब से बातें किई थीं उस के पास से ऊपर चढ़ गया। और जिस स्थान १४ में परमेश्वर ने याकूब से बातें किई थीं उसी में उस ने पत्थर का एक खम्भा खड़ा किया और उस पर अर्घ्य देके तेल डाल दिया। और जहां पर- १५ मेश्वर ने याकूब से बातें किई थीं उस स्थान का नाम उस ने बेतेल् ही रक्खा। फिर उन्हों ने बेतेल् से कूंच १६ किया और जब उन्हें एप्राता को पहुंचने में थोड़ी ही दूर रह गया तब राहेल् को जनने की बड़ी पीरें आने लगीं। और जब उस को बड़ी १७ बड़ी पीरें उठती थीं तब जनाई धाई ने उस से कहा मत डर क्योंकि अब की बेर भी तेरे बेटा ही होवेगा। तब १८ वह मर गई और प्राण निकलते निकलते उस ने उस बेटे का नाम बेनोनी[1] रक्खा पर उस के पिता ने उस का नाम बिन्यामीन्[2] रक्खा। सो १९ राहेल् मर गई और एप्राता जो बेत्लेहेम् भी कहावता है तिस के मार्ग में उस को मिट्टी दिई गई। और २० याकूब ने उस की कबर पर एक खम्भा खड़ा किया वह राहेल् की कबर का

(१) अर्थात्. बेतेल् का ईश्वर.
(२) अर्थात्. रुलाई का बांज.

(१) अर्थात्. मेरा शोकमूल पुत्र.
(२) अर्थात्. दहिने हाथ का पुत्र.

२१ खम्भा आज लों बना है। फिर इस्राएल् ने कूंच किया और एदेर् के गुम्मट के आगे बढ़के अपना तम्बू खड़ा किया। २२ और जब इस्राएल् उस देश में बस गया तब एक दिन रूबेन् ने जाके अपने पिता की उढ़री बिल्हा के साथ कुकर्म्म किया और यह बात इस्राएल् के सुनने में रह न गई।

२३ याकूब के बारह पुत्र हुए। उन में से लेआ के तो पुत्र ये हुए अर्थात् याकूब का जेठा रूबेन् फिर शिमोन् लेवी यहूदा इस्साकार् और जबूलून्। २४ और राहेल् के पुत्र ये हुए अर्थात् २५ यूसुफ और बिन्यामीन्। और राहेल् की लौंडी बिल्हा के पुत्र ये हुए २६ अर्थात् दान् और नप्ताली। और लेआ की लौंडी जिल्पा के पुत्र ये हुए अर्थात् गाद् और आशेर् याकूब के ये ही पुत्र हुए जो उस से पद्दनराम् में जन्मे।

२७ निदान याकूब मम्रे में अपने पिता इस्हाक् के पास आया अर्थात् वह किर्यतर्बा में आया जो हेब्रोन् भी कहावता है और वहीं इब्राहीम और २८ इस्हाक् परदेशी होके रहे थे। और इस्हाक् की अवस्था एक सौ अस्सी २९ बरस की हुई। निदान इस्हाक् का पुरनिया और दीर्घायु होने पर प्राण छूट गया और वह अपने लोगों में जा मिला और उस के पुत्र एसाव् और याकूब ने उस को मिट्टी दिई।

(एसाव् की बंशावली.)

३६ फिर एसाव् की जो एदोम् १ भी कहावता है यह बंशावली है। एसाव् ने तो कनानी लड़कियां २ ब्याह लिईं अर्थात् हित्ती एलोन् की बेटी आदा को और ओहोलीबामा को जो अना की बेटी और सिबोन् की नतिनी थी। फिर उस ने इश्माएल् ३ की बेटी बासमत् को भी जो नबायोत् की बहिन थी ब्याह लिया। सो आदा ४ तो एसाव् के जन्माये एलीपज् को और बासमत् रूएल् को जनी। और ओहो- ५ लीबामा यूश् यालाम् और कोरह् को जनी एसाव् के ये ही पुत्र कनान् देश में जन्मे। पीछे एसाव् अपनी ६ स्त्रियों और बेटे बेटियों बल्कि घर के सब प्राणियों और अपनी भेड़ बकरी गाय बैल आदि सब पशुओं को निदान अपनी सारी सम्पत्ति को जो उस ने कनान् देश में संचय किई थी लेके अपने भाई याकूब के पास से दूसरे देश को चला गया। क्योंकि उन ७ की सम्पत्ति इतनी हो गई थी कि वे एकट्ठे न रह सके और पशुओं की बहुतायत के मारे उस देश में जहां वे परदेशी होके रहे थे उन की समाई न रही। सो एसाव् जो एदोम् भी ८ कहावता है सेईर् नाम पहाड़ी देश में रहने लगा। और एसाव् जो एदोमी ९ जाति का मूलपुरुष है तिस के सेईर् नाम पहाड़ी देश में रहनेहारे बंश का

१० यह वृत्तान्त है । एसाव् के पुत्रों के नाम ये हैं अर्थात् एसाव् की स्त्री आदा का पुत्र एलीपज् और उसी एसाव् की स्त्री बासमत् का पुत्र रूएल्। ११ और एलीपज् के ये पुत्र हुए अर्थात् तेमान् ओमार् सपो गाताम् और १२ कनज् । और एसाव् के पुत्र एलीपज् के तिम्ना नाम एक उढ़री भी थी सो वह एलीपज् के जन्माये अमालेक् को जनी एसाव् की स्त्री आदा के बंश में १३ ये ही हुए। और रूएल् के ये पुत्र हुए अर्थात् नहत् जेरह् शम्मा और मिज्जा एसाव् की स्त्री बासमत् के बंश में १४ ये ही हुए । और ओहोलीबामा जो एसाव् की स्त्री और सिबोन् की पुत्री अना की बेटी थी तिस के ये पुत्र हुए अर्थात् वह एसाव् के जन्माये यूश् १५ यालाम् और कोरह् को जनी। एसाव्-बंशियों के अधिपति ये हैं अर्थात् एसाव् के जेठे एलीपज् के बंश में से तेमान् अधिपति ओमार् अधिपति सपो १६ अधिपति कनज् अधिपति कोरह् अधिपति गाताम् अधिपति अमालेक् अधिपति एलीपज्बंशियों में से एदोम् देश में ये ही अधिपति हुए और ये ही १७ आदा के बंश में हुए। और एसाव् के पुत्र रूएल् के बंश में ये हुए अर्थात् नहत् अधिपति जेरह् अधिपति शम्मा अधिपति मिज्जा अधिपति रूएल्बंशियों में से एदोम् देश में ये ही अधिपति भये और ये ही एसाव् की स्त्री बासमत् के बंश में हुए । और एसाव् की १८ स्त्री ओहोलीबामा के बंश में ये हुए अर्थात् यूश् अधिपति यालाम् अधिपति कोरह् अधिपति अना की बेटी ओहोलीबामा जो एसाव् की स्त्री थी तिस के बंश में ये ही हुए। एसाव् जो १९ एदोम् भी कहावता है तिस के बंश ये ही हैं और उन के अधिपति ये ही हैं ।

सेईर् जो होरी था तिस के ये पुत्र २० उस देश में रहते थे अर्थात् लोतान् शोबाल् सिबोन् अना दीशोन् एसेर् २१ और दीशान् होरियों के ये ही अधिपति जो सेईर् के बंश थे एदोम् देश में हुए । और लोतान् के पुत्र होरी २२ और हेमाम् भये और लोतान् की बहिन तिम्ना थी । और शोबाल् के २३ ये पुत्र हुए अर्थात् अल्वान् मानहत् एबाल् शपो और ओनाम् । और २४ सिबोन् के ये पुत्र हुए अर्थात् अय्या और अना यह वही अना है जिस को अपने पिता सिबोन् के गदहों को चराते चराते बन में तप्तकुण्ड मिले । और अना के दीशोन् नाम पुत्र हुआ २५ और उसी अना के ओहोलीबामा नाम बेटी हुई । और दीशोन् के ये पुत्र २६ हुए अर्थात् हेम्दान् एश्बान् यित्रान् और करान् । एसेर् के ये पुत्र हुए २७ अर्थात् बिल्हान् जावान् और अकान् । दीशान् के ये पुत्र हुए अर्थात् ऊस् २८ और अरान् । होरियों के अधिपति ये २९ हुए अर्थात् लोतान् अधिपति शोबाल्

अधिपति सिबोन् अधिपति अना अधि-
३० पति दीशोन् अधिपति एसेर् अधि-
पति दीशान् अधिपति सेईर् देश में
होरियों के ये ही अधिपति हुए।
३१ फिर इस्राएल्‌बंशियों पर किसी
राजा के राज्य करने से पहिले एदोम्
३२ के देश में ये राजा हुए अर्थात् बोर्
के पुत्र बेला ने एदोम् में राज्य किया
और उस की राजधानी का नाम
३३ दिन्हाबा है। बेला के मरने पर
बोस्रानिवासी जेरह् का पुत्र योबाब् उस
३४ के स्थान पर राजा हुआ। और योबाब्
के मरने पर तेमानियों के देश का
निवासी हूशाम् उस के स्थान पर
३५ राजा हुआ। फिर हूशाम् के मरने
पर बदद् का पुत्र हदद् उस के स्थान
पर राजा हुआ यह वही है जिस ने
मिद्यानियों को मोआब् के चौगान में
मार लिया और उस की राजधानी
३६ का नाम अवीत् है। और हदद् के
मरने पर मस्रे का बासी सम्ला उस के
३७ स्थान पर राजा हुआ। फिर सम्ला
के मरने पर शाऊल् जो महानद
के तटवाले रहोबोत् नगर का था सो
३८ उस के स्थान पर राजा हुआ। और
शाऊल् के मरने पर अक्‌बोर् का पुत्र
बाल्हानान् उस के स्थान पर राजा
३९ हुआ। और अक्‌बोर् के पुत्र बाल्हा-
नान् के मरने पर हदर् उस के स्थान
पर राजा हुआ और उस की राज-
धानी का नाम पाऊ है और उस की
स्त्री का नाम महेतबेल् है जो मेजाहाब्
की नतिनी और मत्रेद् की बेटी थी।
४० और एसाव्‌बंशियों के अधिपतियों के
नाम उन के कुलों और स्थानों के
अनुसार ये हैं अर्थात् तिम्ना अधिपति
४१ अल्वा अधिपति यतेत् अधिपति ओ-
होलीबामा अधिपति एला अधिपति
४२ पीनोन् अधिपति कनज् अधिपति
तेमान् अधिपति मिब्सार् अधि-
४३ पति मग्दीएल् अधिपति ईराम्
अधिपति एदोम्‌बंशियों के निवास-
स्थानों में उस देश में जो उन्हों ने
अपना कर लिया था उन के ये ही
अधिपति हुए और एदोम् जाति का
मूलपुरुष एसाव् ही है।

(यूसुफ के बेचे जाने का वर्णन.)

३७ याकूब उसी देश में जिस १
में उस का पिता परदेशी
था अर्थात् कनान् देश में रहता था।
२ याकूब के बंश का बृत्तान्त यह है कि
यूसुफ जो सत्तरह बरस का था सो
अपने भाइयों के संग भेड़ बकरियों को
चराता था और वह लड़का यूसुफ
अपने पिता की स्त्री बिल्हा और जिल्पा
के पुत्रों के संग रहा करता था सो वह
उन की बुराइयों का समाचार उन के
पिता के पास पहुंचाया करता था।
३ यूसुफ जो इस्राएल् के बुढ़ापे का पुत्र
था इस से इस्राएल् अपने सब पुत्रों
से अधिक उसी से प्रीति रखता था
सो उस ने उस के लिये रंगबिरंगा

४ अंगरखा बनवाया । और जब उस के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता हम सब भाइयों से अधिक उसी से प्रीति रखता है तब उन्हों ने उस से बैर किया और उस के साथ मेल की बातें ५ न कर सकते थे । उन दिनों यूसुफ ने एक स्वप्न देखके अपने भाइयों से उस का वर्णन किया पर उन्हों ने सुनके उस से और भी अधिक बैर किया । ६ उस ने उन से कहा कृपा करके सुनो ७ कि मैं ने क्या स्वप्न देखा है । माना क्या देखता हूं कि हम लोग चैागान में पूले बान्ध रहे हैं फिर क्या देखा कि मेरा पूला उठके खड़ा हो गया फिर क्या हुआ कि तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को घेरके उसे दण्डवत् किया । ८ यह सुनके उस के भाइयों ने उस से कहा क्या सचमुच तू हमारे ऊपर राज्य करेगा अथवा सचमुच तू हम पर प्रभुता करेगा सो उन्हों ने उस के स्वप्नों और उस की बातों के कारण उस से और भी अधिक बैर किया । ९ फिर उस ने एक और स्वप्न देखा और अपने भाइयों से उस का भी यों बर्णन किया कि सुनो मैं ने एक और स्वप्न देखा है कि सूर्य्य और चन्द्रमा और ग्यारह तारे मुझे दण्डवत् कर रहे १० हैं । सो उस ने यह स्वप्न अपने पिता और भाइयों से बर्णन किया तब उस के पिता ने उस को दपटके कहा यह कैसा स्वप्न है जो तू ने देखा है क्या सचमुच मैं और तेरी माता और तेरे भाई सब आकर तेरे आगे भूमि पर गिरके दण्डवत् करेंगे । उस के भाई ११ तो उस से डाह रखते थे पर उस के पिता ने उस बचन को स्मरण रक्खा । फिर उस के भाई अपने पिता की भेड़ १२ बकरियों को चराने के लिये शकेम् को गये । तब इस्राएल् ने यूसुफ से कहा १३ क्या तेरे भाई शकेम् में नहीं चराते सो जा मैं तुझे उन के पास भेजता हूं उस ने कहा जो आज्ञा । उस ने उस १४ से कहा जा अपने भाइयों और भेड़ बकरियों का हाल देखके मेरे पास समाचार ले आ सो उस ने उस को हेब्रोन् के खड्ड में से भेज दिया और वह शकेम् के पास पहुंचा था कि किसी १५ जन ने उस को चैागान में भ्रमते हुए पाके उस से पूछा तू क्या ढूंढ़ता है । उस ने कहा मैं तो अपने भाइयों को १६ ढूंढ़ता हूं कृपा करके मुझे बता कि वे कहां चरा रहे हैं । उस जन ने कहा १७ वे यहां से चले गये हैं और मैं ने उन को यह कहते सुना कि आओ हम दोतान् को चलें इतना सुनके यूसुफ अपने भाइयों के पास चला और उन्हें दोतान् में पाया । जब उन्हों ने उस १८ को आते दूर से देखा तब उस के निकट आने से पहिले उसे मार डालने को छल की युक्ति बिचारने लगे । और वे १९ आपस में कहने लगे देखो वह स्वप्न देखनेहारा आता है । सो आओ अब २०

हम उस को घात करके किसी गड़हे में डाल देवें तो हम कहेंगे कि कोई दुष्ट जन्तु उस को खा गया तब देखेंगे कि उस के स्वप्नों का क्या फल होता २१ है। यह सुनके रूबेन् ने उस को उन के हाथ से बचाने की मनसा से कहा २२ हम उस को प्राण से न मारें। फिर रूबेन् ने उन से कहा उस का लोहू मत बहाओ हां उस को बन के इस गड़हे में डाल तो दो पर उस पर हाथ मत उठाओ उस ने यह बात इस मतलब से कही कि उस को उन के हाथ से छुड़ाके पिता के पास २३ फिर पहुंचावे। सो जब यूसुफ अपने भाइयों के पास पहुंच गया तब उन्हों ने उस का अंगरखा जो वह रंगबिरंगा २४ पहिने था उतार लिया और यूसुफ को लेके एक गड़हे में डाल दिया गड़हा तो सूखा था उस में कुछ भी जल २५ न था। ऐसा करके वे रोटी खाने को बैठ गये और जो आंखें उठाईं तो क्या देखा कि इश्माएलियों का एक दल गिलाद् से चला आता है और वे अपने ऊंटों पर सुगन्ध द्रव्य बलसान् और गन्धरस लादे हुए मिस्र को चले २६ जाते हैं। उन को देखके यहूदा ने अपने भाइयों से कहा अपने भाई को घात करने और उस का खून छिपाने २७ से क्या लाभ होगा। आओ हम उसे इन इश्माएलियों के हाथ बेच डालें और अपना हाथ उस पर न उठावें क्योंकि भाई तो अपना हाड़ ही मांस है यह सुनके उस के भाइयों ने उस की मानी। तब मिद्यानी ब्योपारी २८ लोग उधर से होके चले सो यूसुफ के भाइयों ने उस को उस गड़हे में से खींचके निकाला और इश्माएलियों के हाथ रूपे के बीस टुकड़ों में बेच दिया और वे यूसुफ को मिस्र में ले गये। इतने में रूबेन् ने गड़हे पर २९ लौटके क्या देखा कि यूसुफ गड़हे में नहीं है सो उस ने अपने बस्त्र फाड़े और अपने भाइयों के पास ३० लौटके कहा लड़का तो नहीं है अब मैं किधर जाऊं। फिर उन्हों ३१ ने यूसुफ के अंगरखे को लिया और एक बकरे को बध करके अंगरखे को उस के लोहू में बोड़ दिया। और उस ३२ रंगबिरंगे अंगरखे को अपने पिता के पास भेजके कहला दिया कि यह हम को मिला है सो देखके पहिचान ले कि तेरे पुत्र का अंगरखा है कि नहीं। उस ने उस को पहिचान लिया और ३३ कहा हां मेरे पुत्र ही का तो अंगरखा है किसी दुष्ट जन्तु ने उस को खा लिया होगा निःसन्देह यूसुफ फाड़ डाला गया होगा। तब याकूब ने अपने ३४ बस्त्र फाड़के कटि में टाट पहिना और अपने पुत्र के लिये बहुत दिन लों बिलाप करता रहा। यह देखके ३५ उस के सब बेटे बेटियां उस को शान्ति देने का यत्न तो करती थीं पर उस

को शान्ति आई ही नहीं पर वह कहता रहा सो नहीं मैं तो बिलाप करता हुआ अपने पुत्र के पास अधोलोक में उतर जाऊंगा इस भान्ति उस का पिता उस के लिये रोता रहा। ३६ फिर मिद्यानियों ने यूसुफ को मिस्र में ले जाके पोतीपर् के हाथ जो फिरौन का एक खोजा और जल्लादों का प्रधान था बेच डाला।

(यहूदा के पुत्रों की उत्पत्ति का बर्णन.)

३८ उन्हीं दिनों में यहूदा अपने भाइयों के पास से चला गया और जाते जाते हीरा नाम एक अदुल्लाम्बासी पुरुष के २ पास डेरा किया। वहां यहूदा ने शू नाम एक कनानी पुरुष की बेटी को देखा और उस को ब्याहके उस के ३ पास गया। वह गर्भवती होके एक पुत्र जनी और यहूदा ने उस का नाम ४ एर् रक्खा। और वह फिर गर्भवती होके एक पुत्र और जनी और उस का ५ नाम ओनान् रक्खा। फिर वह एक पुत्र और जनी और उस का नाम शेला रक्खा और जिस समय वह इस को जनी उस समय यहूदा कजीब् में ६ रहता था। फिर यहूदा ने अपने जेठे एर् का तामार् नाम एक स्त्री से ७ बिवाह किया। पर यहूदा का जेठा एर् यहोवा के लेखे में दुष्ट था इस लिये यहोवा ने उस को मार डाला। ८ सो यहूदा ने ओनान् से कहा अपनी भौजाई के पास जा और उस के साथ देवर का धर्म्म करके अपने भाई के लिये सन्तान जन्मा। ९ पर ओनान् जानता था कि सन्तान मेरा न ठहरेगा सो जब वह अपनी भौजाई के पास गया तब उस ने भूमि पर स्खलित करके नष्ट किया न हो कि उस को अपने भाई के लिये सन्तान उत्पन्न करना पड़े। १० पर जो काम उस ने किया सो यहोवा को बुरा लगा और उस ने उस को भी मार डाला। ११ यह हाल देखके यहूदा ने इस डर के मारे कि कहीं ऐसा न हो कि अपने भाइयों की नाईं शेला भी मरे अपनी बहू तामार् से कहा जब लों मेरा पुत्र शेला समर्थ न होवे तब लों अपने पिता के घर में बिधवा ही बैठी रह सो तामार् जाके अपने पिता के घर में बैठी रही। १२ जब बहुत दिन बीत गये तब यहूदा की स्त्री जो शू की बेटी थी सो मर गई फिर यहूदा शोक से छूटके अपने मित्र हीरा अदुल्लाम्बासी समेत तिम्ना को अपनी भेड़ बकरियों का रोआं कतराने के लिये गया। १३ जब तामार् को यह समाचार मिला कि तेरा ससुर तिम्ना को अपनी भेड़ बकरियों का रोआं कतराने के लिये जाता है १४ तब उस ने अपने बिधवापन का पहिरावा उतारा और एक बुर्का डालके अपने को ढांप लिया और एनैम् के द्वार पर जो तिम्ना के मार्ग में है जा बैठी

क्योंकि उस ने देखा था कि शेला तो समर्थ हुआ है पर तौभी मैं उस की १५ स्त्री नहीं होने पाई। जब यहूदा ने उस को देखा तब उस को वेश्या समझा क्योंकि उस ने अपने मुंह को ढांप १६ लिया था। सो उस ने उसे अपनी बहू न जानकर मार्ग ही में उस की ओर फिरके कहा कृपा करके मुझे अपने पास आने दे तब उस ने कहा मैं तुझ को अपने पास आने देऊं तो १७ तू मुझे क्या देगा। उस ने कहा मैं अपनी भेड़ बकरियों में से बकरी का एक बच्चा तेरे पास भेज दूंगा फिर उस ने कहा तो उस के भेजने लों क्या १८ तू मेरे पास बन्धक रख जावेगा। उस ने पूछा मैं कौन सा बन्धक तेरे पास रख जाऊं उस ने कहा अपनी वह छाप और डोरी और तेरे हाथ में जो छड़ी है ये सब दे सो उस ने उस को ये बस्तें दिईं तब वह उस के पास गया और वह उस से गर्भवती १९ हुई। फिर वह उठके चली गई और अपना बुर्का उतारके अपने बिधवापन २० का पहिरावा फिर पहिन लिया। तब यहूदा ने बकरी का एक बच्चा अपने मित्र उस अदुल्लामूबासी के हाथ भेज दिया कि वह बन्धक को उस स्त्री के हाथ से छुड़ा ले आवे पर वह उस को न २१ मिली। तब उस ने वहां के लोगों से पूछा कि वह देवदासी कहां है जो एनैम् में मार्ग की एक ओर बैठी थी

पर उन्हों ने कहा यहां तो कोई देवदासी न थी। सो उस ने यहूदा २२ के पास लौटके कहा मुझे तो वह नहीं मिली बल्कि उस स्थान के लोगों ने भी यह कहा कि यहां तो कोई देवदासी न रही। तब यहूदा ने कहा २३ अच्छा वह बन्धक उसी के पास रहने दे नहीं तो हम लोगों को लज्जित होना पड़ेगा देख मैं ने तो बकरी का यह बच्चा भेज दिया पर वह तुझे नहीं मिली। तीन महीने के पीछे २४ यहूदा को यह समाचार मिला कि तेरी बहू ने व्यभिचार किया बल्कि वह व्यभिचार से गर्भवती भी हुई यह सुनके यहूदा ने कहा उस को बाहर ले आओ कि वह जलाई जावे। जब उसे निकाल रहे थे तब उस ने २५ अपने ससुर के पास कहला भेजा कि जिस पुरुष की ये बस्तें हैं उसी से मैं गर्भवती हूं फिर उस ने कहा पहिचान तो सही कि यह छाप और डोरी और छड़ी किस की हैं। यहूदा ने उन्हें २६ पहिचानके कहा वह तो मुझ से अधिक धर्म्मी है क्योंकि मैं ने जो उसे अपने पुत्र शेला को न ब्याह दिया इसी से उस ने यह काम किया। और उस ने उस से फिर कभी प्रसंग न किया। जब तामार् के जनने २७ का समय आया तब क्या जान पड़ा कि उस के गर्भ में जुड़ेरे हैं। फिर जब वह जनने लगी तब एक २८

बालक ने अपना हाथ बढ़ाया और जनाई धाई ने लाल सूत लेके उस के हाथ में यह कहती हुई बान्ध दिया कि पहिले यही निकला। २९ फिर जब उस ने हाथ समेट लिया तब उस का भाई निकल पड़ा और उसे देखके जनाई धाई ने कहा तू ने क्यों दरार कर लिया है इस कारण उस का नाम पेरेस्[1] रक्खा ३० गया। और पीछे उस का भाई भी निकला जिस के हाथ में वह लाल सूत बन्धा था और उस का नाम जेरह् रक्खा गया।

(यूसुफ के बन्दीगृह में पड़ने और उस से छूटने का वर्णन.)

३९ जब यूसुफ को मिस्र में ले गये तब पोतीपर् नाम एक मिस्री जो फिरौन का खोजा और जल्लादों का प्रधान था उस ने उस को उस के ले आनेहारे इश्माएलियों के २ हाथ से मोल लिया। पर यहोवा यूसुफ के संग संग रहा सो वह भाग्यमान पुरुष हुआ और वह अपने उस मिस्री स्वामी के घर में रहा करता ३ था। सो उस के स्वामी ने देखा कि यहोवा उस के संग संग रहता है और जो काम वह करता है उस को यहोवा उस के हाथ से सुफल कर देता है। ४ इस लिये उस का अनुग्रह की दृष्टि यूसुफ पर हुई और वह उस का टहलुआ ठहराया गया फिर पोतीपर् ने उस को अपने घर का अधिकारी किया और अपना सर्वस्व उस के हाथ में सौंप दिया। ५ और जब से उस ने उस को अपने घर और अपने सर्वस्व का अधिकारी किया तब से यहोवा ने यूसुफ की खातिर उस मिस्री के घर पर आशीष दिई और क्या घर में क्या चौगान में उस का जो कुछ था सब पर यहोवा की आशीष हुई। ६ यह देखकर पोतीपर् ने अपना सब कुछ यूसुफ के हाथ में छोड़ दिया बल्कि अपने खाने की रोटी को छोड़ वह अपनी सम्पत्ति के विषय में कुछ न जानता था। यूसुफ तो सुन्दर और रूपवान् था। ७ इस कारण उन बातों के पीछे यूसुफ के स्वामी की स्त्री ने उस की ओर आंख लगाई और कहा मेरे साथ सो। ८ पर उस ने नकारके अपने स्वामी की स्त्री से कहा देख जो कुछ इस घर में मेरे हाथ में है उस के बिषय में मेरा स्वामी कुछ नहीं जानता और उस ने अपना सर्वस्व मेरे ही हाथ में सौंप दिया है। ९ इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं और उस ने मुझ से कुछ नहीं रख छोड़ा हां तू जो उस की स्त्री है सो तुझ को तो रख छोड़ा पर और कुछ नहीं फिर मैं ऐसी बड़ी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्यों बनूं। १० और यद्यपि वह दिन दिन यूसुफ से बोलती

(१) अर्थात्. टूट पड़ना.

रही तौभी उस ने उस की न सुनी कि कहीं उस के पास लेटे अथवा उस ११ के संग रहे। पर एक दिन क्या हुआ कि वह अपना काम काज करने को घर में गया और सेवकों में से कोई १२ घर में न था। तब उस स्त्री ने उस का बस्त्र पकड़के कहा मेरे साथ सो सुनते ही वह अपना बस्त्र उस के हाथ ही में छोड़के भागा और बाहर निकल १३ गया। फिर जब उस स्त्री ने देखा कि वह अपना बस्त्र मेरे हाथ में छोड़के १४ बाहर भाग गया तब अपने घर के सेवकों को बुलाके उन से कहा देखो वह एक इब्री मनुष्य को हम से ठठोली करने के लिये हमारे पास ले आया है सो मेरे साथ सोने के मतलब से आया तब मैं ऊंचे स्वर से चिल्ला उठी। १५ और जब उस ने मेरी बड़ी चिल्लाहट सुनी तब अपना बस्त्र मेरे पास छोड़के १६ भागा और बाहर निकल गया। फिर वह यूसुफ का बस्त्र यूसुफ के स्वामी के घर आने लों अपने पास रक्खे रही। १७ और उस के आने पर उस ने उस से इस प्रकार की बातें कहीं कि वह इब्री दास जिस को तू हमारे पास ले आया है मुझ से ठठोली करने को मेरे पास १८ आया था। पर जब मैं ऊंचे स्वर से चिल्ला उठी तब वह अपना बस्त्र मेरे १९ पास छोड़के बाहर भाग गया। सो अपनी स्त्री की ये बातें सुनके कि तेरे दास ने मुझ से ऐसा ऐसा काम किया यूसुफ के स्वामी का कोप भड़का। २० और उस ने उस को पकड़ाके एक गुम्मट में जहां राजा के बन्धुवे बन्धे रहते थे डलवा दिया सो वह वहां २१ गुम्मट ही में रहने लगा। पर यहोवा यूसुफ के संग संग रहा और उस पर गुम्मट के दारोगा से कृपा कराई और उस की अनुग्रह की दृष्टि यूसुफ पर २२ हुई। बल्कि गुम्मट के दारोगा ने उन सब बन्धुवों को जो गुम्मट में थे यूसुफ के हाथ में सौंप दिया और जो जो काम वे वहां करते थे उन का करानेहारा २३ वही होता था। उस के बश में जो कुछ था उस में से गुम्मट के दारोगा को कोई बस्तु देखनी न पड़ती थी क्योंकि यहोवा यूसुफ के साथ साथ था और जो कुछ वह करता था यहोवा उस को सुफल कर देता था।

४० १ इन बातों के पीछे मिस्र के राजा के पिलानेहारे और पकानेहारे ने अपने उस स्वामी का २ अपराध किया। तब फिरौन अपने उन दो खोजों पर अर्थात् पिलाने-हारों के प्रधान और पकानेहारों ३ के प्रधान पर क्रोधित हुआ। सो उस ने उन्हें कैद कराके जल्लादों के प्रधान के घर में अर्थात् उसी गुम्मट में जहां यूसुफ बन्धुवा था डलवा ४ दिया। तब जल्लादों के प्रधान ने उन को यूसुफ के हाथ सौंपा और उस ने उन की टहल किई सो वे कुछ दिन

५ लों बन्दीगृह में रहे। एक दिन उन दोनों ने एक ही रात में स्वप्न देखे अर्थात् मिस्र के राजा के पिलानेहारे और पकानेहारे ने जो गुम्मट में बन्धुवे थे होनहार के अनुसार स्वप्न देखे। ६ बिहान को यूसुफ उन के पास गया और उन पर जो दृष्टि किई तो क्या ७ देखा कि वे उदास हैं। सो उस ने फिरौन के उन खोजों से जो उस के साथ उस के स्वामी के घरवाले बन्दीगृह में थे पूछा कि आज तुम्हारे मुंह ८ क्यों सूखे हैं। उन्हों ने उस से कहा हम दोनों ने एक एक स्वप्न देखा है और उन के फल का कोई कहनेहारा नहीं यूसुफ ने उन से कहा क्या स्वप्नों का फल कहना परमेश्वर ही का काम नहीं कृपा करके मुझ से अपना अपना ९ स्वप्न बर्णन करो। सो पिलानेहारों का प्रधान यह कहके अपना स्वप्न यूसुफ से बर्णन करने लगा कि मुझे स्वप्न में क्या देख पड़ा कि मेरे साम्हने १० एक दाखलता है। और उस दाखलता में तीन डालियां हैं और जब उस में मानो कलियां लगीं तब वह फूली भी और उस के गुच्छों में दाख लगके पक ११ गईं। और मानो फिरौन का कटोरा मेरे हाथ में था सो मैं ने उन दाखों को लेके फिरौन के कटोरे में निचोड़ा और कटोरे को फिरौन के हाथ में १२ दिया। तब यूसुफ ने उस से कहा इस का फल यह है कि तीन डाली तो तीन दिन हैं। १३ सो अब से तीन दिन के भीतर फिरौन तुझे बढ़ाके तेरे पद पर फेर ठहरावेगा और तू आगे की नाईं फिरौन का पिलानेहारा होके उस का कटोरा उस के हाथ में फिर दिया करेगा। १४ पर जब तेरा भला होवे तब मुझे अपने मन में रक्खे रहना और मुझ पर कृपा करके फिरौन से मेरी चर्चा चलाना और इस घर से मुझे छुड़वा देना। १५ क्योंकि सचमुच मैं इब्रियों के देश से चुराया गया और यहां भी मैं ने कोई ऐसा काम नहीं किया जिस के हेतु मैं इस गड़हे में डाला जाऊं। १६ जब पकानेहारों के प्रधान ने देखा कि उस स्वप्न का फल अच्छा निकला तब उस ने यूसुफ से कहा मैं ने भी जो स्वप्न देखा है सो यह है कि मानो मेरे सिर पर श्वेत रोटी की तीन टोकरियां हैं। १७ और ऊपर की टोकरी में फिरौन के लिये सब प्रकार की पकी पकाई बस्तें हैं और पक्षी मेरे सिर पर की टोकरी में से उन बस्तुओं को नोच नोचके खा रहे हैं। १८ तब यूसुफ ने उत्तर देके कहा इस का फल यह है कि तीन टोकरी तीन दिन हैं। १९ सो अब से तीन दिन के भीतर फिरौन तेरा सिर कटवाके तुझे एक वृक्ष पर टंगवा देगा और पक्षी तेरी धड़ के मांस को नोच नोचके खावेंगे। २० सो तीसरे दिन जो फिरौन का जन्मदिन था उस ने अपने सब

कर्म्मचारियों की जेवनार किई और उन में से पिलानेहारों के प्रधान और पकानेहारों के प्रधान दोनों को बन्दी-
२१ गृह से निकलवाया और पिलानेहारों के प्रधान को तो पिलानेहारे का पद फेर दिया सो वह कटोरे को
२२ फिरौन के हाथ में देने लगा। और पकानेहारों के प्रधान को उस ने टंगवा दिया जैसा यूसुफ ने उन के स्वप्नों का फल उन से कहा था तैसा
२३ ही हुआ। तौभी पिलानेहारों के प्रधान ने यूसुफ को स्मरण न रक्खा बल्कि उस को भूल ही गया।

४१ फिर पूरे दो बरस बीते पर फिरौन ने एक स्वप्न देखा अर्थात् उस ने यह देखा कि मैं नील नदी के तीर पर खड़ा हूं।
२ और उस नदी में से सात सुन्दर और मोटी मोटी गायें निकलकर कछार की
३ घास चरने लगीं। फिर क्या देखा कि और सात गायें जो कुरूप और डांगर हैं उन के पीछे नदी से निकली आती हैं और ये उन गायों के निकट नदी
४ के तीर पर खड़ी हुईं। तब इन कुरूप और डांगर गायों ने उन सात सुन्दर और मोटी मोटी गायों को खा डाला
५ इतने में फिरौन जाग उठा। और वह फिर सो गया और दूसरा स्वप्न देखा कि एक डंठी में से सात मोटी और अच्छी अच्छी बालें निकली आती
६ हैं। फिर क्या देखा कि सात बालें पतली और पुरवाई से मुर्झाई हुई उन के पीछे निकली आती हैं। और
७ इन पतली बालों ने उन सातों मोटी और अन्न से भरी हुई बालों को निगल लिया तब फिरौन ने जागके देखा कि यह स्वप्न हुआ। भोर को फिरौन
८ का मन व्याकुल हुआ और उस ने मिस्र के सब ज्योतिषियों और पण्डितों को बुलवा भेजा और उन से अपने स्वप्नों का बर्णन किया पर उन में से कोई न था जो उन का फल फिरौन से कह सके। तब पिलानेहारों
९ का प्रधान फिरौन से यह बोल उठा कि मुझे आज के दिन अपने अपराध चेत आते हैं। हे फिरौन जब तू हम
१० अपने दासों से क्रोधित हुआ था और मुझे और पकानेहारों के प्रधान को कैद कराके जल्लादों के प्रधान के घर-वाले बन्दीगृह में डाल दिया था तब
११ वहां हम दोनों जनों ने एक ही रात में होनहार के अनुसार एक एक स्वप्न
१२ देखा। और वहां हमारे साथ एक इब्री जवान था जो जल्लादों के प्रधान का दास था सो हम ने अपना अपना स्वप्न उस से बर्णन किया और उस ने हमारे स्वप्नों का फल हम से कहा हम में से एक एक के स्वप्न का फल उस ने
१३ बता दिया। और जैसा जैसा फल उस ने हम से कहा तैसा ही तैसा निकला भी मुझ को तो महाराज ने मेरा पद फेर दिया पर उस को टंगवा

१४ दिया । यह सुनके फिरौन ने यूसुफ को बुलवा भेजा और वह झटपट गड़हे में से निकाला गया और बाल मुंडवाकर और बस्त्र बदलके फिरौन १५ के पास गया । तब फिरौन ने यूसुफ से कहा मैं ने एक स्वप्न देखा और उस के फल का कहनेहारा कोई नहीं मिला पर मैं ने तेरे विषय में सुना है कि जब वह स्वप्न सुनता तब उन १६ का फल कह देता है । पर यूसुफ ने फिरौन को उत्तर दिया मैं तो कुछ नहीं कर सकता परमेश्वर ही महाराज १७ को शुभ उत्तर देवेगा । सो फिरौन यूसुफ से कहने लगा मैं ने अपने स्वप्न में क्या देखा कि मानो मैं नील नदी १८ के तीर पर खड़ा हूं । फिर क्या देखा कि नदी में से सात मोटी और सुन्दर सुन्दर गायें निकलके कछार की घास १९ चरने लगीं । फिर क्या देखा कि उन के पीछे और सात गायें निकली आती हैं जो दुबली और बहुत कुरूप और डांगर थीं मैं ने तो सारे मिस्र देश में ऐसी कुडौल गायें कभी नहीं देखीं । २० तौभी इन डांगर और कुडौल गायों ने उन पहिली सातों मोटी मोटी २१ गायों को खा डाला । और जब वे उन के पेट में गईं तब यह समझ न पड़ा कि वे उन के पेट में हैं क्योंकि उन का रूप तब भी वैसा ही बुरा रहा जैसा पहिले था इतना देखके मैं जाग उठा । २२ फिर मैं ने दूसरा स्वप्न देखा कि मानो एक ही डंठी में सात अच्छी अच्छी और अन्न से भरी हुई बालें निकली आती हैं । फिर क्या देखता हूं कि उन २३ के पीछे और सात बालें छूछी छूछी और पतली और पुरवाई से मुर्झाई हुई निकलती हैं । पर इन पतली २४ बालों ने उन सात अच्छी अच्छी बालों को निगल लिया । और मैं ने ज्योतिषियों से इन स्वप्नों का बर्णन किया पर उन का समझानेहारा कोई मुझे नहीं मिला । तब यूसुफ ने फिरौन से २५ कहा हे फिरौन तेरे दोनों स्वप्न एक ही अर्थ के हैं परमेश्वर जो काम किया चाहता है सो उस ने तुझ को जताया है । वे सात अच्छी अच्छी गायें सात २६ बरस हैं और वे सात अच्छी अच्छी बालें भी सात बरस हैं स्वप्नों का अर्थ तो एक ही है । फिर उन के पीछे जो २७ डांगर और कुडौल गायें निकलीं सो भी सात बरस हैं और जो सात छूछी और पुरवाई से मुर्झाई हुई बालें हुईं उन का भी फल सात बरस का अकाल है । यह वही बात है जो मैं तुझ से २८ हे फिरौन कह चुका हूं कि परमेश्वर जो काम किया चाहता है सो उस ने तुझ को दिखाया है । सुन सारे मिस्र २९ देश में बड़े सुकाल के सात बरस आनेहारे हैं । और उन के पीछे अकाल के ३० सात बरस आवेंगे और उस समय मिस्र देश में वह सारा सुकाल बिसर जावेगा और अकाल से देश नष्ट होवेगा । और ३१

इस अकाल के कारण जो पीछे आवेगा वह सुकाल देश में स्मरण न रहेगा क्योंकि अकाल अत्यन्त भारी होवेगा। ३२ और महाराज ने जो यह स्वप्न दो बार देखा इस का भेद यह है कि यह बात परमेश्वर की ओर से स्थिर किई हुई है और परमेश्वर उसे शीघ्र ही ३३ पूरा करेगा। सो अब महाराज किसी प्रवीण और बुद्धिमान पुरुष की खोज करके उसे मिस्र देश पर प्रधान ठह- ३४ रावे। इस से अधिक महाराज देश पर अधिकारियों को ठहराके उन के द्वारा जब लों सुकाल के सात बरस रहेंगे तब लों मिस्र देश की उपज का ३५ पंचमांश लिया करे। सो वे इन आने-हारे अच्छे बरसों में सब प्रकार की भोजनबस्तु को बटोरके नगर नगर में अन्न की राशियां भोजन के लिये तेरे ३६ बश में करके उन की रक्षा करें। और वह भोजनबस्तु अकाल के उन सात बरसों के लिये जो मिस्र देश में आवेंगे देश के भोजन के निमित्त रक्खी रहे इस प्रकार देश उस अकाल से उच्छिन्न ३७ न होवेगा। यूसुफ का यह बचन फिरौन और उस के सारे कर्म्मचारियों ३८ को अच्छा लगा। सो फिरौन ने अपने कर्म्मचारियों से कहा इस पुरुष के समान जिस में परमेश्वर का आत्मा ३९ है क्या और कोई ऐसा मिलेगा। और फिरौन ने यूसुफ से कहा परमेश्वर ने जो तुझे इतना ज्ञान दिया है और

तेरे तुल्य कोई प्रवीण और बुद्धिमान नहीं इस कारण तू ही मेरे घर का ४० अधिकारी होगा तेरी ही आज्ञा के अनुसार मेरी सारी प्रजा चलेगी केवल राजगद्दी के विषय मैं तुझ से बड़ा ठहरूंगा। फिर फिरौन ने यूसुफ से ४१ कहा देख मैं ने तुझ को मिस्र के सारे देश के ऊपर ठहरा दिया है। तब ४२ फिरौन ने अपने हाथ से अंगूठी निकालके यूसुफ के हाथ में पहिना दिई और उस को सूक्ष्म सनवाले बस्त्र पहिना दिये और उस के गले में एक सोने की गोप डाल दिई। और उस ४३ ने उस को अपने दूसरे रथ पर चढ़ाया और लोग उस के आगे आगे यह पुकारते चले कि घुटने टेक घुटने टेक इस भान्ति वह मिस्र के सारे देश के ऊपर ठहराया गया। फिर फिरौन ने ४४ यूसुफ से कहा मैं तो फिरौन हूं और तेरी आज्ञा बिना सारे मिस्र देश में कोई हाथ पांव न हिलावेगा। और ४५ फिरौन ने यूसुफ का नाम सापनत्पानेह् रक्खा और आन् नगर के याजक पोती-पेरा की बेटी आसनत् से उस का ब्याह करा दिया। फिर यूसुफ निकलके मिस्र देश में घूमने फिरने लगा। और जब ४६ यूसुफ मिस्र के राजा फिरौन के सन्मुख खड़ा किया गया उस समय वह तीस बरस का था तब यूसुफ फिरौन के सन्मुख से निकलके मिस्र के सारे देश में दौरा करने लगा। और सुकाल के ४७

सातों बरसों में भूमि मनमाना अन्न ४८ उपजाती रही। सो यूसुफ उन सातों बरसों में सब प्रकार की भोजनबस्तें जो मिस्र देश में होती थीं बटोर बटोरके नगरों में रखता गया अर्थात् एक एक नगर के चारों ओर के खेतों की भोजनबस्तुओं को वह उसी नगर ४९ में संचय करता गया। इस रीति यूसुफ ने अन्न को समुद्र की बालू के किनकों के समान अत्यन्त बहुतायत से राशि राशि करके रक्खा यहां लों कि उस ने उन का गिनना छोड़ दिया क्योंकि ५० वे असंख्य हो गईं। और अकाल के प्रथम बरस के आने से पहिले यूसुफ के दो पुत्र ओन् के याजक पोतीपेरा ५१ की बेटी आसनत् से जन्मे। और यूसुफ ने अपने जेठे का नाम यह कहके मनश्शे[1] रक्खा कि परमेश्वर ने मुझ से मेरा सारा क्लेश और मेरे पिता का सारा घराना भी बिसरवा दिया ५२ है। और दूसरे का नाम उस ने यह कहके एप्रैम्[2] रक्खा कि मुझे दुःख भोगने के देश में परमेश्वर ने फुलाया ५३ फलाया है। इस रीति मिस्र देश में उस सुकाल के सात बरस समाप्त हो ५४ गये। और अकाल के सात बरस यूसुफ के कहे के अनुसार आने लगे सो सब देशों में तो अकाल पड़ा पर ५५ सारे मिस्र देश में अन्न था। और जब

(१) अर्थात्. बिसरवानेहारा.
(२) अर्थात्. अत्यन्त उपजाऊ.

मिस्र का सारा देश भूखों मरने लगा तब प्रजा फिरौन से चिल्ला चिल्लाके रोटी मांगने लगी पर वह सब मिस्रियों से कहा करता था यूसुफ के पास जाओ और जो कुछ वह तुम से कहे सोई करो। सो जब अकाल सारे देश ५६ में फैल गया तब यूसुफ सब भण्डारों को खोल खोलके मिस्रियों के हाथ अन्न बेचने लगा और अकाल मिस्र देश में घोर होता गया। और सारी पृथिवी ५७ के लोग मिस्र में अन्न मोल लेने को यूसुफ के पास आने लगे क्योंकि सारी पृथिवी पर अकाल घोर था।

(यूसुफ के भाइयों के उस से मिलने का बर्णन.)

४२ जब याकूब ने सुना कि १ मिस्र में अन्न है तब उस ने अपने पुत्रों से कहा तुम एक दूसरे का मुंह क्यों ताकते हो। फिर उस ने २ कहा देखो मैं ने सुना है कि मिस्र में अन्न है सो तुम लोग वहां जाके हमारे लिये अन्न मोल ले आओ जिस्तें हम मरें नहीं जीते रहें। सो यूसुफ के ३ दस भाई अन्न मोल लेने के लिये मिस्र को गये। पर यूसुफ के भाई बिन्यामीन् ४ को याकूब ने भाइयों के साथ न भेजा क्योंकि उस ने कहा ऐसा न हो कि उस पर कोई बिपत्ति पड़े। सो ५ और और आनेहारों की भान्ति इस्राएल् के पुत्र भी अन्न मोल लेने आये क्योंकि कनान् देश में भी अकाल था।

६ उस समय यूसुफ ही मिस्र के राज्य में अधिकारी था और वही उस देश के सब लोगों के हाथ अन्न बेचता था सो जब यूसुफ के भाई आये और भूमि पर मुंह के बल गिरके उस को दण्डवत् ७ किया तब यूसुफ ने उन को देखके पहिचान लिया पर उन के साम्हने अनजान बनके कठोरता के साथ उन से पूछा तुम कहां से आते हो तब उन्हों ने कहा हम तो कनान् देश से ८ अन्न मोल लेने को आये हैं। यूसुफ ने तो अपने भाइयों को पहिचान लिया पर उन्हों ने उस को न पहिचाना। ९ तब यूसुफ को अपने वे स्वप्न स्मरण आये जो उस ने उन के विषय देखे थे सो उस ने उन से कहा तुम भेदिये हो देश की दरिद्रता को देखने के लिये १० आये हो। पर उन्हों ने उस से कहा सो नहीं हे प्रभु हम तेरे दास भोजनबस्तु ११ के मोल लेने को आये हैं। हम सब एक ही पुरुष के पुत्र हैं हम सीधे मनुष्य हैं हम तेरे दास भेदिये नहीं। १२ पर उस ने उन से कहा नहीं नहीं तुम देश की दरिद्रता देखने ही को १३ आये हो। तब उन्हों ने कहा हम जो तेरे दास हैं सो तो बारह भाई हैं और कनान् देशबासी एक ही पुरुष के पुत्र हैं और देख छुटका जो है सो आज हमारे पिता के संग है और एक १४ जो था सो रहा नहीं। पर यूसुफ ने उन से कहा मैं ने जो तुम से कहा कि तुम भेदिये हो उस की जांच अब किई जावेगी। १५ इसी से तुम परखे जाओगे फिरौन के जीवन की सों जब लों तुम्हारा छुटका भाई यहां न आवे तब लों तुम यहां से न निकलने पाओगे। १६ अपने में से एक को भेज दो कि वह तुम्हारे भाई को ले आवे और तुम लोग बन्धुआई में रहो इस रीति तुम्हारी बातें परखी जावेंगी कि तुम में सच्चाई है कि नहीं न होने से फिरौन के जीवन की सों निश्चय तुम भेदिये ही ठहरोगे। १७ यह कहके उस ने उन को बन्दीगृह में एक साथ डाल दिया और तीन दिन लों वहीं रक्खा। १८ तीसरे दिन यूसुफ ने उन से कहा एक काम करो तो जीते रहोगे क्योंकि मैं परमेश्वर का भय मानता हूं। १९ यदि तुम सीधे मनुष्य हो तो तुम सब भाइयों में से एक जन इस बन्दीगृह में बन्धुआ रहे बाकी जाके अपने घरवालों की भूख बुझाने के लिये अन्न ले जाओ। २० और अपने छुटके भाई को मेरे पास ले आओ यों तुम्हारी बातें सच्ची ठहरेंगी और तुम मार डाले न जाओगे सो उन्हों ने वैसा ही करने को मान लिया। २१ तब उन्हों ने आपस में कहा निःसन्देह हम लोग अपने भाई के विषय में दोषी हैं कि जब उस ने हम से गिड़गिड़ाके बिनती किई और हम ने उस की न सुनी तब हम ने देखा कि उस का जीव कैसे संकट में पड़ा है इसी कारण हम भी

२२ अब इस संकट में पड़े हैं । तब रूबेन् ने उन से कहा क्या मैं ने तुम से न कहा था कि लड़के के अपराधी मत होओ पर तुम ने न सुना सो देखो अब उस के लोहू का पलटा लिया २३ जाता है । वे न जानते थे कि यूसुफ हमारी समझता है क्योंकि उस की और उन की बातचीत एक दुभाषिया २४ के द्वारा होती थी । सो वह उन के पास से हटके रोने लगा फिर उन के पास लौटके उन से बातचीत किई और उन में से शिमोन् को लेके उन २५ के साम्हने बन्धवाया । तब यूसुफ ने आज्ञा दिई कि उन के बोरे अन्न से भरो और उन में से एक एक जन के बोरे में उस के रूपे को भी रख दो और उन को मार्ग के लिये सीधा देओ सो उन से ऐसा ही व्यवहार किया २६ गया । तब वे अपना अन्न अपने गदहों २७ पर लादके वहां से चल दिये । और सराय में जब एक ने अपने गदहे को चारा देने के लिये अपना बोरा खोला तब अपने रूपे को देखा कि वह मेरे २८ बोरे के मोहड़े पर रक्खा है । तब उस ने अपने भाइयों से कहा मेरा रूपा तो फेर दिया गया है देखो वह मेरे बोरे में है यह सुनके उन के जी में जी न रहा और वे यह कहके एक दूसरे की ओर भय से ताकने लगे कि परमेश्वर ने यह हम से क्या किया । २९ निदान वे कनान् देश में अपने पिता याकूब के पास आये और अपना सारा वृत्तान्त उस से वर्णन करके कहा जो पुरुष उस देश का स्वामी ३० है उस ने हम से कठोरता के साथ बात किई और हम लोगों को देश के भेदिये ठहराया । पर हम ने उस से ३१ कहा हम तो सीधे लोग हैं हम भेदिये नहीं । हम सब अपने पिता के पुत्र ३२ बारह भाई हैं एक तो रह नहीं गया और छुटका जो है सो आज कनान् देश में हमारे पिता के पास है । पर ३३ उस पुरुष ने जो उस देश का स्वामी है हम से कहा इसी से मैं जान लूंगा कि तुम सीधे मनुष्य हो अपने में से एक को मेरे पास छोड़के अपने घर-वालों की भूख बुझाने के लिये कुछ ले जाओ । और अपने छुटके भाई को ३४ मेरे पास ले आओ तब मैं जानूंगा कि तुम भेदिये नहीं पर सीधे लोग हो और तब मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें फेर दूंगा और तुम इस देश में लेन देन करने पाओगे । फिर जब वे अपने ३५ अपने बोरों से अन्न निकालने लगे तब क्या देखा कि एक एक जन के रूपे की थैली उसी के बोरे में रक्खी है सो जब उन्हों ने और उन के पिता ने रूपे की थैलियों को देखा तब डर गये । फिर उन के पिता याकूब ३६ ने उन से कहा मुझ को तो तुम ने निर्बंश कर दिया है देखो यूसुफ नहीं रहा और शिमोन् भी नहीं है और

अब तुम बिन्यामीन् को भी ले जाने चाहते हो ये सब बातें मेरे ऊपर आ पड़ी हैं। ३७ यह सुनके रूबेन् ने अपने पिता से कहा यदि मैं उस को तेरे पास न लाऊं तो तू मेरे दोनों पुत्रों को मार डालना तू उस को मेरे हाथ में सौंप तो दे मैं उसे तेरे पास फेर पहुंचा दूंगा। ३८ पर उस ने कहा सो नहीं मेरा पुत्र तुम्हारे संग न जावेगा क्योंकि उस का भाई मर गया और वह अकेला रह गया सो जिस मार्ग से तुम जाओगे उस में उस पर यदि कोई बिपत्ति आ पड़े तो तुम्हारे कारण मैं इस पक्के बाल की अवस्था में शोक के साथ अधोलोक में उतर जाऊंगा।

४३ इतने में अकाल उस देश में और भारी हो गया। २ सो जब वह अन्न जो यूसुफ के भाई मिस्र से ले आये थे चुक गया तब उन के पिता ने उन से कहा फिर जाके हमारे लिये थोड़ी सी भोजनवस्तु मोल ले आओ। ३ पर यहूदा ने उस से कहा उस पुरुष ने हम से चिता चिताके कहा कि यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे संग न आवे तो तुम मेरे सन्मुख न आने पाओगे। ४ सो यदि तू हमारे भाई को हमारे संग भेजे तो हम जाके तेरे लिये भोजनवस्तु मोल ले आवेंगे। ५ पर यदि तू उस को न भेजे तो हम न जावेंगे क्योंकि उस पुरुष ने हम से कहा कि यदि तुम्हारा भाई तुम्हारे संग न रहे तो तुम मेरे सन्मुख न आने पाओगे। ६ तब इस्राएल् ने कहा तुम ने उस पुरुष को यह बताके कि हमारे एक और भाई है क्यों मुझ से बुरा किया। ७ उन्हों ने कहा जब उस पुरुष ने हमारी और हमारे कुटुम्बियों की दशा की इस रीति पूछपाछ किई कि क्या तुम्हारा पिता अब लों जीता है क्या तुम्हारे कोई और भाई भी है तब हम ने इन प्रश्नों के अनुसार उस से वर्णन किया फिर क्या हम कुछ भी जान सकते थे कि वह कहेगा अपने भाई को यहां ले आना। ८ फिर यहूदा ने अपने पिता इस्राएल् से कहा उस लड़के को मेरे संग भेज दे तो हम चले जावेंगे इस से हम और तू और हमारे बालबच्चे मरने न पावेंगे जीते रहेंगे। ९ मैं उस का जामिन होता हूं मेरे ही हाथ से तू उस को फेर लेना यदि मैं उस को तेरे पास पहुंचाके साम्हने न खड़ा कर दूं तो मैं सदा के लिये तेरा अपराधी ठहरूंगा। १० देख यदि हम लोग बिलम्ब न करते तो अब लों दूसरी बार भी लौटके आ चुकते। ११ तब उन के पिता इस्राएल् ने उन से कहा यदि सचमुच ऐसी ही बात है तो एक काम करो इस देश की उत्तम उत्तम बस्तुओं में से कुछ कुछ अपने बोरों में उस पुरुष के लिये भेंट ले जाओ अर्थात् थोड़ा सा बलसान

और थोड़ा सा मधु और कुछ सुगन्ध द्रव्य और गन्धरस पिस्ते और बादाम। १२ फिर अपने अपने साथ दूना रूपा ले जाओ अर्थात् जो रूपा तुम्हारे बोरों के मोहड़े पर फेर दिया गया उस को अपने हाथों में लेते जाओ क्या जानिये १३ वह भूल से फेर दिया गया हो। और अपने भाई को भी संग लेके चलो तुम तो इसी रीति उस पुरुष के पास जाओ। १४ और सर्बशक्तिमान् ईश्वर उस पुरुष को तुम पर दयालु करे कि वह तुम्हारे दूसरे भाई को और बिन्यामीन् को आने देवे और मैं निर्बंश हुआ तो हुआ।

१५ यह सुनके उन मनुष्यों ने वह भेंट और वह दूना रूपा अपने साथ लिया और बिन्यामीन् को भी संग लेके चल दिये और मिस्र में पहुंचकर यूसुफ के १६ साम्हने खड़े हुए। जब यूसुफ ने उन के साथ बिन्यामीन् को देखा तब अपने घर के अधिकारी से कहा इन मनुष्यों को घर में पहुंचा और पशु मारके भोजन तैयार कर क्योंकि ये लोग दो पहर को मेरे संग भोजन १७ करेंगे। सो उस जन ने यूसुफ के कहने के अनुसार किया और उन पुरुषों को १८ यूसुफ के घर में ले चला। पर वे जो यूसुफ के घर को पहुंचाये जाने लगे इस से डरकर कहने लगे जो रूपा पहिली बार हमारे बोरों में फेर दिया गया उसी के कारण हम भीतर पहुंचाये जाते हैं जिस्तें वह पुरुष हम पर टूट पड़े और दबाके अपने दास बनावे और हमारे गदहों को छीन लेवे। सो वे १९ यूसुफ के घर के अधिकारी के निकट जाके घर के द्वार पर उस से यों कहने लगे कि हे हमारे प्रभु बिनती सुन २० जब हम पहिली बार अन्न मोल लेने को आये थे तब लौटती बार २१ हम ने सराय में पहुंचके जो अपने बोरों को खोला तो क्या देखा कि एक एक जन का रूपा उस के बोरे के मोहड़े पर रक्खा है और वह पूरा था सो हम उस को अपने साथ फेर लेते आये हैं। और दूसरा रूपा भी २२ भोजनबस्तु मोल लेने को अपने साथ ले आये हैं हम नहीं जानते कि किस ने हमारा रूपा हमारे बोरों में रख दिया। उस ने कहा तुम्हारा कुशल २३ होवे मत डरो तुम्हारा परमेश्वर जो तुम्हारे पिता का भी परमेश्वर है उसी ने तुम को तुम्हारे बोरों में गुप्त धन दिया है तुम्हारा रूपा मुझ को तो मिल गया था यह कहकर उस ने शिमोन् को निकालके उन के संग कर दिया। और उस जन ने उन मनुष्यों २४ को यूसुफ के घर में ले जाके जल दिया तब उन्हों ने अपने पांवों को धोया और उस ने उन के गदहों के लिये चारा भी दिया। इस के पीछे उन्हों ने २५ यूसुफ के आने के समय लों अर्थात् दो पहर लों उस भेंट को संजोय रक्खा

क्योंकि उन्हों ने सुना था कि हम को
२६ यहीं रोटी खानी है। और जब यूसुफ
घर आया तब वे उस भेंट को जो उन
के हाथ में थी उस के सन्मुख घर में
ले आये और भूमि पर गिरके उस को
२७ दण्डवत् किया। उस ने उन का कुशल
पूछा और कहा क्या तुम्हारा पिता
अर्थात् वह पुरनिया जिस की तुम ने
चर्चा किई थी कुशल से है क्या वह
२८ अब लों जीता है। उन्हों ने कहा हां
तेरा दास हमारा पिता कुशल से है
और अब लों जीता है इतना कहके
उन्हों ने अपने सिर झुकाके फिर
२९ दण्डवत् किई। फिर उस ने आंखें
उठाके अपने सहोदर भाई बिन्यामीन्
को देखा और पूछा क्या तुम्हारा वह
छुटका भाई जिस की चर्चा तुम ने मुझ
से किई थी यही है फिर उस ने कहा
हे मेरे पुत्र परमेश्वर तुझ पर अनुग्रह
३० करे। तब अपने भाई के स्नेह से मन
भर आने के कारण और यह सोचके
कि मैं कहां रोऊं यूसुफ फुर्ती से अपनी
३१ कोठरी में जाके वहां रो दिया। फिर
वह अपना मुंह धोके निकल आया
और अपने को रोकके कहा भोजन
३२ परोसो। सो दासों ने उस के लिये
तो अलग और भाइयों के लिये अलग
और जो मिस्री लोग उस के संग खाते
थे उन के लिये अलग परोसा इस
लिये कि मिस्री इब्रियों के साथ रोटी
नहीं खा सकते क्योंकि मिस्री उन के
साथ खाने से घिन करते हैं। और ३३
यूसुफ के भाई उस के साम्हने अपनी
अपनी अवस्था के अनुसार क्रम से
बैठाये गये अर्थात् बड़े बड़े पहिले
और छोटे छोटे पीछे सो वे बिस्मित
होके एक दूसरे की ओर ताकने लगे।
तब यूसुफ अपने साम्हने से भोजन- ३४
बस्तें उठा उठाके उन के पास भेजने
लगा और बिन्यामीन् की भोजनबस्तु
उन सब की भोजनबस्तु से पचगुणी
अधिक थी सो वे उस के संग पीने
और आनन्द करने लगे।

४४ फिर यूसुफ ने अपने घर के १
अधिकारी को आज्ञा देके कहा
इन मनुष्यों के बोरों में जितनी भोजन-
बस्तु समा सके उतनी भर दे और
एक एक जन के रूपे को भी उन के
बोरों के मोहड़े पर रख दे। और मेरा २
चान्दी का कटोरा छुटके के बोरे के
मोहड़े पर उस के अन्न के मोलवाले
रूपे के साथ रख दे सो उस ने यूसुफ
के कहने के अनुसार किया। बिहान ३
को भोर होते ही वे मनुष्य अपने गदहों
समेत बिदा हुए। वे नगर से निकले ४
ही थे और दूर न जाने पाये कि यूसुफ
ने अपने घर के अधिकारी से कहा उन
मनुष्यों का पीछा कर और उन को
पाके उन से कह कि तुम ने भलाई
की सन्ती बुराई क्यों किई है। क्या ५
यह वह बस्तु नहीं जिस में मेरा स्वामी
पीता है और जिस से वह शकुन भी

बिचारा करता है तुम ने जो किया ६ है सो बुरा ही किया । सो उस ने उन्हें जा लिया और ऐसी ही बातें ७ उन से कहीं । पर उन्हों ने उस से कहा हे हमारे प्रभु तू ऐसी बातें क्यों कहता है ऐसा काम करना हम तेरे ८ दासों से दूर रहे। देख जो रूपा हमारे बोरों के मोहड़े पर निकला था जब हम ने उस को कनान् देश से ले आके तुझे फेर दिया तब भला तेरे स्वामी के घर में से हम कोई चान्दी वा सोने की बस्तु क्योंकर चुरा ले आ सकते हैं । ९ देख हम तेरे दासों में से जिस किसी के पास वह निकले सो मार डाला जावे और हम भी अपने प्रभु के दास १० हो जावें । उस ने कहा तुम्हारा ही कहना सही जिस के पास वह निकले सो मेरा दास होगा पर तुम लोग ११ निरपराध ठहरोगे । सो वे फुर्त्ती से अपने अपने बोरे को उतार भूमि पर १२ रखके उन्हें खोलने लगे । तब वह ढूंढ़ ढांढ़ करने लगा और बड़के के बोरे से लेके छुटके के बोरे लों खोज किई और कटोरा बिन्यामीन् के बोरे में १३ मिला । यह देखके उन्हों ने अपने बस्त्र फाड़े और अपना अपना गदहा १४ लादके नगर को लौट गये । फिर यहूदा अपने भाइयों समेत यूसुफ के घर में आया क्योंकि यूसुफ तब लों घर ही में था और वे उस के साम्हने १५ आके भूमि पर गिरे । तब यूसुफ ने उन से कहा तुम लोगों ने यह कैसा काम किया है क्या तुम मुझ को न जानते थे कि मुझ सा मनुष्य शकुन बिचार कर सकता है । तब यहूदा ने १६ कहा हम लोग तुझ अपने प्रभु से क्या कहें हम क्या कहके अपने को धर्म्मी ठहरावें परमेश्वर ने हम तेरे दासों के अधर्म्म को पकड़ लिया है देख हम तुझ अपने प्रभु के दास हैं अर्थात् हम भी और जिस के पास कटोरा निकला सो भी सब तेरे दास ही हैं । पर उस ने १७ कहा ऐसा करना मुझ से दूर रहे जिस जन के पास कटोरा निकला सोई मेरा दास होगा और तुम लोग जो हो सो अपने पिता के पास कुशल क्षेम से चले जाओ ।

तब यहूदा पास जाके कहने लगा १८ हे मेरे प्रभु बिनती सुन मुझ तेरे दास को अपने प्रभु से एक बात कहने की आज्ञा हो और तेरा कोप मुझ तेरे दास पर न भड़के क्योंकि तू तो फिरौन ही के तुल्य है । हे मेरे प्रभु तू ने हम १९ अपने दासों से पूछा था कि क्या तुम्हारे पिता वा भाई है । और हम २० ने तुझ अपने प्रभु से कहा हां हमारे वृद्ध पिता है और उस के बुढ़ापे का एक छोटा सा बालक है और उस का भाई मर गया सो वह अपनी माता का अकेला ही रह गया और उस का पिता उस से स्नेह रखता है। यह सुनके तू ने हम अपने दासों से २१

कहा था कि उस को मेरे पास ले आओ
२२ कि मैं उस को देखूं। तब हम ने तुझ
अपने प्रभु से कहा था कि लड़का
अपने पिता को नहीं छोड़ सकता
नहीं तो उस का पिता मर जावेगा।
२३ और तू ने हम अपने दासों से कहा
यदि तुम्हारा छुटका भाई तुम्हारे संग
न आवे तो तुम मेरे सन्मुख फिर आने
२४ न पाओगे। सो जब हम तेरे दास
अपने पिता के पास गये तब हम ने
उस से तुझ अपने प्रभु की बातें कहीं।
२५ पीछे हमारे पिता ने कहा फिर जाके
हमारे लिये थोड़ी सी भोजनबस्तु मोल
२६ ले आओ। तब हम ने कहा हम नहीं
जा सकते हां यदि हमारा छुटका भाई
हमारे संग रहे तब तो हम जावेंगे नहीं
तो नहीं क्योंकि यदि हमारा छुटका
भाई हमारे संग न रहे तो हम उस
पुरुष के सन्मुख न जाने पावेंगे।
२७ फिर तेरे दास मेरे पिता ने हम
लोगों से कहा तुम जानते हो कि
२८ मेरी स्त्री दो पुत्र जनी। और उन में
से एक तो मुझे छोड़ ही गया और
मैं ने निश्चय कर लिया कि वह फाड़
डाला गया होगा फिर मैं ने उस का
२९ मुंह न देख पाया। सो यदि तुम इस
को भी मेरी आंख की ओट ले जाओ
और कोई बिपत्ति उस पर पड़े तो
तुम्हारे कारण मैं इस पक्के बाल की
अवस्था में दुःख के साथ अधोलोक में
३० उतर जाऊंगा। सो यदि मैं अब तेरे
दास अपने पिता के पास पहुंचूं और
यह लड़का संग न रहे तो उस का प्राण
जो इसी पर अटका रहता है इस ३१
कारण यह देखके कि लड़का नहीं
है वह तुरन्त ही अपना प्राण छोड़
देगा सो तेरे इन दासों के कारण तेरा
दास हमारा पिता जो पक्के बालों की
अवस्था का है सो शोक के साथ अधो-
लोक में उतर जावेगा। और देख मैं ३२
तेरा दास अपने पिता के यहां यह
कहके इस लड़के का जामिन हुआ हूं
कि यदि मैं इस को तेरे पास न पहुंचा
दूं तो मैं सदा के लिये तेरा अपराधी
ठहरूंगा। सो अब बिनती यह है कि ३३
मैं जो तेरा दास हूं सो इस लड़के की
सन्ती तुझ अपने प्रभु का दास होके
रहने पाऊं और लड़का अपने भाइयों
के संग घर जाने पावे। क्योंकि लड़के ३४
के बिना संग रहे मैं क्योंकर अपने
पिता के पास जा सकूंगा ऐसा न होवे
कि मेरे पिता पर जो दुःख पड़ेगा सो
मुझे अपनी आंखों से देखना पड़े।

४५ इतना सुनके यूसुफ उन सब १
के साम्हने जो उस के आस
पास खड़े थे अपने को और रोक न
सका इस लिये उस ने पुकारके कहा
मेरे आस पास से सब लोगों को
निकाल देओ सो उस के भाइयों के
साम्हने अपने को प्रगट करने के समय
और कोई यूसुफ के संग न रहा।
तब वह चिल्ला चिल्लाके रोने लगा २

और मिस्त्रियों ने सुना और फिरौन के घर के लोगों को भी इस का समाचार मिला । ३ फिर यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा मैं यूसुफ हूं क्या मेरा पिता अब लों जीता है पर उस के भाई उस को उत्तर न दे सके क्योंकि वे उस के साम्हने घबरा गये थे। ४ फिर यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा मेरे निकट आओ तब वे निकट गये फिर उस ने कहा मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूं जिस को तुम ने मिस्र आनेहारों के हाथ बेच डाला था । ५ अब तुम लोग मत पछताओ और तुम ने जो मुझे यहां आनेहारों के हाथ बेच डाला इस से उदास मत होओ क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे प्राण बचाने के लिये मुझे आगे से भेज दिया । ६ देखो अब दो बरस से इस देश में अकाल है और अभी पांच बरस और ऐसे ही होवेंगे कि उन में न तो हल चलेगा और न अन्न काटा जावेगा । ७ और परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे इसी लिये भेजा कि तुम पृथिवी पर बचे रहो और अद्भुत रीति से जीते रहो। ८ सो अब मुझ को यहां पर भेजनेहारे तुम नहीं परन्तु परमेश्वर ही ठहरा और उसी ने मुझे फिरौन का पिता सा और उस के सारे घर का स्वामी और सारे मिस्र देश पर प्रभुता करनेहारा ठहरा दिया है । ९ सो शीघ्र मेरे पिता के पास जाओ और उस से कहो तेरे पुत्र यूसुफ ने यों कहा है कि परमेश्वर ने मुझे सारे मिस्र का स्वामी ठहराया है सो तू मेरे पास बिना बिलम्ब किये चला आ । १० और तेरा निवास गोशेन् देश में होगा और तू बेटे पोतों भेड़ बकरियों गाय बैलों निदान अपने सर्व्वस्व समेत मेरे ही निकट रहेगा । ११ और अकाल के जो पांच बरस और होंगे उन में मैं गोशेन् में तेरा पालन पोषण करूंगा ऐसा न हो कि तू और तेरा घराना बल्कि जितने तेरे हैं सो भूखों मरें । १२ और देखो तुम अपनी आंखों से देखते हो और मेरा भाई बिन्यामीन् भी अपनी आंखों से देखता है कि जो हम से बोल रहा है सो यूसुफ ही है । १३ और तुम मेरे सब ऐश्वर्य्य का जो मिस्र में है और जो कुछ तुम ने देखा है उस सब का मेरे पिता से बर्णन करना और बेग मेरे पिता को यहां ले आना । १४ इतना कहके वह अपने भाई बिन्यामीन् के गले में लिपटके रोया और बिन्यामीन् भी उस के गले में लिपटके रोया । १५ फिर वह अपने और सब भाइयों को चूमके उन से मिलकर रोया और इस के पीछे उस के भाई उस से बात करने लगे ।

१६ तब इस बात की चर्चा कि यूसुफ के भाई आये हैं फिरौन के भवन तक पहुंच गई और यह सुनके फिरौन और उस के कर्म्मचारी प्रसन्न हुए ।

१७ सो फ़िरैान ने यूसुफ से कहा अपने भाइयों से कह कि एक काम करो अपने पशुओं को लादके कनान् देश १८ में चले जाओ। और अपने पिता और अपने अपने घर के और लोगों को लेके मेरे पास आओ तो मैं मिस्र देश में जो अच्छे से अच्छा है सो तुम्हें दूंगा और तुम्हें देश के उत्तम से १९ उत्तम पदार्थ खाने को मिलेंगे। मैं आज्ञा देता हूं तुम एक काम करो मिस्र देश से अपने बाल बच्चों और स्त्रियों के लिये गाड़ियां ले जाओ और अपने २० पिता को चढ़ाके ले आओ। और अपनी सामग्री का मोह न करना क्योंकि सारे मिस्र देश में जो अच्छे से २१ अच्छा है सो तुम्हारा ही है। सो जब यूसुफ ने ऐसा ही कहा तब इस्राएल् के पुत्रों ने वैसा ही किया और यूसुफ ने फ़िरैान की आज्ञा के अनुसार उन्हें गाड़ियां दिईं और मार्ग २२ के लिये सीधा भी दिया। उन में से एक एक जन को तो उस ने एक एक जोड़ा वस्त्र दिया पर बिन्यामीन् को उस ने तीन सैा रूपे के टुकड़े और २३ पांच जोड़े वस्त्र दिये। फिर अपने पिता के पास उस ने जो भेजा सो यह है अर्थात् मिस्र की अच्छी वस्तुओं से लदे हुए दस गदहे और अन्न और रोटी और उस के पिता के मार्ग के लिये भोजनवस्तु से लदी हुई दस २४ गदहियां। इसी रीति उस ने अपने भाइयों को बिदा किया और वे चल दिये और उन के चलने पर उस ने उन से कहा मार्ग में कहीं झगड़ा न करना। सो वे मिस्र से चलके कनान् २५ देश में अपने पिता याकूब के पास पहुंचे। और उस से यह बर्णन किया २६ कि यूसुफ अब लों जीता है बल्कि सारे मिस्र देश पर प्रभुता वही करता है यह सुनके वह अपने आपे में न रहा क्योंकि उस ने उन की प्रतीति न किई। तब उन्हों ने उस से यूसुफ की सारी २७ बातें जो उस ने उन से कही थीं कह दिईं और जब उस ने उन गाड़ियों को जो यूसुफ ने उस के ले आने के लिये भेजी थीं देखा तब उन के पिता याकूब का चित्त स्थिर हो गया। और २८ इस्राएल् ने कहा बस मेरा पुत्र यूसुफ अब लों जीता होगा मैं अपनी मृत्यु से पहिले जाके उस को देखूंगा।

(याकूब के सारे परिवार समेत मिस्र में बस जाने का बर्णन।)

४६ इस के पीछे इस्राएल् अपने १ सब लोगों को ले कूंच करके बेर्शेबा को आया और अपने पिता इस्हाक् के परमेश्वर को बलिदान चढ़ाये। तब परमेश्वर ने इस्राएल् से रात के २ दर्शन में कहा हे याकूब हे याकूब उस ने कहा क्या आज्ञा। उस ने कहा मैं ३ ईश्वर अर्थात् तेरे पिता का परमेश्वर हूं तू मिस्र में जाने से मत डर क्योंकि मैं तुझ से वहां एक बड़ी जाति

४ उपजाऊंगा। मैं तेरे संग मिस्र को चलता हूं और मैं तुझे वहां से फिर निश्चय ले आऊंगा और तेरी अन्तक्रिया यूसुफ के ५ हाथ से होगी। यह सुनके याकूब बेर्शेबा से चला और इस्राएल् के पुत्र अपने पिता याकूब और अपने बालबच्चों और स्त्रियों को उन गाड़ियों पर जो फिरौन ने उन के ले आने को भेजी थीं चढ़ाके ले ६ चले। और वे अपनी भेड़ बकरी गाय बैल और कनान् देश में अपने बटोरे हुए सारे धन को लेके मिस्र में आये अर्थात् ७ याकूब अपने सारे बंश समेत आया। वह अपने बेटे बेटियों पोते पोतियों निदान अपने बंश भर को अपने संग मिस्र में ले आया।

८ याकूब के साथ जो इस्राएलबंशी अर्थात् उस के बेटे पोते आदि मिस्र में आये उन के नाम ये हैं याकूब का जेठा तो ९ रूबेन् था। और रूबेन् के पुत्र हनोक् पल्लू १० हेस्रोन् और कर्म्मी थे। और शिमोन् के पुत्र यमूएल् यामीन् ओहद् याकीन् और सोहर् थे और शाऊल् भी था जो एक ११ कनानी स्त्री से उत्पन्न हुआ था। और लेवी के पुत्र गेर्शोन् कहात् और मरारी १२ थे। और यहूदा के पुत्र एर् ओनान् शेला पेरेस् और जेरह् थे पर एर् और ओनान् कनान् ही देश में मर गये थे और पेरेस् के पुत्र हेस्रोन् और हामूल् १३ थे। और इस्साकार् के पुत्र तोला पुव्वा १४ योब् और शिम्रोन् थे। और जबूलून् के १५ पुत्र सेरेद् एलोन् और यहलेल् थे। लेआ के पुत्र जिन्हें वह याकूब से पद्दनराम् में जनी उन के बेटे पोते ये ही थे और इन से अधिक वह उस की जन्माई एक बेटी दीना को भी जनी यहां लों याकूब के सब बंशवाले तेंतीस प्राणी हुए। फिर गाद् के १६ पुत्र सिप्योन् हाग्गी शूनी एस्बोन् एरी अरोदी और अरेली थे। और आशेर् के १७ पुत्र यिम्ना यिश्वा यिश्वी और बरीआ थे और उन की बहिन सेरह् थी और बरीआ के पुत्र हेबेर् और मल्कीएल् थे। जिलपा १८ जिसे लाबान् ने अपनी बेटी लेआ को दिया उस के बेटे पोते आदि ये ही थे सो उस के द्वारा याकूब के सोलह प्राणी जन्मे। फिर याकूब की स्त्री राहेल् के पुत्र यूसुफ १९ और बिन्यामीन् थे। और मिस्र देश में २० ओन् के याजक पोतीपेरा की बेटी आसनत् के जने यूसुफ के ये पुत्र जन्मे अर्थात् मनश्शे और एप्रैम्। और बिन्यामीन् के २१ पुत्र बेला बेकेर् अश्बेल् गेरा नामान् एही रोश् मुप्पीम् हुप्पीम् और आर्द् थे। राहेल् के पुत्र जिन्हें वह याकूब से जनी २२ उन के ये ही पुत्र थे उस के ये सब बेटे पोते चौदह प्राणी हुए। फिर दान् का पुत्र २३ हूशीम् था। और नप्ताली के पुत्र यहसेल् २४ गूनी येसेर् और शिल्लेम् थे। बिल्हा जिसे २५ लाबान् ने अपनी बेटी राहेल् को दिया उस के बेटे पोते ये ही हैं उस के द्वारा याकूब के बंश में सात प्राणी हुए। याकूब २६ के निज बंश के जो प्राणी मिस्र में आये सो उस की बहुओं को छोड़ सब मिलके छियासठ प्राणी भये। और यूसुफ के पुत्र २७

जो मिस्र में उस के जन्मे दो प्राणी थे सो याकूब के घराने के जो प्राणी मिस्र में आये सो सब मिलके सत्तर भये।

२८ इस्राएल् ने अपने पहुंचने से आगे यहूदा को यूसुफ के पास भेज दिया जिस्तें यूसुफ उस को गोशेन् का मार्ग दिखावे इस रीति याकूब परिवार समेत गोशेन् २९ देश में आया। तब यूसुफ अपना रथ जुतवाके अपने पिता इस्राएल् से भेंट करने के लिये गोशेन् देश को गया और जब भेंट भई तब वह उस के गले लिपटा और कुछ बेर लों उस के गले में लिपटा ३० हुआ रोता रहा। तब इस्राएल् ने यूसुफ से कहा मैं अब मरने से भी प्रसन्न हूं क्योंकि तुझ जीते जागते का मुंह भी देख ३१ चुका। फिर यूसुफ ने अपने भाइयों और अपने पिता के घराने के और लोगों से कहा मैं जाके फिरौन को यह कहके समाचार देऊंगा कि मेरे भाई बलिक मेरे पिता का सारा घराना जो कनान् देश में रहते थे सो मेरे पास आ गये हैं। ३२ और वे लोग चरवाहे हैं बलिक सदा से पशुओं को चराते आये हैं सो वे अपनी भेड़ बकरी गाय बैल और जो कुछ उन का ३३ है सब ले आये हैं। सो यदि फिरौन तुम को बुलाके पूछे कि तुम्हारा उद्यम ३४ क्या है तो कहना कि हम तेरे दास लड़कपन से लेके आज लों पशुओं को चराते आये हैं बलिक हमारे पुरखा लोग भी हम से पहिले ऐसा ही करते थे यह सुनके फिरौन तुम को गोशेन् देश में रहने देगा क्योंकि सब चरवाहों से मिस्री लोग घिन करते हैं।

४७ सो यूसुफ ने जाकर फिरौन १ को यह कहके समाचार दिया कि मेरा पिता और मेरे भाई और उन की भेड़ बकरियां गाय बैल और जो कुछ उन का है सब कनान् देश से आ गया है और अभी वे गोशेन् देश में हैं। फिर उस ने २ अपने भाइयों में से पांच जन लेके फिरौन के साम्हने खड़े कर दिये। तब फिरौन ने ३ उस के भाइयों से पूछा कि तुम्हारा उद्यम क्या है उन्हों ने फिरौन से कहा हम तेरे दास चरवाहे हैं और हम से पहिले हमारे पुरखा लोग भी ऐसे ही रहे। फिर उन्हों ने फिरौन से कहा हम लोग ४ इस देश में परदेशी की भान्ति रहने के लिये आये हैं क्योंकि कनान् देश में भारी अकाल होने के कारण हम तेरे दासों की भेड़ बकरियों के लिये चराई नहीं रही सो अब कृपा करके हम अपने दासों को गोशेन् देश में रहने दे। यह सुनके फिरौन ५ ने यूसुफ से कहा तेरा पिता और तेरे भाई जो तेरे पास आ गये हैं सो देख मिस्र ६ देश तेरे साम्हने पड़ा है इस देश का जो सब से अच्छा भाग होवे उस में अपने पिता और भाइयों को बसा दे सो वे गोशेन् देश में रहें और यदि तू जानता हो कि उन में से चैतन्य पुरुष हैं तो उन्हें मेरे पशुओं के अधिकारी ठहरा दे। फिर ७ यूसुफ ने अपने पिता याकूब को ले आके फिरौन के सन्मुख खड़ा किया और याकूब

८ ने फ़िरौन को आशीर्वाद दिया। तब फ़िरौन ने याकूब से पूछा तेरी अवस्था ९ कितने दिन की हुई है। याकूब ने फ़िरौन से कहा मैं तो एक सौ तीस बरस परदेशी होके अपना जीवन बिता चुका हूं मेरे जीवन के दिन थोड़े और दुःख से भरे हुए भी थे और मेरे बापदादे परदेशी होके जितने दिन लों जीते रहे उतने १० दिन का मैं अभी नहीं भया। तब याकूब फ़िरौन को आशीर्वाद देके उस के सन्मुख ११ से चला गया। इस रीति यूसुफ ने अपने पिता और भाइयों को बसा दिया और फ़िरौन की आज्ञा के अनुसार मिस्र देश के अच्छे से अच्छे भाग में अर्थात् राम्सेस् नाम देश में भूमि देके उन की निज कर १२ दिई। और यूसुफ ने अपने पिता का और एक एक के बालबच्चों की गिनती के अनुसार भाइयों बल्कि अपने पिता के सारे घराने का भी पालन पोषण किया।

१३ फिर उस सारे देश में खाने को कुछ न रहा क्योंकि अकाल बहुत भारी था और अकाल के कारण मिस्र और कनान् १४ दोनों देश अत्यन्त हार गये। और जितना रूपा मिस्र और कनान् देश में था सब को यूसुफ ने उस अन्न की सन्ती जो उन के निवासी मोल लेते थे ले लेके एकट्ठा किया और उस रूपे को फ़िरौन के घर में १५ पहुंचा दिया। अन्त में मिस्र और कनान् देश का रूपा चुक गया तब सब मिस्री लोग यूसुफ के पास आ आके कहने लगे हम को रोटी दे क्या हम रूपे के न रहने से तेरे रहते हुए मर जावें। सो यूसुफ ने १६ कहा अच्छा जो रूपा नहीं है तो अपने पशु दे दो तो मैं उन की सन्ती तुम्हें खाने को देऊंगा। सो वे अपने पशु यूसुफ के १७ पास ले आये और यूसुफ उन को घोड़ों भेड़ बकरियों गाय बैलों और गदहों की सन्ती खाने को देने लगा सो उस बरस में वह सब जाति के पशुओं की सन्ती भोजन दे देके उन का पालन पोषण करता रहा। वह बरस तो यों कटा तब अगले बरस १८ में उन्हों ने उस के पास आके कहा हे हमारे प्रभु हमें तुझ से यह बात खोलके कहनी है कि हमारा रूपा तो चुक ही गया है और अब हमारे सब प्रकार के पशु भी तेरे पास आ चुके हैं सो अब हे हमारे प्रभु तेरे साम्हने हमारे अपना अपना चोला और भूमि छोड़के और कुछ नहीं रहा। पर तेरे रहते १९ हुए हम क्यों मरें और हमारा देश क्यों उजड़ जावे हम को और हमारी भूमि को भोजनबस्तु की सन्ती मोल ले कि हम अपनी भूमि समेत फ़िरौन का निज धन होके उस की सेवा करें और हम को बीज दे कि हम मरने न पावें जीते रहें और हमारा देश न उजड़े। यह सुनके यूसुफ २० ने मिस्र की सारी भूमि को फ़िरौन के लिये मोल लिया क्योंकि उस कठिन अकाल के पड़ने से मिस्री लोगों को अपना अपना खेत बेच डालना पड़ा इस रीति सारी भूमि फ़िरौन की हो गई।

२१ और प्रजा जो थी उस को उस ने मिस्र के एक सिवाने से लेके दूसरे सिवाने लों २२ नगरों में ले आ ले आके बसा दिया। हां याजकों की भूमि तो उस ने न मोल लिई क्योंकि याजकों के लिये फिरौन की ओर से नित्य भोजन का बन्दोबस्त था और जो नित्य भोजन फिरौन उन को देता था सोई वे खाते थे इसी कारण उन को २३ अपनी भूमि बेचनी न पड़ी। फिर यूसुफ ने प्रजा से कहा देखो मैं ने आज के दिन तुम को और तुम्हारी भूमि को फिरौन के लिये मोल लिया है देखो तुम्हारे लिये २४ यहां बीज है उसे भूमि में बोओ। और जो कुछ उपजे उस का पंचमांश फिरौन को देना बाकी चार अंश तुम्हारे ही रहेंगे कि तुम उसे अपने खेतों में बोओ और अपने अपने बाल बच्चों और घर के २५ और लोगों समेत खाया करो। तब उन्हों ने कहा तू ने हम को जिलाय लिया है हे हमारे प्रभु तेरी अनुग्रह की दृष्टि हम पर बनी रहे हम फिरौन के दास होके २६ रहेंगे। सो यूसुफ ने मिस्र की भूमि के बिषय में यह एक ऐसा नियम ठहराया जो आज के दिन लों चला आता है कि पंचमांश फिरौन को मिला करे केवल याजकों ही की भूमि फिरौन की नहीं २७ हुई। सो इस्राएलबंशी मिस्र देश में के गोशेन् देश में रहने लगे और उस को अपनी निज भूमि कर लिया और फूले फले और अत्यन्त बढ़ गये।

(इस्राएल् के पिछले आशीर्वादों और मृत्यु का वर्णन.)

मिस्र देश में याकूब सतरह बरस २८ जीता रहा सो याकूब की सारी आयुर्दा एक सौ सैंतालीस बरस की हुई। जब २९ इस्राएल् के मरने का दिन निकट आ गया तब उस ने अपने पुत्र यूसुफ को बुलवाके उस से कहा यदि तेरा अनुग्रह मुझ पर है तो अपना हाथ मेरी जांघ के तले रखके किरिया खा कि मैं तेरे साथ कृपा और सच्चाई का यह काम करूंगा कि तुझे मिस्र में मिट्टी न दूंगा। क्योंकि मैं अपने ही बापदादों के संग ३० पड़ा रहने चाहता हूं सो तू मुझे मिस्र से उठा ले जाके उन्हीं के कबरिस्तान में रखना यह सुनके यूसुफ ने कहा मैं तेरे बचन के अनुसार ही करूंगा। फिर ३१ उस ने कहा मुझ से ऐसी ही किरिया भी खा सो उस ने उस से किरिया खाई तब इस्राएल् ने खाट के सिरहाने की ओर फिरके ईश्वर को दण्डवत् किया।

४८ इन बातों के पीछे किसी ने १ यूसुफ से कहा देख तेरा पिता बीमार है यह सुनकर वह अपने दोनों पुत्रों अर्थात् मनश्शे और एप्रैम् को संग लेके उस के पास चला। तब किसी ने २ याकूब को बता दिया कि देख तेरा पुत्र यूसुफ तेरे पास आता है सो इस्राएल् अपने को सम्भालके खाट पर बैठ गया। तब याकूब ने यूसुफ से कहा सर्वशक्तिमान् ३ ईश्वर ने कनान् देश के लूज् नगर के

४ पास मुझे दर्शन देके आशीष दिई और कहा देख मैं तुझे फुला फलाके बढ़ाऊंगा और तुझे जातियों की मण्डली का मूल बनाऊंगा और तेरे पीछे तेरे बंश को यह देश ऐसा दूंगा कि वह सदा लों उस की ५ निज भूमि रहेगी। और अब ये तेरे दोनों पुत्र जो मिस्र में मेरे आने से पहिले जन्मे सो मेरे ही हैं अर्थात् जिस रीति रूबेन् और शिमोन् मेरे हैं उसी रीति एप्रैम् ६ और मनश्शे भी मेरे ठहरेंगे। और इन के पीछे अब जो सन्तान तू जन्मावेगा सोई तेरे ठहरेंगे भाग पाने के समय वे अपने भाइयों ही के नाम से कहलावेंगे। ७ और जब मैं पद्दान् से आता था तब एप्राता पहुंचने से थोड़ी ही दूर पहिले राहेल् कनान् देश में मार्ग ही में मेरे साम्हने मर गई और मैं ने उसे वहां एप्राता अर्थात् बेत्लेहेम् के मार्ग ही में ८ मिट्टी दिई। इतना कहके इस्राएल् ने यूसुफ के पुत्रों को देखा और पूछा ये कौन ९ हैं। यूसुफ ने अपने पिता से कहा ये मेरे पुत्र हैं जो परमेश्वर ने मुझे यहां दिये हैं उस ने कहा उन को मेरे पास ले आ कि मैं उन को आशीर्बाद देऊं। १० इस्राएल् के नेत्र बुढ़ापे के कारण धुन्धले हो गये थे यहां लों कि उसे सूझता न था सो यूसुफ उन्हें उस के पास ले आया और ११ उस ने उन्हें चूमके गले लगा लिया। तब इस्राएल् ने यूसुफ से कहा मैं सोचता न था कि तेरा मुख फिर देखने पाऊंगा पर क्या देखता हूं कि परमेश्वर ने मुझे तेरा बंश भी दिखाया है। फिर यूसुफ ने १२ उन्हें अपने घुटनों के बीच से हटाकर और अपने मुंह के बल भूमि पर गिरके दण्डवत् किई। फिर यूसुफ ने उन १३ दोनों को पकड़ लिया अर्थात् एप्रैम् को तो अपने दहिने हाथ से जिस्तें वह इस्राएल् के बाएं हाथ पड़े और मनश्शे को अपने बाएं हाथ से कि वह इस्राएल् के दहिने हाथ पड़े और इसी प्रकार उन्हें उस के पास ले आया। पर इस्राएल् ने अपना दहिना हाथ १४ तो बढ़ाके एप्रैम् के सिर पर जो छुटका था और अपना बायां हाथ बढ़ाके मनश्शे के सिर पर रख दिया उस ने जान बूझके ऐसा किया नहीं तो जेठा मनश्शे ही था। फिर उस ने यूसुफ को १५ आशीर्बाद देके कहा परमेश्वर जिस को मेरे बापदादे इब्राहीम और इस्हाक् अपने साम्हने जानके चलते थे अर्थात् परमेश्वर जो मेरे जन्म से लेके आज के दिन लों मेरा चरवाहा बना है अर्थात् १६ जो दूत मुझे सारी बुराई से छुड़ाता आया है सो इन लड़कों को आशीष देवे और वे मेरे और मेरे बापदादे इब्राहीम और इस्हाक् के कहलावें और पृथिवी में बहुतायत से बढ़ें। पर यह देखके कि १७ मेरे पिता ने अपना दहिना हाथ एप्रैम् ही के सिर पर रक्खा है यूसुफ को बुरा लगा सो उस ने अपने पिता का हाथ इस मतलब से पकड़ लिया कि उस को एप्रैम् के सिर पर से उठाके

१८ मनश्शे के सिर पर धरा देवे। और यूसुफ ने अपने पिता से कहा हे पिता ऐसा नहीं क्योंकि जेठा यही है अपना दहिना हाथ इसी के सिर पर रख।
१९ पर उस के पिता ने नकारके कहा हे पुत्र मैं इस बात को भली भांति जानता हूं यद्यपि इस से भी मनुष्यों का एक समुदाय उत्पन्न होवेगा और यह भी महान् हो जावेगा तौभी उस का छुटका भाई उस से अधिक महान् हो जावेगा और उस के बंश से बहुत सी जातियां
२० निकलेंगी। फिर उस ने उसी दिन यह कहके उन को आशीर्बाद दिया कि इस्राएली लोग तेरा ही पटतर दे देके आशीर्बाद दिया करेंगे कि परमेश्वर तुझे एप्रैम् और मनश्शे के समान बना देवे इस रीति उस ने मनश्शे से पहिले
२१ एप्रैम् ही का नाम लिया। तब इस्राएल् ने यूसुफ से कहा देख मैं तो मरता हूं परन्तु परमेश्वर तुम लोगों के संग रहेगा और तुम को तुम्हारे
२२ पितरों के देश में फेर पहुंचा देगा। और मैं तो तुझ को तेरे भाइयों से अधिक भूमि का एक भाग देता हूं जिस को मैं ने एमोरियों के हाथ से अपनी तलवार और धनुष के बल ले लिया है।

४९ फिर याकूब ने अपने पुत्रों को यह कहके बुलाया कि एकट्ठे हो जाओ मैं तुम को बताऊंगा कि अन्त के दिनों में तुम्हारे बंश पर क्या क्या बीतेगा।

२ हे याकूब के पुत्रो एकट्ठे होके सुनो
अपने पिता इस्राएल् की ओर कान लगाओ॥

३ हे रूबेन् तू मेरा जेठा मेरा बूता और
मेरे पौरुष का पहिला फल है
प्रतिष्ठा का उत्तम भाग और शक्ति
का भी उत्तम भाग तू ही है।

४ तू जल की नाईं उबलता तो है पर
औरों से श्रेष्ठ न ठहरेगा
क्योंकि तू अपने पिता की खाट
पर चढ़ा
तब तू ने उस को अशुद्ध किया तू
तो मेरे बिछौने पर चढ़ गया॥

५ शिमोन् और लेवी तो भाई हैं
उन की तलवारें उपद्रव के हथियार हैं।

६ हे मेरे जीव उन के मर्म्म में न पड़
हे मेरी महिमा उन की सभा में
मत मिल
क्योंकि कोप से उन्हों ने मनुष्यों को
घात किया
और अपनी ही इच्छा पर चलके
उन्हों ने बैलों की खूंच काटी है।

७ धिक्कार उन के कोप को जो प्रचण्ड था
और उन के रोष को जो निर्दय था
ईश्वर उन्हें याकूबबंशियों में अलग
अलग
और इस्राएलबंशियों में तित्तर
बित्तर कर देगा॥

८ हे यहूदा तेरे भाई तेरा धन्यवाद
करेंगे

और तेरा हाथ तेरे शत्रुओं की
गर्दन पर पड़ेगा
तेरे पिता के पुत्र तुझे दण्डवत्
करेंगे ।
९ यहूदा सिंह का डांवरू है
हे मेरे पुत्र तू अहेर करके गुफा में
गया है
तू सिंह अथवा सिंहिनी की नाईं
दबकके बैठ गया
फिर कौन तुझ को छेड़ेगा ।
१० जब लों शीलो न आवे
तब लों न तो तुझ यहूदा से राज-
दण्ड छूटेगा
न तेरे बंश से व्यवस्थादायक अलग
होगा
और जाति जाति के लोग तेरे ही
अधीन हो जावेंगे ।
११ तू अपने जवान गदहे को दाख-
लता में
और अपनी गदही के बच्चे को
उत्तम जाति की दाखलता में
बान्धा करेगा
तू अपने बस्त्र दाखमधु में
और अपना पहिरावा दाखों के
रस में धोया करेगा ।
१२ तेरी आंखें दाखमधु से चमकीली
और तेरे दांत दूध से श्वेत होवेंगे ॥
१३ जबूलून् समुद्र के तीर पर बास
करेगा
वह जहाजों के लिये घाट का काम
देगा
और उस का पिछला भाग सीदोन्
के निकट पहुंचेगा ॥
१४ इस्साकार् मानो एक बड़ा और
बलवन्त गदहा है
जो पशुओं के बाड़ों के बीच में
दबका रहता है ।
१५ और उस ने बिश्राम को देखा कि
अच्छा
और देश को कि मनोहर है
सो उस ने अपने कन्धे को बोझ
उठाने के लिये झुकाया
और बेगारी में दास का सा काम
करने लगा ॥
१६ दान् इस्राएल् का एक गोत्र होके
अपने जाति भाइयों का न्याय
करेगा ।
१७ दान् मार्ग में का एक सांप
और बाट में का एक नाग होवेगा
जो घोड़े की नली को ऐसा डंसता है
कि जो उस पर चढ़ा होवे सो पीछे
गिर पड़ता है ॥
१८ हे यहोवा मैं तुझी से उद्धार पाने
की बाट जोहता आया हूं ॥
१९ गाद् जो है उस पर एक दल चढ़ाई
करेगा
पर वह उसी दल की पिछाड़ी पर
छापा मारेगा ॥
२० आशेर् से जो रोटी उत्पन्न होवेगी
सो उत्तम होगी
और वह राजा के योग्य स्वादिष्ठ
भोजन दिया करेगा ॥

२१ नप्ताली एक छूटी हुई हरिणी के
समान है
वह सुन्दर बातें बोलता है॥
२२ यूसुफ फलवन्त लता की एक शाखा
अर्थात् सोते के पास की फलवन्त
लता की एक शाखा है
उस लता की सब डालियां
भीत पर से चढ़के फैल जाती
हैं।
२३ हां धनुर्धारियों ने तो उस के मन
को खेदित किया
और उस पर बाण मारे और उस
के पीछे पड़े हैं।
२४ पर उस का धनुष दृढ़ ही रहा
और उस की बांह और हाथ
याकूब के उसी शक्तिमान् ईश्वर के
हाथों के द्वारा फुर्त्तीले भये
जिस के पास से वह चरवाहा
उत्पन्न होवेगा जो इस्राएल् का
पत्थर भी ठहरेगा
२५ अर्थात् तेरे पिता का ईश्वर जो
तेरी सहायता करेगा
वह सर्वशक्तिमान् जो तुझे
ऊपर से आकाश में की आशीषें
और नीचे से गहिरे जल में की
आशीषें
और स्तनों और गर्भ की आशीषें
देवेगा
तिस के हाथों के द्वारा तू सामर्थी
भया।
२६ तेरे पिता के आशीर्बाद
मेरे पितरों के आशीर्बादों से अधिक
बढ़ गये हैं
और सनातन पहाड़ियों की मन-
चाही बस्तें जब लों रहेंगी
तब लों वे भी बने रहेंगे
ये सब यूसुफ के सिर पर
अर्थात् जो अपने भाइयों में से
न्यारा हुआ उसी के चोण्डे पर
आवेंगे॥
बिन्यामीन् हुण्डार की नाईं फाड़ा २७
करेगा
सवेरे तो वह अहेर भक्षण करेगा
और सांझ को लूट बांट लेवेगा॥
इस्राएल् के बारहों गोत्र ये ही हैं २८
और उन के मूलपुरुष ने जिस जिस
बचन से उन को आशीर्बाद दिया सो
ये ही हैं जो जो आशीर्बाद जिस जिस
पर फलनेहारा था सो सो उस ने उन
को दिया। तब उस ने यह कहके २९
उन को आज्ञा दिई कि मैं अब अपने
लोगों के साथ मिलने पर हूं सो मुझे
हित्ती एप्रोन् की भूमिवाली गुफा
में मेरे बापदादों के साथ ही मिट्टी
देना अर्थात् उसी गुफा में जो कनान् ३०
देश में मम्रे के साम्हनेवाली मकूपेला
की भूमि में है उस भूमि को तो इब्रा-
हीम ने हित्ती एप्रोन् के हाथ से इसी
मतलब से मोल लिया था कि वह
कबरिस्तान के लिये उस की निज भूमि
होवे। वहां इब्राहीम और उस की ३१
स्त्री सारा को मिट्टी दिई गई और

वहीं इस्हाक् और उस की स्त्री रिब्का को भी मिट्टी दिई गई और वहीं मैं ने लेआ को भी मिट्टी दिई । वह भूमि और उस में की गुफा दोनों हेत्‌वंशियों के हाथ से मोल लिई गईं । फिर जब याकूब अपने पुत्रों को आज्ञा दे चुका तब वह अपने पांव खाट पर समेट प्राण छोड़के अपने लोगों में जा मिला।

५० यह देखकर यूसुफ अपने पिता के मुंह पर गिरके रोया और उसे चूमा । और यूसुफ ने उन वैद्यों को जो उस के सेवक थे आज्ञा दिई कि मेरे पिता की लोथ में सुगन्धद्रव्य भरो सो वैद्यों ने इस्राएल् की लोथ में सुगन्धद्रव्य भर दिया। इस प्रकार से उस के चालीस दिन पूरे हुए क्योंकि जिन की लोथ में सुगन्धद्रव्य भरे जाते हैं उन को इतने ही दिन पूरे लगते हैं और मिस्री लोग उस के लिये सत्तर दिन लों रोते रहे ।

४ जब उस की गमी के दिन बीत गये तब यूसुफ फिरौन के भवनवालों से कहने लगा यदि तुम्हारी अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर है तो कृपा करके मेरी ५ ओर से फिरौन से यों कहो कि मेरे पिता ने मुझे यह कहके किरिया खिलाई कि देख मैं मरा जाता हूं सो जो कबरिस्तान मैं ने अपने लिये कनान् देश में खुदवाया है उसी में मुझे मिट्टी देना सो अब कृपा करके मुझे वहां जाके अपने पिता को मिट्टी देने की आज्ञा दे पीछे मैं लौट आऊंगा। यह ६ सुनके फिरौन ने कहा जाके अपने पिता की खिलाई हुई किरिया के अनुसार उस को मिट्टी दे। सो यूसुफ ७ अपने पिता को मिट्टी देने के लिये कनान् देश को गया और फिरौन के सब कर्म्मचारी अर्थात् उस के भवन के पुरनिये और मिस्र देश के सब पुरनिये भी उस के संग वहां गये। और ८ यूसुफ के घर के सब लोग और उस के भाई निदान उस के पिता के घर के सब लोग संग गये इतना रहा कि वे अपने बाल बच्चों और भेड़ बकरियों और गाय बैलों को गोशेन् देश में छोड़ गये। और उस के संग रथ और सवार ९ भी गये सो जमघटा बहुत भारी हो गया। जब वे आताद् के खलिहान १० लों जो यर्दन नदी के पार है पहुंचे तब वहां अत्यन्त भारी बिलाप किया और यूसुफ अपने पिता के लिये सात दिन लों बिलाप करता रहा । जब उस देश के निवासी कनानियों ११ ने आताद् के खलिहान में इस बिलाप को सुना तब कहा यह तो मिस्रियों का कोई भारी बिलाप होगा इसी कारण उस स्थान का नाम आबेल्-मिस्रैम्[1] पड़ा और वह यर्दन के पार है । तब इस्राएल् के पुत्रों ने उस का १२ वैसा ही काम किया जैसे उस ने उन को आज्ञा दिई थी। अर्थात् उन्हों ने १३

(१) अर्थात्. मिस्रियों का बिलाप.

उस का कनान् देश में ले जाके मक्‌पेला की उसी भूमिवाली गुफा में उस का मिट्टी दिई जिस का इब्राहीम ने हित्ती एफ्रोन् के हाथ से इस मतलब से मोल लिया था कि वह कबरिस्तान के लिये उस की निज भूमि होवे सो मम्रे के साम्हने है।

(यूसुफ की मृत्यु का वर्णन.)

१४ फिर यूसुफ अपने पिता का मिट्टी देके अपने भाइयों और उन सब समेत जो उस के पिता का मिट्टी देने के लिये उस के संग गये थे मिस्र में लौट आया।
१५ पर जब यूसुफ के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता मर गया तब कहने लगे क्या जानिये यूसुफ अब हमारे पीछे पड़े और जितनी बुराई हम ने उस से किई थी सब
१६ का पूरा पलटा हम से लेवे। सो उन्हों ने यूसुफ के पास यह कहला भेजा कि तेरे पिता ने मरने से पहिले यह आज्ञा
१७ दिई थी कि तुम लोग यूसुफ से यों कहना कि हम बिनती करते हैं कृपा करके हम अपने भाइयों के अपराध और पाप का क्षमा कर क्योंकि हम ने तो तुझ से बुराई किई थी पर अब कृपा करके अपने पिता के परमेश्वर के दासों के अपराध का क्षमा कर। उन की ये बातें सुनके यूसुफ रो दिया।
१८ फिर उस के भाई आप भी जाके उस के साम्हने गिर पड़े और कहा देख हम
१९ तेरे दास हैं। पर यूसुफ ने उन से
२० कहा मत डरो क्या मैं परमेश्वर हूं। हां तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का बिचार तो किया था परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का बिचार किया जिस्तें वह ऐसा करे जैसा आज के दिन प्रगट है अर्थात् यह कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं। सो अब मत डरो मैं तुम्हारा २१ और तुम्हारे बाल बच्चों का पालन पोषण करता रहूंगा सो उस ने उन का समझा बुझाके शान्ति दिई।

२२ इस के पीछे यूसुफ अपने पिता के घराने समेत मिस्र में रहता रहा और
२३ यूसुफ एक सौ दस बरस जीया। और यूसुफ एफ्रैम् के परपोतों लों देखने पाया और मनश्शे के पोते अर्थात् माकीर् के पुत्र उत्पन्न होके यूसुफ से गोद में लिये
२४ गये। निदान यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा मैं तो मरता हूं परन्तु परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा और तुम्हें इस देश से निकालके उसी देश में पहुंचा देगा जिस के देने की उस ने इब्राहीम इस्‌हाक् और याकूब से किरिया खाई
२५ थी। फिर यूसुफ ने इस्राएलबंशियों से यह कहके कि परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा उन को इस विषय की किरिया खिलाई कि हम तेरी हड्डियों को यहां से वहां ले
२६ जावेंगे। तब यूसुफ एक सौ दस बरस का होके मर गया और उस की लोथ में सुगन्धद्रव्य भरा गया और वह लोथ मिस्र में एक सन्दूक में रक्खी रही॥